



“मेरे साहिब जी”

“जी” यानी कि जीव अथवा जीवित जीवन विशेष-चेतन स्वरूप नाश रहित जागरूक अर्थात् दुर्लभ जीवात्मा विशेष जो परमात्मा का निजी विशेष अंग अथवा अंश ही है निश्चित रूप से । फिर इस जीवात्मा का “मेरा” अपना विशेष और कौन हो सकता है ? अपने मूल अथवा “परम चेतन सत्ता” विशेष के सिवाय इस जीव का और कोई भी मित्र अथवा संबंधी विशेष हो नहीं सकता यकीनी तौर पर । “साहिब” यानी के बड़ा श्रेष्ठ मालिक-

रक्षक प्रत्यक्ष करने वाला धारण विशेष करने वाला निरंतर-सदा-जड़ विशेष का आधार कल्याण कारी-व्यापक-जड़ चेतन मे लगातार रमा हुआ दुर्लभ आवश्यक आकर्षण विशेष-प्रचण्ड तेज-अनामी-अलख-अगम -अगोचर इत्यादी अनंत गुणों विशेषो का भण्डार विशेष ही केवल जीवात्मा का मेरा अपना निजी विशेष पूर्ण कल्याण-कारी आवश्यक आधार विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “अंतर जोत निरंतर बानी साचे साहिब सिडलिव लाई” अर्थात इस सृष्टि का प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष रहने वाला निरंतर सच अथवा सत विशेष ही है “साहिब प्यारा” निश्चित रूप से “जोत” यानी के ये साहिब अर्थात “परम चेतन सत्ता” विशेष एक प्रचण्ड तेज अर्थात निश्चित दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष ही है “बानी” अर्थात जो कि केवल एक “रागमई आवाज” विशेष से ही प्रत्यक्ष होता है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में “निरंतर” यानी के ये “रागमई प्रकाशित आवाज” प्रत्येक काल में निश्चित रूप से प्रत्यक्ष विद्यमान रहती ही है विशेष रूप से चाहे सृष्टि प्रत्यक्ष उपलब्ध हो अथवा केवल शून्य विशेष ही क्यों न हो अर्थात आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष का प्रभाव कभी भी नहीं होता यकीनी तौर पर । “जीवात्मा” का इस दुर्लभ “साहिब” विशेष तक पहुँचने का आवश्यक साधन विशेष प्रत्येक काल में केवल “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष ही है निश्चित रूप से जो केवल “अंतर” यानी के मानक शरीर में ही निरंतर प्रत्यक्ष

उपलब्ध विशेष है यकीनी तौर पर “लिव लाई” यानी के दुर्लभ “साहिब प्यारे” से जुड़ने का आवश्यक ढंग विशेष । जिसे प्रत्येक आत्मा अपने साथ लिये फिरती है निरंतर विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । रूह यानी के जीवात्मा आवश्यक सुख विशेष की ही तलाश में है निरंतर । जो रूह को केवल मेरे अपने मूल विशेष में ही पूरी तरह से समा जाने विशेष पर उपलब्ध हो सकता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में शेष सभी सुख केवल आत्मा के अपने ही प्रतिलक्षण मात्र है यकीनी तौर पर । प्रत्येक जड़ विशेष कुछ भी सुख विशेष आंशिक रूप से भी उपलब्ध करवाने में रूह के लिये केवल झूठ विशेष ही साबित होता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । ठीक जगह पर ठीक ढंग विशेष से आवश्यक तलाश न करने पर आत्मा को बहुत दुख विशेष उठाने पड़ते हैं । अनंत काल तक के लिये निश्चित रूप से । रूह का निज कल्याण अथवा पूर्ण सुख विशेष केवल दुर्लभ आवश्यक “सत्य” का “संग” विशेष करने में ही है यकीनी तौर पर आवश्यक संग विशेष भी दो तरह से है पहला संग है रूह का बाहरी वृत्ति में रूचना सच विशेष के साथ अर्थात् ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष का संग विशेष करना जिसमें दुर्लभ “परम चेतन सत्ता” विशेष प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष है यकीनी तौर पर । जहां से उस रूह के सभी भ्रमों विशेषों का आवश्यक निवारण विशेष हो निश्चित रूप से । रूह के आवश्यक निज कल्याण विशेष के दुर्लभ मार्ग विशेष में किसी भी मत-धर्म

अथवा क्रियाओं विशेषों के लिये कोई भी स्थान विशेष ही नहीं है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । ये सभी व्यवहार विशेष केवल शरीर तक ही सीमित है और आत्मा का शरीर विशेष से कोई संबंध ही नहीं है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । उल्टा शरीर विशेष केवल आत्मा के लिये एक भयानक सी कैद अथवा बंधन विशेष ही है यकीनी तौर पर । बाहर प्रभु का संग विशेष कैसे हो सकता है ? रूह का अपने उपलब्ध आवश्यक मानव दुर्लभ जन्म विशेष को “अकाल पुरख परमात्मा” की आत्मिक प्रेरणा रूपी दुर्लभ लिखित विशेष के अनुसार व्यवहारिक विशेष बनाये प्रमाणिक तौर पर जिंदगी भर निश्चित रूप से । जो दुर्लभ आवश्यक बानी विशेष के रूप में आप को शताब्दियों पहले लिख करके दे दी है “प्रभु” ने निश्चित रूप से । प्रत्येक सच्ची आत्मा विशेष के पास आत्मा विशेष के निजी अभ्यास हेतू यह दुर्लभ लिखित विशेष “दुर्लभ बानी” सटीक किताब विशेष के रूप में होनी अत्यंत आवश्यक ही है केवल रूह के अपने निजी आवश्यक कल्याण के हेतू ही निश्चित रूप से । इसी दुर्लभ लिखित विशेष का छोटा आवश्यक स्वरूप समय की मांग विशेष को ध्यान में रखते हुए केवल एक अथवा विशेष के रूप में लिख कर आपको दिया जा रहा है दुर्लभ “प्रभु” प्रेरणा विशेष के अनुसार यकीनी तौर पर । आत्मिक कल्याण विशेष चाहने वाली दुर्लभ रूह विशेष को इस दुर्लभ लिखित विशेष से बाहर व्यवहार कदापि

हर्गिज भी नहीं करना चाहिये निश्चित रूप से । अपने सभी संसारिक व्यवहारों को केवल उपलब्ध दुर्लभ लिखित विशेष को साक्षी बनाकर निपटाना विशेष ही कल्याणकारी विशेष है आत्मा विशेष के लिये । ये लिखित क्यों दी गई ? एक आत्मा विशेष दूसरी बहुत सी आत्माओं को प्रचलित आवश्यक व्यवहार विशेष देने में केवल असमर्थ ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से दूसरा घर घर में चल रहे मत - धर्मों अधूरे के कारण सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष का पूरी तरह से आवश्यक रूप विशेष से बचाने विशेष के लिये । अंधी बहरी रूह विशेष कैसे जानेगी कि सामने वाला भी केवल घोर अंधा ही है या काणा विशेष ही निश्चित रूप से । क्या केवल भीड़ विशेष को देखकर ही अंधी बहरी रूह विशेष फैसला कर लेगी कि उसका निजी आवश्यक दुर्लभ कल्याण विशेष भीड़ विशेष का हिस्सा बनने में है ? जब तक अंधी बहरी रूह विशेष को सच का पता विशेष चलेगा तब तक तो बेचारी आत्मा विशेष पूरी तरह से लुट ही चुकी होगी यकीनी तौर पर । जिस भी आत्मा विशेष ने कुछ भी बयान विशेष करना है रूह के आवश्यक निज कल्याण विशेष हेतु वो “प्रभु” ने स्पष्ट ईशारे के रूप में पहले ही लिख करके आपके हाथ विशेष पर धर विशेष दिया है केवल आप को लुटने विशेष से बचाने विशेष के लिये ही निश्चित आवश्यक रूप से । इस दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष के अनुसार प्रमाणिक व्यवहारिक जीवन जीने में केवल रूह का

अपना ही आवश्यक निजी कल्याण विशेष है निश्चित रूप से ना कि “प्रभु” का लाभ विशेष । आपका क्या धंधा है कि इस दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष को ही “प्रभु” विशेष स्थापित कर देना तथा इसमें “प्रभु” को निश्चित कैद विशेष समझना । इस ग्रंथ विशेष को खोलने बंद करने से “प्रभु” को जगाना-सुलाना तथा इस दुर्लभ लिखित विशेष को ही गर्म-ठंडा करते फिरना । इसमें बुद्धि का ही नहीं केवल हीनता का होना ही साबित विशेष होता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जड़ विशेष से “परम चेतन” का कार्य विशेष सिद्ध करना केवल मूर्खता का ही प्रमाण-पत्र विशेष है अपने ही हाथों से लिख कर अपने गले विशेष में बांधा हुआ नकली परमात्माओं अथवा पातशाही विशेषों से बचाने के लिये ही इस दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष को प्रत्यक्ष किया गया कुछ दुर्लभ आत्माओं विशेषों के जरिये दुर्लभ “प्रभु” प्रेरणा विशेष ने निश्चित रूप से । आप ने क्या व्यवहार अपना रखा है ? इन आत्माओं विशेषों को ही परमात्मा का बाप विशेष ही स्थापित कर लिया है केवल अपने मन विशेष की खातिर ही जो केवल एक “शैतानी ताकतों” का आवश्यक अंश विशेष ही है निश्चित रूप से । नानक-गोबिंद, ईसा-मोहम्मद, राम-कृष्ण महाराजों इत्यादि आत्माओं विशेषों के नामों के ढोल बाजे बजाते हुए केवल “शैतानी ताकतों” की ही प्रसन्नता विशेष उपलब्ध की जा रही है निश्चित रूप से । सभी के शरीर विशेष आपने स्वयं ही विखंडित किए अग्नि

अथवा कब्रों विशेषो में भेंट विशेष के रूप में । फिर आत्मा विशेष की जितनी भी जैसी कमाई विशेष थी वहां पहुंचा दी गई **“प्रभु विशेष”** द्वारा आवश्यक रूप से । अब ये आत्मायें विशेष स्वयं को प्रत्यक्ष करना भी चाहेगी तो सोचो कि कैसे करेगी ? आत्मा इतनी सूक्ष्म है कि आप की कल्पना से भी केवल दूर की ही वस्तु विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । बिना आवरण विशेष के कैसे स्वयं को प्रस्तुत करेगी बेचारी आत्मा विशेष ? फिर जो आत्मायें विशेष आवरणों विशेषो में खोटी अथवा अधूरी कमाई विशेष के कारण फंसी विशेष हुई है कौन सी कल्पना विशेष से आपके धंधों विशेषो को जानेगी तथा स्वयं को प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकती है ? ज्यादातर आत्मायें विशेष जिन्हें आप पूज रहे हो स्वयं भी इन्हीं शैतानी मुल्कों में अपनी दुर्लभ रोशनी विशेष बिखेरने के लिये अवश्य मजबूर ही है आवश्यक रूप से आवश्यकतानुसार यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभ विद्वानों विशेषो ! फिर जो दुर्लभ आत्मा विशेष अपने निज के घर विशेष में पहुंच चुकी है उसका आपके इन मुल्कों विशेषो से संबंध विशेष रखने का क्या प्रयोजन विशेष ही हो सकता है निश्चित रूप से ? फिर कुछ विशेष अगर चाहेगी तो स्वयं को प्रस्तुत करने के लिये आवश्यक आवरण अथवा शरीर विशेष कहाँ से लाएगी नियमानुसार ? दुर्लभ शरीर विशेष तो केवल गर्भ और नर्क विशेष को नौ महीने विशेष तौर आवश्यक रूप से भुगतान विशेष के बाद ही आत्मा विशेष को

उपलब्ध होना संभव है । इस घोर नर्क विशेष में आना मुक्त आत्मा विशेष भला क्यों पसंद करेगी ? फिर जो आप को दिखती है आत्मायें विशेष-विशेष सूक्ष्म या कारण शरीरों विशेषों में वे स्वयं भी अभी इन्हीं कैदों विशेषों में ही है निश्चित रूप से । फिर एक कैदी विशेष दूसरे कैदी विशेष को पूर्ण मुक्ति की डिग्री विशेष देने में कैसे समर्थ हो सकता है ? बेशक ए क्लास का कैदी विशेष कुछ साधन विशेष जो उसे उपलब्ध हैं सी या बी क्लास के कैदी विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध करवाने में पूर्ण समर्थ है प्रत्येक काल में । विशेष शरीरों में दिखने वाली शक्तों विशेषों के पीछे कौन सी आत्मा विशेष है इसे अंधी बहरी आत्मा विशेष कैसे जान लेगी ? केवल जीवन मुक्त आत्मा विशेष ही इस दुर्लभ आवश्यक भेद विशेष को जानने में पूर्ण समर्थ विशेष होती है केवल “प्रभु” की “दया विशेष” से निश्चित रूप से प्रत्येक काल में दिखने वाली सभी दुर्लभ-2 शक्तों विशेषों के पीछे केवल शैतानी ताकतें विशेष ही छुपी हुई हैं निश्चित रूप से गांठ बांध लो दुर्लभ चतुर विद्वानों विशेषों प्रकृति विशेष केवल इन्हीं “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” विशेषों के अधीन ही है आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में जिससे “शैतानी ताकतें” जब चाहें जितने मर्जी जैसे भी रूप विशेष दुर्लभ-2 प्रत्यक्ष कर अथवा मिटा दें आवश्यक रूप से जैसे कुम्हार मिट्टी से जब चाहे बर्तन विशेष-2 प्रत्यक्ष करे और जब चाहे फिर से मिट्टी विशेष को मिट्टी में ही मिला देवे । आप की कई

पीढियां केवल इसी मीठे से धोखे विशेष में **“शैतानी ताकतों”** द्वारा पूरी तरह से हज्म ही की जा चुकी है निश्चित रूप से गांठ बांध लो दुर्लभ चतुर विद्वानों विशेषो आप केवल सुन्दर सी कल्पना विशेष में ही डुबकियां विशेष लगा रहे हो कि कोई प्यारी सी शक्ल विशेष आयी और आत्मा विशेष अपने घर विशेष पहुंचा दी गई । केवल **“शैतानी ताकतों”** का ही बढ़िया तथा स्वादिष्ट आवश्यक भोजन विशेष ही बनी है ये दुर्लभ-2 आत्मायें विशेष निश्चित रूप से जान लो महान-2 दुर्लभ-2 महाचतुर विद्वानों विशेषो ।

“सतिगुर बाझ सतसंग न उपजै” अर्थात् बाहरी संग भी बिना सत अर्थात् सतिगुर यानी के केवल **“परम चेतन सत्ता”** विशेष के प्रत्यक्ष उपलब्ध हुऐ बिना प्रत्यक्ष प्रकट विशेष होना केवल असंभव लफज विशेष को ही समर्थ बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । **“सतगुर”** यानि के गुरु अर्थात् शब्द विशेष अथवा **“रागमई प्रकाशित आवाज”** या **“परम चेतन सत्ता”** विशेष जो प्रत्येक काल में निरंतर प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाला आवश्यक **“सत्य”** विशेष ही है निश्चित रूप से । सतिगुर यानी के **“परम चेतन सत्ता”** विशेष की दुर्लभ आवश्यक **“रजा”** विशेष प्रत्यक्ष को निश्चित रूप से तभी बाहरी सतसंग विशेष भी प्रत्यक्ष अनुभव होता है जो केवल दुर्लभ ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । गददीधारी बने नकली सतिगुरुओं विशेषो का कोई भी भाव विशेष इस धुर निर्देशित दुर्लभ वाणी विशेष में नहीं है । सतसंग तो घर-

2 में हो रहे हैं सतगुरु भी अनंत बैठे हैं स्वयं को नकली परमात्मा विशेष स्थापित करते हुए । इन नकली परमात्माओं की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति से दुर्लभ “परम चेतन सत्ता” विशेष का कोई सरोकार नहीं है निश्चित रूप से । “प्रभु” अपनी दुर्लभ “रजा” विशेष का इकलौता दुर्लभ मालिक ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । भीड़ विशेष से “परम चेतन सत्ता” विशेष का कोई भी संबंध ही नहीं है दूर-दूर तक यकीनी तौर पर । प्रत्येक छुद्र से छुद्र कण विशेष भी “परम चेतन सत्ता” की “नजर विशेष” में केवल आवश्यक जीवन विशेष ही है आवश्यक रूप से उपलब्ध सृष्टि विशेष का निश्चित रूप से । दुर्लभ “परम चेतन सत्ता” विशेष केवल उसी दुर्लभ आत्मा विशेष तक प्रत्यक्ष सीमित है जो “दस इन्द्रि कर राखे वासि । ताकै आत्मै होई परगास” । “प्रभु” की “दया” विशेष से समस्त इन्द्रियों के व्यवहार विशेष से ऊपर उठ चुकी है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । अर्थात् पीढी दर पीढी बने बैठे नकली सतगुरु रूपी परमात्माओं विशेषों का यहाँ “परम चेतन सत्ता” विशेष से कोई भी संबंध ही नहीं है नियमानुसार आवश्यक रूप से पढ़ाने वाले विशेष आत्मा को “गुरु” ही कहा जाता है जगत में । परंतु उसका अर्थ “परम चेतन सत्ता” विशेष नहीं हो जाता यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । “गुरु” विशेष का कार्य उपलब्ध क्षमता का सदुपयोग विशेष करते हुए केवल आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष

तक ही सीमित रहता है । आगे का समस्त आवश्यक कार्य विशेष निपटाना केवल “परम चेतन सत्ता” विशेष का ही केवल निजी व्यवसाय विशेष ही है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से पूरी तरह से यकीनी तौर पर । इसलिये कहा है कि “अनदिन जपह” “गुरु” गुरु नाम अर्थात् सभी “गुरु”ओं विशेषों का सर्वश्रेष्ठ “गुरु” केवल प्रकाश अथवा दुर्लभ नाम विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । “ता ते सिध भये सगल काम” अर्थात् केवल तभी तेरे सभी दुखों विशेषों का निवारण होगा जब तू आत्मा विशेष केवल एक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष का ही जप अथवा ध्यान विशेष ही करेगी निरंतर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लें । इससे आगे का विचार विशेष तेरे दुर्लभ आवश्यक व्यवसाय विशेष में शामिल ही नहीं हैं । आत्मा विशेष तथा “परम चेतन सत्ता” विशेष के दरम्यान किसी तीसरे की कुछ भी गुंजाइश ही नहीं है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में केवल आत्मा विशेष के ही निज कल्याण विशेष के हेतु ही यकीनी तौर पर ।

“परम चेतन सत्ता” विशेष को पुकारने का ढंग विशेष भी आत्मा विशेष का कोयल जैसा ही होना चाहिये ना कि गीदड़ जैसा । गीदड़ का आवश्यक पुकारना भी कोई नहीं सुनता सभी खामोश रहते हैं क्योंकि सभी जानते हैं कि गीदड़ विशेष मांस तथा खून की ही मांग विशेष करता है । कोयल की पुकार सभी

सुनते हैं क्योंकि सभी जानते हैं कि ये आवाज दुर्लभ विशेष सावन भादों के आगमन की दुर्लभ आवश्यक सदेश विशेष ही है इसीलिये तपती आत्माओं के हृदय में ठंडक अथवा शांति की आवश्यक लहर विशेष ही दौड़ती है यकीनी तौर पर । कोयल के काले होने से पुकार विशेष पर कोई भी प्रभाव ही नहीं पड़ता निश्चित रूप से फिर काली भी क्यों है ? अपने मालिक से बिछुड़ने की विरह रूपी आग विशेष में जलने से ऐसी बाहर से दिखती है परंतु अंदर से तो अपने मूल जैसी ही है प्यारी दुर्लभ मीठी विशेष ही है रस विशेष से भरपूर लबालब भरी हुई यकीनी तौर पर यहां बाहर से हंस तथा अंदर से कौवे जैसे घोर कोयला विशेष भयानक निकृष्ट वासनाओं विशेषों का पुतला विशेष निश्चित रूप से । “बिरहा बिरहा आखिये बिरहा तूं सुलतान जित तन बिरह न उपजै सो तन जाण मसान” अर्थात् यदि हे आत्मा विशेष तेरे अन्दर अपने मालिक अथवा मूल विशेष से मिलने की आवश्यक तड़प अथवा प्यास विशेष नहीं है तो तूं केवल एक चलता फिरता मुर्दा विशेष ही है “दुर्गन्ध” विशेष से भरपूर लबालब भरा हुआ प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । अर्थात् आवश्यक पुकार विशेष में भी तभी मिठास विशेष प्रत्यक्ष होती है जब केवल “प्रभु मिलन” विशेष की ही आवश्यक दुर्लभ तड़प विशेष हो चातक विशेष की तरह से । देखा देखी वासनाओं के लोभी विशेष तो सभी हू-हू गीदड़ वाली करते ही हैं । भेड़ की खाल में छुपे स्वार्थी भेड़िये खूनी विशेष की तरह से । “नानक नाउ

खुदाई का दिल हच्चे मुख लेह^{११} अर्थात पुकार विशेष मालिक विशेष की आत्मा विशेष द्वारा आवश्यक रूप से जुबान तथा हृदय की पवित्रता विशेष से ही केवल होनी चाहिये निश्चित तौर पर और ये आवश्यक पवित्रता आत्मा विशेष की केवल रहत मर्यादा अनुसार व्यवहारिक जीवन विशेष जीने पर ही उपलब्ध होनी संभव है जो दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष के रूप में प्रत्यक्ष उपलब्ध होनी संभव है निश्चित रूप से । इस आवश्यक पवित्रता विशेष के आभाव में तेरे समस्त दावे विशेष दुर्लभ-2 सिफारिशों सहित “प्रभु” के “दरबारे खास” में तुझे केवल झूठा विशेष ही साबित करेंगे प्रमाणित तौर पर निश्चित रूप से । “अवर दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेह^{११} । अर्थात “अमल” यानि के आवश्यक व्यवहार विशेष जिस आत्मा विशेष का नकली अथवा झूठा विशेष ही है अथवा आभाव विशेष से लबालब भरा हुआ उसका कुछ भी कार्य विशेष सिद्ध होना शैतानी मुल्कों में भी केवल असंभव लफज विशेष को ही समर्थ बनाना है प्रत्येक काल में फिर “प्रभु” के “दरबारे खास” में किस कल्पना विशेष से सार्थक होगा ? अर्थात केवल घोर दुखी ही होना है आत्मा विशेष को निश्चित रूप से गांठ बांध लो विशेष चतुर विद्वानों विशेषो । बाहर के संग विशेष की दुर्लभ आवश्यक पवित्रता विशेष से ही केवल अंदर के संग विशेष की कल्पना विशेष साकार हो सकती है क्योंकि दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष केवल पवित्रता विशेष का महासागर

विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । इस की सत्यता विशेष में शक की कुछ भी गुंजाईश ही नहीं है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । बाहर का आवश्यक पवित्र संग विशेष ही केवल अन्दर विशेष का दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष करता है । फिर आवश्यक दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष को आपने मंजिल विशेष कैसे स्थापित कर रखा है ? “ग्रन्थ” अथवा “गुरु” विशेष को दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष रूप में । फिर मंजिल भी केवल तय अथवा आवश्यक पुरुषार्थ विशेष को पूरी तरह से करने विशेष से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होती है न कि केवल देखने विशेष से ही पूर्ण मुक्ति विशेष गले में बंध जाती है “कंठ लंगोट” की तरह से चलने विशेष का धंधा विशेष तो आप ने सीखा ही नहीं “पुश्तैनी रोग” विशेष जो ठहरो कुछ न करने का । “सच्चा सत्संग” केवल आप की निजी संपत्ति विशेष के रूप में आपका केवल इंतजार विशेष ही कर रहा है निरंतर आपके दुर्लभ शरीर विशेष में ही आपको केवल अगर विशेष कर देने के लिये निश्चित रूप से । बाहर का संग विशेष यदि सच्चा विशेष है तो भी केवल झूठा विशेष ही साबित होता है क्योंकि वो आत्मा का केवल दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष करने तक ही सीमित है । आत्मा विशेष को निज घर विशेष नहीं पहुंचा सकता परंतु अंदर का दुर्लभ आवश्यक सत्संग विशेष आत्मा को सदा के लिये उस कैद खाने से छुट्टी विशेष ही दिलवा देता है निश्चित रूप से प्रत्येक

काल में यकीनी तौर पर सीमित होने के बावजूद “शुद्ध रहानी मार्ग दर्शन” आत्मा विशेष के लिये अवश्य आवश्यक है यकीनी तौर पर विशेष के ही “कल्याण” हेतू ही प्रत्येक काल विशेष में निश्चित तौर पर जब तक आत्मा विशेष स्वयं को व्यवहारिक रूप से पूर्ण पाक विशेष स्थापित नहीं करती निरंतर प्रमाणिक तौर पर तब तक आत्मा विशेष इस आवश्यक अंदरूनी दुर्लभ सत्संग विशेष के योग्य कदापि हर्गिज नहीं बन सकती निश्चित रूप से । निरंतर “निकट नित पास” रहने के बावजूद भी आत्मा विशेष न तो उस “सत्य” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को न तो देख ही सकती है और न सुनने में ही समर्थ हो सकती है प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर । बिना “भाग्य” अर्थात् आवश्यक पवित्र पुरुषार्थ विशेष के “सतगुरु” यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष प्रत्यक्ष अनुभव में नहीं होती “घर” यानी के शरीर में स्वयं के ही बिल्कुल पास बैठे अथवा उपलब्ध होने के बावजूद भी आत्मा विशेष को केवल निराश विशेष ही होना पड़ता है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । अब सोचो आप के “सतगुरु” रूपी नकली परमात्माओं को तो ज्यादातर मनुष्य देखना तो दूर रहा केवल सुनना तक भी पसंद ही नहीं करते फिर ये कौन सा “सतगुरु” अथवा आवश्यक परमात्मा विशेष है जो प्रत्येक आत्मा के साथ महाभूत अथवा महामारी विशेष बन कर चुमड़ा विशेष हुआ है निरंतर “घर बैठ्या

निकट नित पास^{११} के रूप में यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ? अर्थात् पूरा **“सतगुरु”** केवल दुर्लभ आवश्यक **“परम चेतन सत्ता”** विशेष को ही ब्यान किया गया है धुर निर्दिष्टित दुर्लभ वाणी विशेष में जिस **“परम चेतन सत्ता”** विशेष के अभाव विशेष में सच्चा सतसंग प्रत्यक्ष उपलब्ध होना केवल असंभव ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से और प्रत्येक आत्मा इस दुर्लभ पूरे सच्चे दुर्लभ सतसंग विशेष को आवश्यक रूप से निरंतर अपने साथ ही लिये फिरती है । इसे देखने सुनने की बजाये आत्मा को केवल बाहर का ही रंग तमाशा रूपी केवल झूठा सतसंग विशेष ही पसंद आता है तो फिर दुख कहीं बारह से तो नहीं मिल जाते आत्मा इस दुर्लभ आवश्यक सच्चे सतसंग विशेष को पूरी तरह से ठुकरा विशेष कर के ही केवल अपने लिये घौर अभाव विशेष - विशेष एकत्र करने में ही निरंतर व्यस्त है पूरी तरह से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । **“मनमुख मुग्ध बुझे नहीं बाहर भालण जाई”** । कुछ बातें सुननी-पढ़नी जाननी आवश्यक हैं परंतु उन्हीं बातों विशेषो को जिंदगी भर केवल बार-2 सुनना-पढ़ना अथवा जानना यानी के दोहराना केवल स्वयं को पूरी तरह से डुबोने विशेष का ही प्रमाण पत्र विशेष है आवश्यक रूप से आत्मा का अपने ही हाथों से लिखा हुआ निश्चित रूप से । दुर्लभ आवश्यक फल विशेष केवल अमल विशेष से ही प्रत्यक्ष होना संभव है विचार कर पढ़े-सुने-जाने मुताबिक नियमानुसार प्रत्येक

काल में आवश्यकतानुसार आवश्यक रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो यकीनी तौर पर । “अमल” विशेष के अभाव में तो केवल चोटें घौर-2 ही खानी पड़ती है आत्मा को निश्चित रूप से अनन्त काल तक के लिये भयानक-2 दुखों विशेषो को सहते हुए यकीन तौर पर । (26.02.2005)

“ढ” “एक ओंकार सतिगुर प्रसादि” “ओंकार” यानि के “रागमई प्रकाशित आवाज” कः दुर्लभ आवश्यक भंडार विशेष जिसे गुरुमुखी के अक्षर विशेष से केवल बयान विशेष किया गया है । परमात्मा जी इस आवश्यक लफज विशेष में छुपकर समा नहीं गए हैं निश्चित रूप से । भाषा संसारिक व्यावहार का एक दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष ही है । “बावन अक्षर लोक त्रै सभ कुछ इन ही माह - ऐ अखर खिर लाहिगे ओइ अखर इन माह नाह” - अर्थात् आवश्यक “परम चेतन सत्ता” दुर्लभ विशेष इन अक्षरों विशेषों से कोई संबंध विशेष नहीं रखती है । दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रूप से प्रत्यक्ष रहने वाली निरंतर अविनाशी सत्ता विशेष ही है अलख-अगम-अगोचर-अनामी निश्चित रूप से । तीन मुल्कों का व्यवहार विशेष आत्मा के लिए इन्हीं अक्षरों विशेषों के माध्यम विशेष से ही संपन्न विशेष होता है । जैसे भूख लगने पर भोजन की मांग विशेष करने के लिए अक्षरों के अभाव विशेष में आपको अवश्य पेट पर तबला विशेष ही बजाना पड़ेगा निश्चित रूप से तभी दूसरी

आत्मा आपकी जरूरत विशेष को समझ सकेगी । अक्षर विशेष आत्मा के लिए मुख्य रूप से इंद्रियों विशेषों का व्यापार ही है । आत्मा विशेष जब इंद्रियों विशेषों के व्यापार विशेष से ऊपर उठ जाती है विशेष रूप से तब केवल आत्मा की अपनी ताकत अथवा सामर्थ्य विशेष ही कार्य करती है आवश्यक ख्याल विशेष के रूप में सभी मंडलों विशेषों में निश्चित रूप से । प्रत्येक आत्मा में ये सामर्थ्य विशेष निरंतर अवश्य प्रत्यक्ष उपलब्ध रहती ही है यकीनी तौर पर । लेकिन नियमानुसार जब तक आत्मा अपनी कैदों विशेषों से स्वयं को पूरी तरह से मुक्त विशेष नहीं करवा लेती तब तक उसे इंद्रियों के माध्यम अक्षरों विशेषों से ही आवश्यक कार्य विशेष सिद्ध करने के लिए अवश्य आवश्यक रूप से मजबूर विशेष होना ही पड़ता है निश्चित रूप से । “**एकम**” अथवा एक भाव विशेष है कि यदि आत्मा विशेष पूर्ण रूप से अविनाशी सुख विशेष को प्राप्त करना चाहती है तो उसे यानी के आत्मा विशेष को केवल “**जीते जी**” ही मनुष्य के आवश्यक दुर्लभ जन्म विशेष में इस दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष के साथ मिलकर के प्रत्यक्ष रूप से एक ही होना पड़ेगा प्रत्येक काल में निश्चित रूप से तभी आत्मा विशेष के सभी अनन्त काल के जन्म-मरण रूपी घोर-घोर भयानक दुखों विशेषों का पूर्ण निपटारा विशेष होगा यकीनी तौर पर । इस दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष के साथ “**आत्मा विशेष**” के “**दुर्लभ मिलन**” विशेष के अभाव में

तो प्रत्येक आत्मा विशेष को इसी त्रिलोकी यानी के “शैतानी मुल्कों” विशेषों के ही चक्कर विशेष-2 काटने के लिए अवश्य मजबूर होना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार प्रत्येक काल में नियम विशेष के अधीन निश्चित रूप से । यह दुर्लभ आवश्यक मिलन विशेष दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष का आत्मा द्वारा केवल दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष में होना ही केवल संभव है वो भी केवल जीते जी ही यकीनी तौर पर । “प्रसादि” यानी के कृपा विशेष यही प्रत्यक्ष उपलब्ध हो जाए “सतगुरु” यानी के शब्द विशेष केवल अर्थात् “रागमई प्रकाशित आवाज” के भण्डार विशेष अथवा “परम चेतन सत्ता” की दया विशेष आत्मा विशेष को प्रत्यक्ष मिल जाए तो अवश्य असंभव जैसा कार्य विशेष भी संभव लफ़्ज़ विशेष को सार्थक बनाने में आत्मा विशेष समर्थ हो ही जाती है निश्चित रूप से काल विशेष में यकीनी तौर पर । अर्थात् “प्रभु की दुर्लभ आवश्यक कृपा” विशेष के अभाव में किसी भी आत्मा विशेष का भी दुर्लभ आवश्यक “प्रभु मिलन” होना केवल असंभव ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । यह शब्द विशेष सभी मानव शरीर में विशेष रूप से प्रत्यक्ष होता है जब “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” प्रत्यक्ष उपलब्ध हो । “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” तब प्रत्यक्ष होती है जब आत्मा विशेष आवश्यक “पुरुषार्थ” विशेष करे । पुरुषार्थ विशेष तभी प्रत्यक्ष होता है जब

आत्मा विशेष दुर्लभ लिखित विशेष के अनुसार व्यवहारिक जीवन विशेष अपनाये “अमली” तौर पर विशेष रूप से । यह आवश्यक अमली जीवन विशेष रूप से आत्मा विशेष बिना “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” को प्रत्यक्ष किए कैसे जी सकेगी निश्चित रूप से ? अर्थात् “प्रभु” की “दया विशेष” से आवश्यक पुरुषार्थ विशेष सम्पन्न होता है तथा आवश्यक पुरुषार्थ विशेष से “प्रभु” की “दया विशेष” उपलब्ध होती है आत्मा विशेष के “निज कल्याण” हेतु ही केवल निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । अर्थात् क्या नियम विशेष प्रत्यक्ष होता है ? “अमल ही धर्म” यानी के अमला उते होन निबेड़े खड़ियां रहनगीआं जातां । “जातां” यानी के मत धर्म विशेष द्वारा अपनाई गई क्रियाएं विशेष-2 “महान-महान” । ये आपकी सभी दुर्लभ-2 महान-2 क्रियाएं विशेष-2 खड़ी तालियां पीटेगीं विशेष रूप से और दुर्लभ आवश्यक अमल विशेष के अभाव विशेष के कारण आपको कोई बालों से पकड़ कर घसीट कर ले जायेगा वसूली दुर्लभ विशेष-2 हेतु आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से गांठ बांध लो महान-2 चतुरों विद्वानों विशेषों “पातशाहों” वगैरह-2 भी यकीनी तौर पर । आपकी सभी महान-2 दुर्लभ-2 क्रियाएं विशेष-2 केवल शरीर तक ही सीमित हैं । आत्मा का इन सभी क्रियाओं विशेषों अथवा मत धर्मों विशेषों से कुछ भी सम्बन्ध ही नहीं है निश्चित रूप से । अगर है तो केवल अपने आवश्यक मूल विशेष अविनाशी सत्ता

विशेष से प्रत्येक काल में केवल यही धर्म विशेष अर्थात् धारण करना केवल “परम चेतन सत्ता” विशेष को जीते जी ही केवल “आत्मा विशेष” के द्वारा और स्वयं को ही केवल पूर्ण धर्मात्मा विशेष ही साबित करते हुए व्यवहारिक रूप से प्रत्यक्ष प्रमाणित स्थापित करना “प्रभु” के दुर्लभ “दरबारे खास” से निश्चित रूप से गांठ बांध लो । आप केवल दुनिया को ही धर्म-मत विशेष-2 पढ़ाते हुए पूरी तरह से डुबाने विशेष में ही केवल स्वयं को मददगारों विशेषों-2 सहित दुर्लभ व्यस्त हो निश्चित रूप से प्रत्येक काल में निश्चित यकीनी तौर पर ! इसीलिए कहा है आत्मा विशेष कि “हरि” यानी के “परम चेतन सत्ता” विशेष को “जप” यानी के पुकार अथवा याद कर केवल निर्मल तथा आवश्यक पाक हृदय विशेष से “मन्त्र” यानी के मंत्र विशेष को जपा जाता है । “गुरु” यानी के शब्द विशेष का “उपदेश लो” अर्थात् उपलब्ध दुर्लभ लिखित विशेष को “जापै” यानी के व्यवहारिक रूप से अपना ले अपने दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष में केवल स्वयं को ही स्थिर विशेष रखने की ही खातिर निश्चित रूप से । हे आत्मा विशेष तुझे व्यवहारिक रूप से प्रमाणिक तौर पर साबित विशेष करना ही होगा कि तुझे केवल “जिन हर प्रीति चितासा” यानी के “अकाल पुरख परमात्मा” विशेष से ही मिलने का दुर्लभ शौक विशेष है । इसी आस विशेष को अपने हृदय अथवा चित्त विशेष में संजोये हुए ही केवल तड़प तड़प-2 कर जी विशेष रही है पल पल मरते विशेष

हुए निश्चित रूप से । “तिन अंत छडाये” अर्थात तभी “अंत” यानि के दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष में तू छुड़ायी जायेगी आत्मा विशेष “प्रभु” की “दया विशेष” को प्रत्यक्ष उपलब्ध करवा कर यकीनी तौर पर । आप कौन-2 से दुर्लभ पातशाहों विशेषों का शौक धरे दाड़ी-चोलों-गद्धियों विशेषों के पीछे भाग विशेष रहे हो केवल स्वयं को पूरी तरह से बरबाद विशेष करने के हेतू ही निश्चित रूप से ? “जन नानक” यानी के है आत्मा विशेष यदि छूटना चाहती है इस भयानक कैद खाने से विशेष रूप से तो “अनदिन नाम जपे” यानी के दिन रात लगातार नाम अर्थात केवल आवश्यक प्रकाश विशेष जो एक दुर्लभ “रागमई आवाज” विशेष से निरंतर प्रत्यक्ष होता है को ध्यान धर अथवा जप यानी के अपनी दुर्लभ आत्मिक समर्था विशेष से इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” को सुन तथा देख विशेष रूप से निर्मल तथा पाक हृदय विशेष से केवल तभी आत्मा विशेष तेरे सभी दुर्लभ-2 पाप विशेष भी “हर” लिये जायेंगे निश्चित रूप से इस दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” द्वारा तथा तुझे दुर्लभ लिखित विशेष का चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप यानी के “संत” बनना विशेष उपलब्ध हो सकेगा यकीनी तौर पर “प्रभु” की “दुर्लभ दया विशेष” से प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से । संत लफज का भाव दाड़ी-चोले-डेरें विशेष-2 इत्यादि कदापि हर्गिज भी नहीं है । केवल सभी इंद्रियों के व्यवहार विशेषों से उपर उठी हुई दुर्लभ आत्मा

विशेष ही इस लफज विशेष को सार्थक बनाती है “प्रभु” की आवश्यक “दुर्लभ दया विशेष” को प्रत्यक्ष उपलब्ध करवा कर निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गांठ बांध लो दुर्लभ-2 चतुर विद्वानो विशेषो यकीनी तौर पर। दाड़ी चोलों वाले नकली संत विशेष-2 तो बहुत प्रत्यक्ष है अनंत निकृष्ट-2 कामनाओं विशेषो के भयानक सागर विशेष में दुर्लभ-2 गोते विशेष-2 लगाते हुए निश्चित रूप से परंतु “कथनी तथा रहनी” आवश्यक का मेल अत्यंत “दुर्लभ विशेष” ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुरों विद्वानों विशेषो । यदि ऐसी कथनी तथा रहनी के दुर्लभ संग विशेष वाली दुर्लभ आत्मा विशेष आप को कहीं भूले से भी मिल जाये तो अपना समस्त जीवन विशेष इस दुर्लभ आत्मा विशेष के दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष के अनुसार कुर्बान विशेष कर दो पूरी तरह से खूब सोच विचार कर दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष पर निश्चित तौर पर केवल स्वयं के ही “निज कल्याण” हेतू यकीनी तौर पर “आत्मा विशेष” यदि अपना भला विशेष चाहती है तो इस दुर्लभ आवश्यक पथ विशेष को जीते जी ही अपना ले निश्चित तौर पर। “इह छूटण का साचा भरवासा” अर्थात् “हे प्यारी आत्मा विशेष” के पूरी तरह से इस भयानक कैद खाने से छूटने का केवल यही एक पूर्ण शुद्ध रूहानी ज्ञान अथवा दुर्लभ मार्ग दर्शन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लें अगर सचमुच पूरी तरह से छूटना विशेष

चाहती है । “आत्मा विशेष” तो इस दुर्लभ “शुद्ध रहानी ज्ञान” को तू व्यवहारिक रूप से अपना कर अपनी हृदय की स्वच्छता विशेष को प्रमाणित कर “प्रभु” के दरबारे खास में यकीनी तौर पर । इस दुर्लभ अमल यानि के व्यवहार विशेष के अभाव में तेरे सभी दावे विशेष-2 केवल झूठे विशेष ही है। “प्रभु” के “दरबारे खास” में प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । चाहे बड़े-2 कुण्ड जल विशेष के तूने हजम कर रखें है । या बड़े-2 दुर्लभ-2 परमात्माओं विशेषों से तूने नाम के दान विशेष ले रखें हैं या बड़े-2 परमात्मा के भी बापों विशेषों से दुर्लभ-2 कर्मकाण्ड विशेष ले कर अपना रखें हैं व्यवहारिक रूप से ये सभी दुर्लभ -2 धंधे विशेष केवल तेरे पूरी तरह से डूबने का निश्चित आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष ही हैं जो तूने स्वयं के हाथों से लिखकर अपने स्वयं के ही सुराईदार गर्दन विशेष में बांध रखा है यकीनी तौर पर “प्रभु” की दुर्लभ साक्षी विशेष की मुहर विशेष भी इस दुर्लभ डिग्री विशेष पर और लगा दी जाती है समय की नजाकत को ध्यान में रखते हुए कि कहीं तुझे नकों घोर में प्रवेश पाने से मायूस न होना पड़े निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों पातशाहो महान-2 ।

“राम” अर्थात केवल जड़-चेतन में निरंतर भरपूर रमी हुई प्रत्येक काल में “परम चेतन सत्ता” विशेष । “नाम” यानी के “परम चेतन सत्ता” विशेष का केवल एक छुद्र सा आवश्यक गुण विशेष अर्थात केवल दुर्लभ प्रकाश विशेष । “कीर्तन” अर्थात दुर्लभ

“रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष निश्चित रूप से । बाहर के समस्त कीर्तन विशेष जो साधनों विशेषों से प्रत्यक्ष किये जाते हैं केवल अधूरे ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । यह कीर्तन विशेष “निर्वाण” यानी के बिना रुके निरंतर प्रत्यक्ष रहने वाला “करते” यानी के परमात्मा का “निमख सिमरत जित छूटे” अर्थात् केवल एक पल के लिये भी पारब्रह्म की विशेष “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष को “गावै” यानी के प्रत्यक्ष अनुभव करने अथवा सुनने वाली आत्मा विशेष इस भयानक कैद खाने से स्वयं को छुटाने का निश्चित प्रमाण पत्र विशेष “प्रभु” के “दरबारे खास” से उपलब्ध करवाने में पूर्ण समर्थ विशेष हो ही जाती है केवल “प्रभु” की “दया विशेष” से आवश्यक रूप से निश्चित प्रमाणिक तौर पर इसीलिये इस दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष को “रतन” यानी के कीमती विशेष कहा गया है यकीनी तौर पर । यह दुर्लभ आवश्यक कीर्तन दुर्लभ परमात्मा का बिना रुके बिना किसी भी किसी साज विशेष के स्वयं ही केवल प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होता है “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष के रूप में जो कुल आलम विशेष को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करने का दुर्लभ-2 आवश्यक साधन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । केवल इसी भाव विशेष को याद रखने हेतू ही समस्त वाणी विशेष अथवा दुर्लभ “प्रभु” प्रेरणा विशेष के प्रचलित झूठे अथवा नकली रागों विशेषों के जरिये प्रस्तुत किया गया ताकी आपका ध्यान विशेष दुर्लभ आवश्यक “रागमई

प्रकाशित आवाज” अर्थात् “परम चेतन सत्ता” विशेष की तरफ लगा रहे । “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” ने अपने नकली अधूरे रागों विशेषों को ही केवल पूर्ण परमात्मा का बाप स्थापित कर आपको केवल अधूरे कीर्तन दरबारों विशेषों में ही फंसा कर रोक विशेष दिया ताकी आप अपने दुर्लभ मनुष्य के जन्म को इन अधूरे कार्यों विशेषों पर खर्च करते हुए स्वयं को डुबोते रहो धीरे-2 पूरी तरह से नष्ट विशेष हो जाने के लिये ही यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । समस्त विद्यायाएँ विशेष- 2 दुर्लभ- 2 रागों विशेषों सहित केवल “शैतानी ताकतों” की दुर्लभ कला विशेष ही है निश्चित रूप से । जिन को प्रत्यक्ष उपलब्ध करने का मकसद “शैतानी ताकतों” का केवल आत्मा को अपने मुल्कों में ही रोकना ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । कोई भी छोटी से छोटी कला विशेष आंशिक रूप से भी बिना “घोर तप” विशेष किये उपलब्ध ही नहीं होती इन “शैतानी ताकतों” के दरबार विशेष से निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । असल “प्रभु” का इन सभी कला विशेषों से दूर-दूर तक कुछ भी सम्बन्ध विशेष ही नहीं है यकीनी तौर पर । “रतनवथ” यानी के कीमती पदार्थ विशेष है आवश्यक रूप से इस सृष्टि को प्रत्यक्ष उपलब्ध कर निरंतर धारण विशेष करने का प्रत्येक काल में दुर्लभ “रागमई प्रकाशित आवाज” निश्चित रूप से । “हरि” यानी के केवल हरी अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष में ही प्रत्यक्ष

पूर्ण समर्था विशेष है प्रत्येक काल में प्रत्येक आत्मा के समस्त पाप तथा पुण्य विशेषों को पूरी तरह से हर विशेष लेने की अथवा बक्ष्णने की इकलौती दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” निश्चित रूप से गांठ बांध ले “दुर्लभ आत्मा विशेष” पाप अथवा पुण्य दोनों आत्मा के लिये तो केवल पाप अथवा बंधन विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । पाप में आत्मा को निकृष्ट विशेष भोगी शरीर अथवा बंधन या कैद विशेष मिलेगी भुगतने हेतू तो पुण्य में आत्मा विशेष को उत्तम विशेष भोगी शरीर मिलेगा केवल बंधन या कैद विशेष के रूप में अपने बढ़िया- 2 कार्यों विशेषों के दुर्लभ -2 फल विशेषों को भोगने हेतू ही निश्चित रूप से गांठ बांध लो फिर छूटोगे किस कल्पना विशेष से आत्मा विशेष विचारों ? अर्थात् दिया हुआ लेने आओगे और लिया हुआ देने आना ही पड़ेगा निश्चित रूप से दोनों अवस्थाओं विशेषों को सार्थक विशेष बनाने के लिये आवश्यक पिंजरे अथवा शरीर विशेष की ही आवश्यकता पड़ेगी निश्चित रूप से । “हउ विच दिता हउ विच लइआ” अर्थात् हउ यानी के प्रतिफल अर्थात् केवल “शैतानी ताकतों” का दुर्लभ दरबार विशेष ही देखना पड़ेगा निश्चित रूप से । इसीलिये नियम है “पुन दान जो बीजदे सभ धरम राइ” यानी के केवल “शैतानी ताकतों” के मुल्कों का ही कोई दुर्लभ कोना अथवा हिस्सा विशेष “के जाइ” यानी के रोशन करने के लिये ही स्वयं को मजबूर बनाना है आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर

पर प्रत्येक काल मे निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर आत्मा विशेषो । वही आत्मा विवेकशील है जो पाप तथा पुण्य दोनों से ही स्वयं को ऊपर उठाती है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से। पुण्य में फर्स्ट क्लास की दुर्लभ विशेष जेल मिलती है तो पाप में थर्ड क्लास की भयानक-2 अभावों विशेषो से भरी हुई केवल आत्मा के बंधन विशेष हेतु ही “आत्मा विशेष” रहती केवल कैद खाने विशेष में ही है निश्चित रूप से । “पास धरीजै” अर्थात् प्रत्येक आत्मा परमात्मा का निजी अंग विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इसलिये सभी आत्माओं का अपने मूल अथवा आधार विशेष यानी के परमात्मा पर पूरा पूरा बराबर का ही अधिकार विशेष है प्रत्येक काल में । इसलिये परमात्मा ने भी दुर्लभ गुण विशेष अर्थात् “दुर्लभ आवश्यक रागमई प्रकाशित आवाज” रूपी कीमती आवश्यक वस्तु अथवा मुक्त होने के दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष को सभी आत्माओं के बहुत ही निकट नित पास केवल उन्हीं की निजी संपत्ती विशेष धरोहर के रूप में संजो कर रख दी है “अखुट भण्डार” विशेष के रूप में भरपूर बराबर- बराबर निश्चित रूप से । “जो वचन” अर्थात् आत्मा विशेष वचन यानी के दुर्लभ लिखित विशेष “गुरु” यानी के शब्द विशेष अर्थात् परमात्मा की दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा द्वारा प्रत्यक्ष उपलब्धि विशेष को “सत सत कर माने” यानी के सत अर्थात् यकीन विशेष करे तथा सत यानी के अपने जिंदगी के व्यवहार विशेष को

आवश्यक रूप से इसी दुर्लभ “प्रभु” की आत्मिक प्रेरणा विशेष के अनुसार प्रमाणिक रूप से प्रत्यक्ष बनाये तभी दुर्लभ आत्मा विशेष स्वयं को “साधू” श्रेणी में विशेष रूप से स्थापित कर पाती है “गृहस्थ में जो रहे उदास” अर्थात् सभी इंद्रियों विशेषों के व्यवहार विशेष से स्वयं को उपराम विशेष करना अथवा साधना केवल गुजारे मात्र की प्रविष्ट संसार विशेष में रखते हुए “काल विशेष” में निश्चित रूप से तभी “तिस” यानी के आत्मा विशेष के “आगे काढ धरीजै” यानी के निजी दुर्लभ कीमती आवश्यक सम्पत्ती विशेष जो अमानत विशेष के रूप में संजो कर रखी थी “प्रभु” ने निकाल कर प्रत्यक्ष सामने धर दी जाती है “आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष” के रूप में “आत्मा विशेष” को इस भयानक कैद खाने विशेष से सदा के लिये मुक्त विशेष करवाने के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ।

“काइया अंदर” अर्थात् शरीर के अंदर आपको ये दुर्लभ प्रयोग विशेष आवश्यक रूप से पूर्ण सम्पन्न विशेष करना है केवल स्वयं को ही मुक्त विशेष करवाने हेतू निश्चित रूप से । “जगजीवन” अर्थात् जगत को जीवन यानी के आवश्यक प्राण विशेष देने वाला दुर्लभ विशेष “परम चेतन सत्ता” दाता यानी के दुर्लभ दान विशेष देने वाला सगल सृष्टि को धड़कने हेतू निरंतर आवश्यक रूप से “वसे” अर्थात् प्रत्यक्ष उपलब्ध ही है निश्चित रूप से बिना दुम विशेष के प्राणी विशेष मानव शरीर में यकीनी तौर

पर । **“सभना करे प्रतिपाला”** अर्थात जड़ चेतन सभी को निरंतर प्रत्यक्ष सुरक्षा विशेष उपलब्ध कर रहा है बिना किसी भी भेदभाव के प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से फिर **“सभना”** में क्या तू विशेष शामिल नहीं है ? जो विशेष-2 लाईनों में लगा हुआ है तेल की बोतल विशेष हाथ में पकड़े रोता विशेष हुआ । क्या तेरी पूर्ण आवश्यक सुरक्षा विशेष का बंदोबस्त विशेष नहीं किया गया ? पैदा होने से पहले ही रिजक विशेष सजा कर उपलब्ध रख दी जाती है निश्चित रूप से । केवल अपने गिरेबान विशेष में थोड़ा सा झांकने की आवश्यकता है विशेष रूप से । धंधा विशेष तो दूसरों के वस्त्रों विशेषो को टटोलने विशेष का अपना रखा है स्वयं की निजी संपत्ति विशेष साबित करते हुये कई पीढियों विशेषो से । ऐसा नहीं है कि कुछ करने के बाद ही **“प्रभु जी”** जागेगें तथा चल कर आपके शरीर विशेष में विराजेगें । सब कुछ तेरे पेट में आने से पहले ही आवश्यक रूप से संजो विशेष कर रख दिया है विशेष तौर पर निश्चित रूप से । केवल तुझे वहां तक पहुंचना है जहां पर तेरे शरीर में ही केवल तेरी निजी अमानत विशेष **“अखुट भण्डार”** विशेष के रूप में रखी हुई तेरे आने के इंतजार विशेष में ही निरंतर सूख विशेष रही है केवल तुझे गले विशेष लगाने हेतू ही निश्चित रूप से । तुझे महान-2 दूयुटियों विशेषो से जब आवश्यक छुट्टी विशेष मिलेगी तभी तो तू इस पर विचार विशेष कर सकेगा । ना तो तेरी दुर्लभ-2 जिम्मेदारियां विशेष-2 खत्म होंगी और ना

ही तुझे ये दुर्लभ आवश्यक भण्डार विशेष मिल ही सकेगा कभी सुपने में भी केवल नहीं विशेष । एक भण्डार से स्वयं को निकाल और दूसरे दुर्लभ आवश्यक विशेष में शामिल हो निश्चित रूप से । ये अब तुझे ही केवल सोचना है कि किस भण्डार विशेष से तुझे दुर्लभ आवश्यक माल विशेष प्राप्त हो सकता है । ताकत केवल एक ही है जो दो विशेष में कभी भी नहीं प्रत्यक्ष हो सकती एक ही समय विशेष में निश्चित रूप से तू गांठ बांध जो चतुर विद्वानों विशेषो । एक को तो अवश्य आवश्यक रूप से पूरी तरह से खोना विशेष ही पड़ेगा प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । ^{८८}“नाम” का अखुट भण्डारा विशेष तो तूं स्वयं ही निरंतर साथ ही लिये फिरता है भरपूर प्रत्येक काल में। तूं स्वयं भी नाम विशेष का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष भरपूर नाम विशेष के सिवाय ओर क्या हो सकता है जरा सोच तो सही ? ये नाम रूपी महामारी विशेष तेरे रोम-2 में निरंतर भरपूर विशेष समायी हुई है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । तेरे में ऐसा कौन सा कण अथवा कोना विशेष इस नाम विशेष से खाली विशेष पड़ा हुआ है जो तू उसे भरने विशेष के लिये लाइनों विशेषो में लगा हुआ है आवश्यक बोतल विशेष हाथ में पकड़े हुए । ^{८९}“नाम के धारे सगले जंत” अर्थात् ^{९०}“नाम” यानी के केवल दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष ही आधार है ^{९१}“सगले जंत” यानी के सभी प्राणियों विशेषो का यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । ^{९२}“नाम के धारे खंड ब्रह्मंड” अर्थात् सभी

ब्रह्माण्डों विशेषों को प्रत्यक्ष करने वाली “दुर्लभ आवश्यक सता विशेष” को नाम यानी के दुर्लभ प्रकाश विशेष ही कहा गया है । “नाम के धारे सिमित-वेद -पुरान” अर्थात् सभी प्रमाणिक परमार्थी ग्रन्थों विशेषों में भी केवल उस “दुर्लभ आवश्यक परम चेतन सता” विशेष को ही नाम यानी के दुर्लभ प्रकाश विशेष के रूप में ही बयान विशेष किया गया है । सभी ग्रन्थों विशेषों का भाव केवल “प्रभु” की आवश्यकता अहमियत अथवा महत्ता विशेष को व्यक्त अथवा स्थापित विशेष करना है लफजों विशेषों के जरिये । आप का क्या धंधा है कि ग्रन्थों विशेषों को ही “प्रभु” का दुर्लभ कैदखाना विशेष स्थापित करना केवल स्वयं को पूरी तरह से डुबोने विशेष के लिए ही निश्चित रूप से । “नाम के धारे सुनन-गिआन-धिआन” अर्थात् केवल प्रमाणिक ग्रन्थों विशेषों को पढ़ना -सुनना अर्थ सहित विचार कर आवश्यक रूप से । फिर ज्ञान रूपी प्रकाश से समबन्धित विषय विशेष को छाये हुये घोर अज्ञानता रूपी अंधकार विशेष में से अपनी पूरी तरह से डूबी हुई आत्मा विशेष को निकालना अथवा मार्ग दर्शन विशेष उपलब्ध करवाना आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से । फिर पवित्र हृदय विशेष से निरंतर पुकारना विशेष तौर पर ध्यान सहित “प्रभु” को आधार है नाम यानी के दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष तक पहुंचने विशेष का या प्रत्यक्ष उपलब्ध कर अनुभव विशेष कर लेने का “नाम विशेष” को केवल अपने ही दुर्लभ आवश्यक मानव शरीर विशेष

में यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में केवल जीते जी ही निश्चित रूप से । “नाम के धारे आगास पाताल” अर्थात् अनन्त आकाशो - पातालों को प्रत्यक्ष करने वाला जादू विशेष केवल नाम रूपी दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

“नाम के धारे सगल आकार” अर्थात् प्रत्येक रूप को प्रत्यक्ष करने का दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष केवल नाम यानी के दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष ही है प्रत्येक काल में । जिस भी आत्मा विशेष के पास ये दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है वो किसी भी आकार को प्रत्यक्ष करने में पूर्ण समर्थ है उपलब्ध महत रूपी मिट्टी से कुम्हार विशेष की तरह से प्रत्येक काल विशेष में यकीनी तौर पर । इस दुर्लभ मिट्टी विशेष का इकलौता मालिक विशेष केवल सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें हैं । जो जब चाहें जैसा चाहें जितना चाहें रूप विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध करने में पूर्ण समर्थ है आवश्यक साधन विशेष नाम यानी के दुर्लभ प्रकाश विशेष के बल विशेष के माध्यम से निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । अनन्त भण्डार विशेष नाम यानी के दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष का सदा उपलब्ध विशेष ही है इन आवश्यक सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों विशेषो के पास आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर तथा इस आवश्यक भण्डार विशेष को बढ़ाने के लिये निरन्तर तप विशेष में ही सलग्न

रहती है ये आवश्यक “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” विशेष निश्चित रूप से । “नाम के धारे पुरिआ सभ भवन” अर्थात् सूक्ष्म तथा कारण मुल्कों विशेषों की समस्त दुर्लभ-2 रचना विशेषों को प्रत्यक्ष उपलब्ध करने का आवश्यक आधार विशेष भी केवल नाम रूपी दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष ही है निश्चित रूप से । “नाम के संगि उधरे सुनि सृवन” अर्थात् नाम रूपी दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष एक “दुर्लभ आवश्यक रागमई आवाज” विशेष से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होता है निरंतर । उस “दुर्लभ आवश्यक रागमई आवाज” विशेष को सुन कर तथा उस में से प्रत्यक्ष हो रहे दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष को देख कर दुर्लभ आत्मा विशेष अपनी अनंत जन्मों विशेषों से खोई हुई दुर्लभ समर्था विशेष को फिर से प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने लगती है तथा फिर पवित्र हो कर इस दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष के दुर्लभ आवश्यक संग विशेष से इस दुर्लभ “रागमई आवाज” में ही पूरी तरह से लीन विशेष हो करके अनंत मण्डलों को पार करती हुई अपने दुर्लभ आवश्यक मूल विशेष “परम चेतन सत्ता” में ही समा विशेष जाती है पूर्ण रूप से जिस से कि आत्मा विशेष का अनन्त काल से चला आ रहा भयानक-2 दुखों विशेषों से लबालब भरा हुआ जन्म-मरण सदा के लिये फिर समाप्त विशेष हो जाता है यानी के उस दुर्लभ आत्मा विशेष का आवश्यक रूप से पूर्ण उद्धार विशेष ही हो जाता है हमेशा के लिये निश्चित रूप से यकीनी तौर पर सभी भयानक

घौर-2 दुखों विशेषो से निश्चित पूर्ण छुटकारा विशेष मिल जाने के कारण । “करि किरपा जिसु अपने नाम लाए” अर्थात् जिस भी चरितार्थ-व्यवहारिक स्वरूप बन चुकी “दुर्लभ लिखित विशेष” के अनुसार दुर्लभ “आत्मा विशेष” पर “अकाल पुरख परमात्मा” की “दुर्लभ आवश्यक दया विशेष” प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो जाती है उस दुर्लभ आत्मा विशेष के शरीर में ही ये दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष रूपी नाम विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होने लग जाता है निरंतर दुर्लभ आत्मा विशेष को यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । “नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए” अर्थात् जन यानी के दुर्लभ आत्मा विशेष इस दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष के बल पर स्वयं को तीनों शरीर रूपी पिंजरों विशेषो से निकाल कर तीनों शैतानी मुल्कों रूपी भयानक कैद खानों से स्वयं को पूरी तरह से मुक्त विशेष करवा कर पारब्रह्म रूपी “चउथे पद” विशेष में प्रवेश करवाने योग्य बना कर स्वयं को प्रत्यक्ष प्रस्तुत करती है “प्रभु” के “दुर्लभ दरबारे खास” में यकीनी तौर पर निश्चित रूप से ये दुर्लभ आवश्यक गली विशेष वहां तक पहुंचने की आत्मा विशेष को सदा के लिये उपलब्ध विशेष करवा दी जाती है अवश्य आवश्यक रूप से “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” के रूप में । अब सोचो जड़ चेतन में भरपूर निरंतर समाये हुए इस दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष को कौन कैसे दान विशेष कर सकता है ? तथा सभी महान-2 उपलब्धियां विशेष मिल कर के

भी कैसे इसे एक पल के लिये भी केवल एक छुद्र से कण रूपी नाम विशेष को भी धारण विशेष करने में समर्थ विशेष हो सकती है ? सुपने में भी अनन्त प्रयासों विशेष के बावजूद भी केवल “असम्भव” विशेष निश्चित रूप से । इसी दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को शब्द के रूप में केवल बयान विशेष किया गया है “शब्दे धरती-शब्दे आकाश” अर्थात् अनंत धरातलों तथा आकाशों को प्रत्यक्ष कर के निरंतर धारण विशेष करने वाला आवश्यक शब्द विशेष दुर्लभ “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “शब्दे सबद भइया परगास” अर्थात् लफज रूपी सबद से शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक रागमई प्रकाशित आवाज विशेष को बयान किया गया है कि यह एक दुर्लभ प्रकाश विशेष को प्रत्यक्ष करने वाला निरंतर दुर्लभ आवश्यक आकर्षण विशेष ही है प्रत्येक काल में । “सगल सृष्टि शब्द के पाछे” अर्थात् सम्पूर्ण उपलब्ध उपलब्धी विशेष शुरू से आखिर तक केवल शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष का ही दुर्लभ उत्कृष्ट नमूना मात्र ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । सम्पूर्ण जड़-चेतन स्वयं को स्थिर विशेष रखने हेतु केवल इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष का ही मुंह देखती हैं आवश्यक रूप से विशेष तौर पर । “नानक शब्द घटे घट आछे” अर्थात् प्रत्येक छुद्र से छुद्र कण विशेष में

भी केवल यही दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज़” यानी के शब्द विशेष ही निरंतर भरपूर समाया हुआ है निश्चित रूप से । प्रत्येक शह इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज़” अथवा शब्द विशेष के सिवाय ओर कुछ भी नहीं है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो आत्मा विशेष अब आप ने क्या धन्धा अपना रखा है? जिन लफजों विशेषो के जरिये इस मूल अथवा जड़ विशेष को बयान विशेष किया गया है उन्हीं लफजों से भरे हुए ग्रन्थ विशेष में आपने दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को कैद विशेष कर रखा है । इस दुर्लभ कैद विशेष से छुटकारा विशेष प्राप्त करने के लिये सिसक रही है बेचारी आवश्यक दुर्लभ “आत्मिक ताकत” विशेष। कैसे अनन्त सृष्टियां प्रत्यक्ष करके धारण करते हैं ये लफज विशेष रुपी ग्रन्थ विशेष इसको ये ठग विशेष ही बतायेंगे जो उन्हें खोल कर “प्रभु” को जगाते तथा बंद करके सुला विशेष देते हैं बेचारे “परमात्मा” विशेष को निश्चित रूप से । असल में कोई भी आत्मा पढ़ना ही नहीं चाहती । इसीलिये पढ़ाने वाला भी ऐसा दुर्लभ “गुरु” विशेष ढूंढ ही लिया है कि जहां बैठा दो बैठा रहे बस बिना आंख के बन्द किये हुए ही सब कुछ होते हुए अपने सामने ही केवल अपंग सा बस देखता भी रहे । कुछ भी करते फिरो मन अनुसार कोई पूछने वाला न हो । बस डिग्री गले में बांध देवे बिना कुछ भी पुरुषार्थ विशेष किये निश्चित रूप से बिना हाथों के ही यकीनी तौर पर ।

जो कान पकड़ कर मुंह पर दो चपत लगा कर बताये कि क्या गलत है और क्या सही है वो दुर्लभ आत्मा विशेष पढ़ाना ही नहीं जानती । अपने महाराज जी को देखो है केवल दृष्टि मार कर ही पूर्ण मुक्ति विशेष जबरदस्ती घर पर भिजवा देते हैं अपने घर पहुंचने से पहले ही सभी घौर-2 पाप अनन्त जन्मों के भी जहर से पूर्ण शुद्ध अमृत ही बना दिये जाते हैं रस विशेष-2 टपकाते हुये केवल एक नजर विशेष में ही पातशाह दुर्लभों द्वारा निश्चित रूप से । इन पातशाहो विशेषो ने तो परमात्मा बेचारे को जन्म दिन का केक विशेष ही बना रखा है जब चाहो सलाईज काट कर दान विशेष कर दो दुर्लभ नाम अर्थात केवल आवश्यक प्रकाश विशेष का पीछे ^{९९}प्रभु के दुर्लभ ^{९९}दरबारे खास से सोडियम बाईकार्बोनेट की बहुत बड़ी मांग विशेष का टैन्डर इशू किया गया था सप्लाई हेतू। पहले तो पता ही नहीं चला कारण विशेष इस इतनी बड़ी मांग का परंतु कुछ लीकेज विशेष उपलब्ध हुई कि नाम तथा शब्द विशेष का दुर्लभ-2 व्यवसाय विशेष करने वालों के लिये नर्क लफज बहुत छोटा सा साबित हो रहा था ^{९९}प्रभु के दरबारे खास में फिर किसी ने दुर्लभ सलाह विशेष दी कि इस दुर्लभ पदार्थ विशेष से आवश्यक संयोग विशेष करवा कर इस नर्क विशेष को फुला कर इतना बड़ा घौर-2 नर्को विशेषो में तबदील किया जाये ताकी सभी दुर्लभ-2 नाम तथा शब्द के व्यापारी विशेष-2 अपने दुर्लभ-2 मददगारों विशेषो तथा अनुयाईयों विशेषो सहित पूरी

सजे धजे भण्डारों विशेष-2 सहित इन घोर-2 नकों विशेष में पूरी तथा अच्छी तरह से समा विशेष सके बिना किसी भी विघ्न बाधा विशेष के पूर्ण सहूलियत से सभी साधनों विशेषों को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करते हुए निश्चित रूप से । “वडिये हथ दलाल के मुस्फी एह करेई” अर्थात् “प्रभु” के दुर्लभ “दरबारे खास” से ऐसे दुर्लभ पातशाहों तथा ठगों विशेषों के लिये “दलाल” नाम का दुर्लभ तगमा विशेष उपलब्ध किया गया है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से मुआवजे विशेष के रूप में हाथ पूरी तरह से कलम विशेष कर दिये जायें ताकी केवल दृष्टि मारकर के ही सभी दुर्लभ-2 कार्य विशेष सम्पन्न विशेष किये जा सके अनन्त काल तक के लिये घोर-2 नकों विशेषों को रेशन विशेष करते हुए आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । दरअसल मुस्फी यानी के नाम तथा शब्द का व्यवसाय अथवा सौदा विशेष करने वालों के लिये उनके द्वारा प्रत्यक्ष की गई दुर्लभ-2 करतूतों विशेषों के सामने ये “दलाल” अथवा “घोर नर्क” बहुत छोटी सी ही उपलब्धी विशेष है परन्तु क्या किया जाये कभी-कभी तंगी विशेष में भी गुजारा विशेष तो करना ही पड़ता है यकीनी तौर पर । दरअसल ये सभी दुर्लभ-2 व्यवसाय विशेष करवाती है “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” । किस तरीके से ? “मन” के जरिये । यानी के मन इन्हीं “शैतानी ताकतों” का दुर्लभ आवश्यक अंग विशेष ही है । प्रत्येक आत्मा को शरीर से कार्य

विशेष लेने का दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष । इस अंग विशेष मन के अभाव में आप किसी भी यन्त्र से उपलब्ध शरीर से कुछ भी कार्य सम्पन्न करवाने में केवल असमर्थ ही साबित होंगे प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जिस तरह से आत्मा परमात्मा का दुर्लभ आवश्यक अंग विशेष है तथा निरंतर अपने मूल विशेष से ताकत विशेष ग्रहण करता हुआ प्रत्येक काल में पूर्ण स्थिर है निश्चित रूप से उस तरह से यह मन भी “शैतानी ताकतों” का अंश निरंतर अपने मूल विशेष से जुड़ा ही रहता है तथा लगातार ऐसी प्रेरणाएँ विशेष-2 अपने आधार “शैतानी ताकतों” से प्राप्त करता रहता है जो केवल “शैतानी ताकतों” के “मकसद” विशेष को समर्थ बनाने में पूरी तरह से स्वास्थ्य वर्धक है निश्चित रूप से । “शैतानी ताकतों” का केवल एक ही “मकसद” विशेष है कि प्रत्येक आत्मा केवल इन्हीं तीनों मुल्कों को रोशन विशेष करे प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । शेष सभी कार्य विशेष केवल इसी आवश्यक मकसद विशेष को सफल विशेष बनाने के लिये ही केवल प्रस्तुत किये जाते हैं यकीनी तौर पर । आत्मा को रोकने विशेष के लिये तरह-2 के स्वाद तथा पदार्थ विशेष-2 प्रस्तुत किये जाते हैं विभिन्न प्रकार के नये-2 रूपों विशेषों के जरिये ताकि आत्मा इन्हें भोगे तथा फिर इन भोगों की कीमत विशेष चुकाये आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । जो स्वाद अथवा पदार्थ विशेष आत्मा को अधिक अच्छा लगता है उसकी आत्मा

फिर बार-2 मांग विशेष करती है फिर उपलब्ध हो जाने पर उस स्वाद अथवा पदार्थ विशेष को सदा के लिये स्थिर विशेष रखने हेतु निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष हो जाती है प्रत्येक जायज अथवा नाजायज तरीको का प्रयोग विशेष करते हुये दिन रात केवल इन्हीं धंधों विशेषों में स्वयं को पूरी तरह से मिटाने विशेष लगती है। भूल जाती है कि यहां कुछ भी स्थिर रखा ही नहीं जा सकता । प्रत्यक्ष होते ही प्रत्येक उपलब्धी विशेष अपने मूल विशेष में समाने लगती है निरन्तर बिना रुके। लेकिन क्रिया के बारीक होने के कारण प्रत्यक्ष रूप से दिखाई ही नहीं देती। अविनाशी केवल दुर्लभ आवश्यक ^{६६}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष तथा उसका आवश्यक अंश विशेष आत्मा और शैतानी ताकतें ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । ^{६६}शैतानी ताकतें^{९९} भी केवल आत्मायें विशेष ही है निश्चित रूप से । केवल इन के प्रस्तुतीकरण में फर्क है इनका बीच का दायरा स्याह काला है और सुर में जैसा तथा बाहरी आवरण घोर प्रकाशित है सफेद रंग में हल्का सा आसमानी रंग लिये हुये । आत्मा का प्रकाश केवल सफेद में हल्का सा आसमानी रंग लिये हुए है । दोनों एक से अत्यन्त बारीक कण जैसे ही है जिन्हें किसी भी यन्न विशेष के देखना केवल असम्भव है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो । आत्मा तथा शैतानी ताकतें दोनों एक दूसरे का कुछ भी अहित करने में केवल असमर्थ ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर अविनाशी सत्ता का अंश विशेष अविनाशी होने

के कारण निश्चित रूप से । नाश केवल आवरण यानी के शरीर विशेष का ही होता है फिर दुर्लभ मुक्त आत्माओं विशेषों के लिये इन अधूरे पदार्थों विशेषों इत्यादी शरीरों विशेषों से क्या अर्थ अथवा प्रयोजन विशेष हो सकता है निश्चित रूप से ? लेकिन पूरा खेल घोर नियमों विशेषों में ही चलता है लगातार बिना रुके । दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष का प्रत्येक कण विशेष पर भरपूर अधिकार विशेष रहता है कोई भी बिना नियम विशेष के हिलने में भी केवल असमर्थ ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । दोनों पक्ष यानी के “शैतानी ताकतें” तथा आत्मायें बिना किसी भी आवरण के प्रत्यक्ष एक दूसरे के सामने डटती है अपनी-2 विशेष ताकत दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष को लिये हुये तथा एक दूसरे को हटाती रहती है उपलब्धियों विशेषों पर अपना अधिकार विशेष स्थापित करते हुये अपने “मकसद” विशेष को पूर्ण सिद्ध विशेष करने के लिये निरंतर बिना रुके लगातार । ये दुर्लभ आवश्यक लड़ाई विशेष अपने स्वाभाविक स्वरूप यानी के समर्था विशेष में प्रत्यक्ष होती है जिसमें अहित होने का कोई सवाल ही नहीं है दोनों पक्षों विशेषों को । साधारण आत्मा जो यहां इन मुल्कों में बंदी है उसे दांव विशेष पर लगाया जाता है । फैसला केवल साधारण आत्मा का अपना विशेष ही रहता है कि वो किस पक्ष को पसंद करती है । जबरदस्ती अथवा चालाकी विशेष का कोई सवाल ही नहीं है दोनों पक्ष भरपूर ताकत विशेष

लिये हुए प्रत्यक्ष ही है निश्चित रूप से । यदि साधारण आत्मा उपलब्ध विशेष की कामना विशेष प्रस्तुत करती है तो अपने आप ही शैतानी पक्ष विशेष में अपना आवश्यक फैसला विशेष सुना देती है आवश्यक रूप से । फिर उसकी और तो कोई भी नजर विशेष उठा कर देख भी नहीं सकता फिर छुड़ाने विशेष का कौन सा प्रश्न? अपने इसी पक्ष को सुदृढ़ बनाने के लिये निरंतर “**शैतानी ताकतें**” कुछ न कुछ पहले से बढ़ कर प्रस्तुत विशेष करती ही रहती हैं प्रत्येक आत्मा के समक्ष केवल उसे लुभाने विशेष के हेतु ही निश्चित रूप से । यह कार्य विशेष भी साधारण आत्माओं विशेषों के जरिये सम्पन्न विशेष किया जाता है यह देख कर कि कौन-2 सी आत्मायें विशेष अधिक दुर्लभ आवश्यक परमार्थी विशेष है निश्चित रूप से । उनकी दुर्लभ आवश्यक क्षमता विशेष को इन अधूरे कार्यों विशेषों पर खर्च विशेष करवा कर आत्मा के अपने निजी कल्याण विशेष के कार्य को सदा के लिये भुला विशेष दिया जाता है यकीनी तौर पर । यह सभी कार्य विशेष केवल मानव शरीर को पूरी तरह से हजम विशेष करने के लिये ही प्रत्यक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं विशेष तौर पर । केवल इसी मानव शरीर में ही आत्मा अपने आवश्यक पुरुषार्थ विशेष को प्रत्यक्ष कर सकती है विशेष सभी जूने अथवा शरीर विशेष केवल इसी मानव शरीर के दुर्लभ आवश्यक पुरुषार्थ विशेष का आवश्यक फल विशेष ही है निश्चित रूप से । आत्मा की प्रत्येक वासना अवश्य किसी न किसी

शरीर अथवा पिंजरे या जून विशेष से ही जुड़ी हुई है पक्की तरह से निश्चित रूप से गांठ बांध लो । प्रत्येक जून विशेष को केवल आत्मा की दुर्लभ-2 वासनाओं विशेषों को ही पूरी तरह से मिटाने विशेष के लिये ही प्रत्यक्ष प्रस्तुत किया गया है विशेष तौर पर । जब तक आत्मा की वासना विशेष पूरी तरह से मिट नहीं जाती उसे आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से बार-2 उसी जून विशेष में ही जन्मना और मरना पड़ता है दीर्घ काल विशेष तक के लिये निश्चित रूप से । बिना वासना विशेष के किसी भी पिंजरे अथवा जून या शरीर विशेष को रोशन किया ही नहीं जा सकता आत्मा द्वारा निश्चित रूप से रचना ही “प्रभु” की ऐसी रची हुई है । फिर कौन सा सुपना विशेष मीठा सा संजोये बैठे हो कि कोई ले जायेगा विचारो कैसे ले जायेगा ? एक भी छोटी सी वासना विशेष आपको किसी भी पिंजरे विशेष से हिलने भी नहीं देगी निश्चित रूप से गांठ बांध जो चतुर विद्वानों विशेषों । यही सृष्टि का न टलने वाला आवश्यक घोर सत्य विशेष ही है कड़वा सा प्रत्येक काल में । फिर कोई आत्मा विशेष यही यहां से जाना ही विशेष चाहती है तो आज तक का अपना अनन्त जन्मों का हिसाब विशेष चुकता कर देवे और चली जाये बड़े शौंक से अपने निज घर विशेष में किसने रोक विशेष रखा है ? फिर कोई अगर ले जाना ही विशेष चाहता है । तो चुका देवे इस अनन्त भयानक-2 दुर्लभ-2 कर्मों विशेषों का जुर्माना विशेष अपनी ही चमड़ी विशेष उतरवा कर

आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर नियमानुसार । फिर चमड़ी भी वही आत्मा उतरवायेगी जिसके पास हाड-मांस का चमड़ा यानी के दुर्लभ आवश्यक मानव शरीर विशेष होगा फालतू में । जिसके पास ये दुर्लभ आवश्यक शरीर विशेष ही नहीं है तो किस कल्पना विशेष से हिसाब विशेष चुकायेगी किसी भी आत्मा विशेष का ? बक्षने वाला केवल एक “अकाल पुरख परमात्मा” ही है आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर प्रत्येक काल में इकलौता मालिक विशेष यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो पातशाहो दुर्लभों। फिर बक्षा भी केवल वही जाता है “प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक “दरबारे खास” से जो आत्मा विशेष स्वयं को बक्षने योग्य साबित विशेष करती है व्यवहारिक रूप से निरंतर प्रमाणिक ढंग विशेष से प्रत्येक छोटे से छोटे अपराध विशेष से भी पूरी तरह से तौबा विशेष करके सदा के लिये तथा अपना पिछला हिसाब विशेष अनंत जन्मों विशेषो का पूर्ण ईमानदारी विशेष से पूर्ण चुकाती विशेष है निरंतर केवल अपनी प्यारी सी खाल विशेष को खुरचवाते विशेष हुए लगातार तड़पती विशेष रहती है केवल अपने मूल विशेष तक पहुँचने विशेष के लिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “मन” शैतानी ताकतों द्वारा अग्नी तत्व की प्रधानता विशेष लिये हुए प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया गया है । यह भी दुर्लभ सूक्ष्म प्रकाश विशेष का ही अंश विशेष है निश्चित रूप से। यह मन रुपी

आवश्यक प्रकाश विशेष महाभूत विशेष की तरह से आत्मा के प्रकाश विशेष से चिपका हुआ है । इस प्रकाश की सत्ता अलग से पहचानी ही नहीं जा सकती । यह मन-आत्मा का ही आवश्यक दुर्लभ अंश विशेष बना हुआ है निश्चित रूप से । इसमें एक ही कमी है कि इसके पास कार्य करने के लिये अपनी कोई भी ताकत विशेष नहीं है यकीनी तौर पर । यह केवल आत्मा के बल विशेष से ही कार्य करने में पूर्ण समर्थ विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इसीलिये प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य विशेष का भी पूर्ण भुगतान विशेष केवल आत्मा विशेष को ही देना पड़ता है अनन्त काल विशेष के बाद भी विद ईन्ट्रैस्ट पूरा का पूरा निश्चित रूप से । इसीलिये शैतानी ताकतें मन के जरिये आत्मा की ताकत विशेष को ऐसे कार्यों विशेषों पर खर्च करवाती रहती है जिन के बदले में आत्मा विशेष भुगतान विशेष देती हुई इन्हीं के मुल्कों विशेषों को रोशन करने के लिये अवश्य मजबूर बनी रहे आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । प्रत्येक कार्य विशेष का फैसला करने के लिये आत्मा को बुद्धि दी जाती है विशेष रूप से । कुछ भी करने से पहले खूब सोच-विचार करना केवल आत्मा के अपने लिये ही निश्चित कल्याणकारी विशेष है क्योंकि प्रत्येक कार्य विशेष से उपलब्ध होने वाली स्थिति विशेष को केवल आत्मा विशेष ने ही भुगतना है निश्चित रूप से पूरा का पूरा प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । उपलब्ध होने वाले फल विशेष को आंशिक

रूप से भी बदलने में अनेक दुर्लभ-2 प्रयत्नों अथवा सिफारिशों विशेषो- 2 के बावजूद भी आत्मा विशेष केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही साबित होती है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । जितना भी कर्म विशेष का फल विशेष भुगतने में आत्मा आनाकानी विशेष करेगी चालाकी विशेष- 2 अपनायेगी देर करेगी उतना ही अधिक जुर्माना विशेष चालाकी तथा देर करने का भुगतान विशेष चुकाने के लिये केवल समबन्धित आत्मा विशेष को ही अवश्य मजबूर विशेष होना ही पड़ेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर ।

“**खून के आंसू**” विशेष रोते हुए भी निश्चित रूप से पूरा का पूरा भुगतान विशेष अवश्य देना ही पड़ेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अपनी समस्त छोटी से छोटी कारस्तानियों विशेषो का भी यकीनी तौर पर । इसीलिये कहा है कि मनमुखी आत्मा केवल “**मनमुख दुख का खेत है**” दुखों का भण्डार विशेष एकत्र करने में ही निरंतर दुर्लभ व्यस्त है निश्चित रूप से “**खेत**” का भाव है कि जैसे एक छोटा सा बीज बोने पर बहुत से फल विशेष उपलब्ध होते हैं “**बरसों**” उसी तरह से आत्मा का एक छोटा सा भी खोटा कर्म विशेष बहुत लम्बे समय तक घौर-2 भयानक-2 दुखों विशेषो को भुगतने का निश्चित प्रमाण पत्र विशेष ही है यकीनी तौर पर । “**दुख बीजे दुख खाई**” अर्थात् बीजोगे तो अक्क-धतूरे और फिर मीठे रस से भरे फलों विशेषो के टोकरे

कैसे उपलब्ध हो जायेंगे ? केवल दृष्टि मार कर भयानक-2 सूत्रों विशेषों को झूलों विशेषों में बदलने वाला धंधा विशेष एक बहुत ही मीठा तथा प्यारा सा भयानक धोखा विशेष ही है “शैतानी ताकतों” द्वारा प्रत्यक्ष किया हुआ निश्चित रूप से । सभी मंदिरों-गुरुद्वारों-गिरजा घरों-मस्जिदों तथा डेरों स्थानों विशेषों इत्यादि में केवल यही मीठा सा भयानक धोखा विशेष देने में “शैतानी ताकतें” ही केवल दुर्लभ व्यस्त विशेष हैं पूरी तरह से “महामारी” विशेष के रूप में फैली हुई निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । बड़े-2 पातशाह विशेष- 2 खुद ही नहीं जानते कि वे किस के हाथों की कठपुतली विशेष बने हुए हैं ? सभी प्रेरणाओं विशेषों को ये प्रभु की प्रसन्नता समझे बैठे हैं असल में “शैतानी ताकतों” की प्रेरणाएँ विशेष इतनी सशक्त तथा ईमानदारी विशेष से समर्थ-साधन समपन्न विशेष है कि “धोखा” विशेष आवश्यक रूप से निश्चित ही है केवल एक ही दुर्लभ आत्मा विशेष इस भ्रम विशेष को पूरी तरह से मिटाने में समर्थ विशेष है जो केवल पल-2 मरती है दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष के लिये निश्चित रूप से तभी “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” से कुछ यानी के बहुत थोड़े से ही “भ्रम” विशेष का निवारण विशेष कर पाती है तड़प-2 कर मरती विशेष हुई दीर्घकाल के बाद निश्चित रूप से । “मर-मर जीवे तां किछ पाऐ नानक नाम वखाणै” ये दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” किसी भी

आत्मा को न तो ट्रांसफर होती है और ना ही बिना तड़प-तड़प कर मरे प्रत्यक्ष उपलब्ध ही होती है आंशिक रूप से भी केवल निश्चित नहीं विशेष यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । केवल मुर्दों तथा मुर्दों के स्थानों विशेषो अर्थात् कब्रिस्तानों विशेषो का प्रबन्ध विशेष ही ट्रांसफर विशेष किया जाता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । प्रत्येक आत्मा विशेष अपनी दुर्लभ आवश्यक तड़प विशेष को अपने साथ ही गांठ बांध कर ले जाती है रास्ते खर्च विशेष के रूप में । बाद में तो केवल “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” ही नाचती तथा नचाती है अनंत काल तक के लिये “ताण्डव नृत्य” विशेष में ही पूर्ण प्रवीण विशेष बनाने हेतू अनन्त और दुर्लभ-2 आत्माओं विशेषो को भी निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो प्रत्येक काल विशेष में भी यकीनी तौर पर । अगर विशेष मीठा सा खाने का शौंक विशेष रखता है तो केवल नाम अर्थात् केवल दुर्लभ प्रकाश विशेष को ही बीज “इक नाम बोवो” संसार बीजने पर तो केवल दुख ही दुख भयानक रूप से उपलब्ध होगा। आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से विशेष तौर पर केवल तुझे ही पूर्ण हज्म विशेष करने हेतू ही निश्चित रूप से । “दुख विचि जमै दुख मरे हउमै करत विहाई” अर्थात् “हउमै” यानी के केवल शैतानी ताकतों के नुमाइंदे मन अथवा अहंकार विशेष में “करत विहाई” यानी के किया गया प्रत्येक कार्य विशेष ही है प्रत्येक काल में आत्मा विशेष के लिये

जो कि केवल भयानक-2 दुखों विशेषो का आवश्यक भण्डार विशेष ही है निश्चित रूप से जन्म-मरन यकीनी तौर पर । केवल एक मनुष्य के जन्म में ही आत्मा के द्वारा भुगतते हुऐ घौर भयानक नर्क रूपी गर्म विशेष के दुखों को कैसे ब्यान किया जा सकता है लफजों के जरिये जब आत्मा को जठर अग्नि के भयानक तड़पा देने वाले तपश रूपी तेज में तपने के लिये आवश्यक रूप से मजबूर विशेष होना ही पड़ता है निश्चित रूप से । फिर जिंदगी भर के दुखों को कैसे ब्यान किया जाये जब आत्मा तपती है वासनाओं की भयानक अग्नि विशेष में दिन-रात लगातार बिना रुके केवल जलती विशेष हुई निरंतर हा-हा विशेष करती हुई निश्चित रूप से। फिर इन्हीं वासनाओं विशेषो के कारण उसे मरना भी भयानक मौत ही पड़ता है यकीनी तौर पर । जब मोह विशेष में पूरी तरह से डूबी आत्मा विशेष शरीर विशेष से अलग होना पसंद ही नहीं करती तब इसे बहुत भयानक-2 मार विशेष खानी ही पड़ती है आवश्यक रूप से सैंकड़ों बिच्छु अगर इकट्ठे डंक मारे और फिर जो भयानक दर्द आत्मा को भुगतना पड़ेगा उससे भी हजारों गुना अधिक भयानक घौर तड़पा देने वाला दर्द विशेष आत्मा को बर्दाश्त करने के लिये अवश्य मजबूर होना ही पड़ता है जब केवल उसे शरीर से अलग विशेष किया जाता है निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो केवल वहीं आत्मा विशेष इस भयानक दर्द विशेष से बचती है जो इस मरने

से पहले रोज प्रत्येक पल थोड़ा -थोड़ा सा मरने विशेष का अभ्यास विशेष करती है निरंतर पूरे मरने विशेष तक निश्चित रूप से ।
“ऐसी मरनी जो मरे फिर बहुर ना मरने होई” शेष सभी तो केवल जी रहे हैं स्वयं को घौर भयानक सा दुखी विशेष बनाने के हेतू ही निश्चित रूप से ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष ही फिर ब्यान देती है कि
“जित मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द” दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष में ही पल-पल मरने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष ही केवल दुर्लभ पूर्ण परमानन्द विशेष को प्राप्त होती है आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । “मरने ही ते पाईये पूर्ण परमानन्द” जब केवल एक ही जन्म-मरन और वो भी मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष के भयानक-2 दुखों विशेषो को ब्यान नहीं किया जा सकता तो फिर अनन्त जन्म मानव के अनन्त दूसरी जूनों विशेषो सहित के जन्म और मरन अनन्त काल के घौर-2 भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषो को कैसे ब्यान किया जाये किस साधन विशेष से ? “आवण जाण न सुझई अंधा-अंध कमाई” अर्थात् आत्मा “आवण जाण” यानी के अनन्त काल के अनंत जन्म मरन रूपी घौर भयानक-2 दुखों विशेषो को “न सुझई” यानी के पूरी तरह से भुला विशेष देती है और मन जो केवल शैतानी ताकतों का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष ही है को सामने रख कर जो भी कर्म विशेष करती है उसे केवल अंधे का किया हुआ कार्य विशेष ही स्थापित किया जाता हैं क्योंकि

मनमुखी आत्मा विशेष का प्रत्येक छोटे से छोटा कार्य विशेष भी आत्मा को केवल इसी भयानक अंधे कुएं विशेष में ही अनन्त काल तक के लिये घोर दुखी विशेष होने के वास्ते ही पूर्ण समर्थ विशेष बनाता है निश्चित रूप से । आपकी जिन्दगी भर की बढ़िया-2 उपलब्धियों महान का क्या फायदा जो आत्मा को अन्त में केवल अनन्त घोर दुखों का भयानक सा बोझा विशेष ढोने के लिये मजबूर विशेष होना पड़े आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । फिर जरा उनके घोर-2 दुखों विशेषो पर भी विचार विशेष करो जो प्रत्येक कर्म विशेष को केवल आंख बंद कर अथवा अंधे विशेष हो कर के ही कमाने में दुर्लभ व्यस्त है पूरी तरह से जिन्दगी भर । कहीं आप भी आंख विशेष बंद किये हुऐ ही दुर्लभ व्यस्त विशेष तो नहीं है विशेष भगवन शिव की तरह से “जो देवे तिसै न जाणई” अर्थात् जिस दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ने सब कुछ प्रत्यक्ष उपलब्ध किया है उसे ही पूरी तरह से भुला कर बैठा है विशेष रूप से जो केवल परम सत्ता विशेष से रोशन विशेष है उसे ही प्रभु का दुर्लभ बाप विशेष ही स्थापित विशेष कर ढोल पीटने-पूजा करने में दिन-रात दुर्लभ व्यस्त विशेष है अंधा प्राणी विशेष अनंत ब्रह्म-बिशन-महेश दुर्लभ-2 पातशाह विशेष सभी मिल कर के भी अपनी महान-2 उपलब्धियों विशेषो सहित उस दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को एक पल के लिये भी

प्रत्यक्ष करने में केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही हैं प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर एक छुद्र से कण विशेष को धारण करना तो दूर रहा प्रत्यक्ष करना भी इन सभी नकली परमात्माओं विशेषों के लिये केवल असंभव लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनाना है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर क्योंकि इन सभी दुर्लभों परमात्माओं विशेषों की उपस्थिति अथवा “**मैं विशेष**” केवल दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध है दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष के अभाव में किस कल्पना से इन नकली परमात्माओं विशेषों को विचार में भी लाओगे ? फिर जो नौ महीने गर्भ में आ गया वो केवल एक जून ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में कितना भी महान-2 विशेष-2 हो जाने के बावजूद भी आत्मा विशेष केवल आत्मा होने तक ही सीमित है अल्पज्ञ-अधूरी निश्चित रूप से । जो केवल “**परमात्मा**” द्वारा प्रत्यक्ष की गई है जिसे जब चाहे प्रभु अपने में मिला लेवे सदा के वास्ते । अपने आप से केवल एक दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष ही रोशन विशेष है निरंतर शेष सभी केवल उस दुर्लभ आवश्यक “**परम चेतन सत्ता**” विशेष से ही प्रकाशित है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । जो किसी दूसरे से रोशन हो करके अपनी अहमियत विशेष को स्थापित विशेष करे अर्थात् अपनी पूजा ध्यान इत्यादि करवाये परमात्मा का दुर्लभ बाप विशेष ही स्थापित करे करवाये उसके

लिये तो “कंजर” विशेष लफज ही बहुत छोटा सा अथवा तंग विशेष ही है जिस में इतने बड़े-2 नकली परमात्मा विशेष भला कैसे पूरी तरह से समाने में पूर्ण समर्थ विशेष हो सकते हैं ? भाई कभी-2 तंगी विशेष में भी गुजारा विशेष करना ही पड़ता है ऐसी आत्मा विशेष के लिए “रंडी” विशेष लफज भी बहुत तंग विशेष अथवा छोटा सा ही है जो एक “अकाल पुरख परमात्मा” को छोड़ कर ओर-2 दुर्लभ-2 कंजरों विशेषों का ध्यान-जप-पूजा इत्यादि करने में ही दिन-रात दुर्लभ पूर्ण व्यस्त विशेष ही है निश्चित रूप से। इसीलिये “प्रभु” को “अजूनी सैभ” कहा है अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष वे कभी भी जूनों विशेषों में नहीं आती तथा उसकी दुर्लभ आवश्यक सत्ता विशेष केवल अपने आप से ही रोशन विशेष है। दुनिया भर में पूजे जाने वाले ईसा-मुहम्मद-राम-कृष्ण तथा दुर्लभ-2 महाराज पातशाह इत्यादि विशेष-2 सभी केवल दुर्लभ आवश्यक शैतानी पक्ष विशेष के दुर्लभ-2 सूक्ष्म कारण लोकों विशेषों को प्राप्त दुर्लभ-2 आवश्यक आत्मा विशेष ही है निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । क्या “शैतानी ताकतों” को संत अथवा तपस्वी विशेष बनाना नहीं आता या दुर्लभ वाणी रूपी सत्संग विशेष-2 करने नहीं आते ? यदि धुर विशेष का केवल एक रूप विशेष प्रत्यक्ष होता है तो “शैतानी ताकतें” पूरे नौ रूप विशेष सज धज तथा भरपूर चमक विशेष के साथ प्रत्यक्ष करती हैं केवल धुर के एक

रूप विशेष को पूरी तरह से फेल विशेष करने के लिये अथवा नकली विशेष साबित करने हेतु निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । आपके दुर्लभ-2 नकली पातशाह विशेष खुद भी नहीं जानते कि कौन सा सत्संग विशेष हो रहा है और कौन विशेष-2 करवा रहा है ? प्रत्येक विद्या विशेष केवल शैतानी इल्म विशेष ही है निश्चित रूप से फिर उनके पास लफ्जों विशेषो की कमी है या अर्थ विशेषो की बाणी विशेष को प्रत्यक्ष करने के लिए सभी “शैतानी ताकतों” के ही दुर्लभ नुमायदें विशेष-2 ही बैठे हैं निश्चित रूप से । रूप रहित सत्ता विशेष का सूक्ष्म गुप्त भेद किसी के पास उपलब्ध ही नहीं है यकीनी तौर पर। यह केवल “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष ही है कि आप को जानने को कुछ तो उपलब्ध विशेष हुआ है “प्रभु” के दरबारे खास से यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । पूरा खेल असल में नकल विशेष की तरह से प्रस्तुत किया गया है बहुत चालाकी तथा पूरी हिफाजत विशेष से ताकी आत्मा का ख्याल असल की तरफ सुपने में भी कभी भूले से भी जाये ही नहीं निश्चित रूप से । “दिते को लिपटाई” अर्थात् आत्मा को अपने मूल विशेष से भुलाने का निश्चित आवश्यक साधन विशेष है दुर्लभ “प्रभु” की दुर्लभ-2 उपलब्धियां विशेष-2 निश्चित रूप से प्रत्येक काल में जैसे “चतुर सिआणी मछली” विशेष को फंसाने के लिये कुछ लोभ सामने रखा जाता है मछली का मन पसंद मांस का टुकड़ा विशेष चालाक मछली ना ना करते

हुए भी लोभ विशेष को छोड़ ही नहीं पाती और उस टुकड़े को मुंह में डाल ही लेती है जिसके अंदर तीखा सा काटा विशेष जहर के रूप में छुपा हुआ होता है जो मछली रूपी आत्मा को सदा के लिये तड़पने तथा टुकड़े-2 हो कर के गर्म-2 तेल विशेष में जलने विशेष के लिये अवश्य मजबूर विशेष कर ही देता है आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से इसी तरह से आत्मा रूपी सुंदर-2 चतुर तथा सिआणी मछली विशेषों को फंसाने के लिये भी शिकारी विशेष “शैतानी ताकतें” तरह-2 की उपलब्धियों विशेषों को प्रत्यक्ष सामने रखती हैं जिन्हें अपनाने का केवल एक ही अर्थ विशेष है निश्चित रूप से आत्मा रूपी सुंदर चतुर मछली विशेष के लिये स्वयं को अपने ही हाथों विशेषों द्वारा “आत्मिक मौत” मारना निश्चित रूप से । “फरीदा एह विश गंदला धरया खण्ड लिवाण” अर्थात् संसार रूपी भयानक मीठा जहर विशेष मोह-ममता रूप खण्ड विशेष में डुबों कर के चाटने विशेष के लिये सुंदर आत्मा रूपी मछली विशेष के सामने धरा गया है “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” द्वारा विशेष रूप से जैसे नकली गंदल तथा साग विशेष जहर की तरह से कड़वा विशेष होता है उसी तरह से सभी नजर आने वाले मीठे सुख विशेष भी केवल झूठे तथा भयानक जहर विशेष से बुझे हुए तीर विशेष ही हैं निश्चित रूप से जो सुखी करना आत्मा को तो एक तरफ रहा केवल “आत्मिक मौत” मरने का दुर्लभ साधन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जिस

मांस के टुकड़े विशेष की मांग करते हो केवल जिंदगी भर दुर्लभ-
2 जिम्मेदारियों का बोझा विशेष देने का (पराये खोते की तरह
से) निश्चित प्रमाण पत्र विशेष ही है अपने ही हाथों विशेषों द्वारा
लिख कर के अपने ही गले विशेष में बांधा हुआ जिसके दुर्लभ
बोझ विशेष तले स्वयं को पूरी तरह से केवल डुबो विशेष देने में
समर्थ दुर्लभ साधन विशेष के रूप में यकीनी तौर पर सुन्दर
चालाक सिआणी दुर्लभ आत्मा रूपी मछली विशेष का महान
आविष्कार विशेष जिसे बार-2 देखने-सुनने चाहने को ही
ललचाती रहती है बेचारी चतुर सिआणी मछली विशेष जिंदगी भर
एक मीठी सी बीमारी विशेष से फेरे विशेष ले ले शेष सभी दुर्लभ-
2 महामारियां विशेष-2 अपने आप ही तेरे दुर्लभ घर विशेष में
अवश्य उत्पन्न विशेष हो ही जायेगी जो तेरा जिंदगी भर का अनंत
जन्मों का फेरा विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध करने का निश्चित साधन
विशेष ही साबित होगी यकीनी तौर पर चतुर सिआणी दुर्लभ सुंदरी
मछली रूपी आत्मा विशेष। इसी तरह से संसार की प्रत्येक
उपलब्धी विशेष को दुर्लभ आवश्यक प्रभु प्रेरणा विशेष में केवल
“गुरु” की संज्ञा विशेष से ही बयान किया गया है। “सूक्ष्म अदृश्य
शैतानी ताकतें” निरंतर इस कूड़े विशेष को ही प्रत्यक्ष करती रहती
हैं आत्मा को लुभाने हेतु। “कूड़ राजा” अर्थात् राज सत्ता विशेष
आज बिना ताज के बादशाह सभी सभा सदस्य विशेष-2 इसी
दुर्लभ कूड़े विशेष को एकत्र विशेष करने में ही निरंतर अपने दुर्लभ

आवश्यक कीमती मनुष्य के जन्म विशेष को पूरी तरह डुबो विशेष रहे हैं । बिना तप विशेष के ये राज सत्ता विशेष किसी को कैसे उपलब्ध हो सकती है? पीछे इन दुर्लभ आत्माओं विशेषो ने तप विशेष घोर कमाया हुआ है तभी कुछ सत्ता विशेष उपलब्ध हुई है निश्चित रूप से लेकिन समझा क्या जा रहा है कि केवल चतुराई या छल-कपट विशेष से ही सब कुछ उपलब्ध कर लिया गया है तथा इसी चालाकी पाप इत्यादी को सब कुछ प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने का दुर्लभ साधन विशेष जान कर निरंतर इस दुर्लभ पाप विशेष को बढ़ाने में ही दुर्लभ व्यस्त है दिन रात लगातार पूरी दुनिया के दुर्लभ महान सभा सदस्य विशेष-2 । “तप ते राज” निश्चित है प्रत्येक काल में फिर “राज ते नरक” भी प्रमाणित ही हो रहा है प्रत्यक्ष रूप से यही “शैतानी ताकतों” का फंदा विशेष है । राज सत्ता विशेष उपलब्ध करवा कर तप विशेष से रोको आत्मा विशेष को और फिर राज सत्ता में ऐसे दुर्लभ-2 कर्म काण्ड विशेष करवा लो होमै विशेष में आत्मा विशेष से कि “नरक घोर” नाम के दुर्लभ-2 मुल्क विशेष रोशन करने पड़े आत्मा विशेष को आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अनंत काल तक के लिये घोर भयानक-2 दुख विशेष-2 भुगतने के लिये निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो ऐसी महान दुर्लभ उपलब्धी विशेष “घोर नरकों” विशेषो के आगे “कूड़” लफज विशेष भला क्या अर्थ विशेष रखता है? “कूड़ प्रजा” अर्थात् संतान दुर्लभ

विशेष संतान केवल आत्मा विशेष का पिछले जन्मों विशेषो का बहुत बड़ा सा भुगतान विशेष पूरी ईमानदारी विशेष से चुकाने का एक दुर्लभ आवश्यक मीठा सा आवरण विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से “शैतानी ताकतों” द्वारा प्रत्यक्ष किया हुआ बहुत रसदार मीठा सा “धोखा” विशेष यकीनी तौर पर । आज राम का नानक इत्यादी का वंश विशेष कहाँ है जो अपना दुर्लभ वंश विशेष स्थापित करने में दुर्लभ व्यस्त हो निरंतर केवल अपनी दुर्लभ हस्ती मनुष्य के जन्म विशेष को पूरी तरह से इस वंश नाम के अंधे कुंए विशेष में डुबोते हुए निश्चित रूप से परमार्थी विशेष तो केवल बिना अर्थ ही स्वयं को इस अंधे कुंए विशेष में डुबोता है जैसे जग्गा जी दादू दयाल जी के दुर्लभ शिष्य विशेष थे तप विशेष से वचन सिद्धि प्रत्यक्ष थी अपने “गुरु” भाई चैबे जी के यहां आना जाना था उनके कोई संतान नहीं थी पत्नी सती जब भी जग्गा जी विराजते खूब आव भगत करती और निस्संतान होने का दुखड़ा रीती । एक बार आंसुओं की हद कर दी जग्गा जी मोहित हो गये और औलाद का दुर्लभ वरदान विशेष दे बैठे दम्पति का कई जन्मों तक संतान का कोई योग नहीं था कर्मों विशेषो अनुसार । अब शैतानी ताकत विशेष वचन सिद्धि के रूप में अपना कार्य सिद्ध कर गई एक ही मीठे से झोंके विशेष में जो वरदान दे बैठे अब वचन कैसे सिद्ध हो ? संतान के लिये आत्मा विशेष कहाँ से लाई जाये ? आखिर जग्गा जी को दुर्लभ आवश्यक अवसर तप विशेष का खोना पड़ा

यानी के तुरंत शरीर छोड़ कर सती के पेट घौर नरक रूपी गर्भ में आना ही पड़ा नियमानुसार । अब पिछले पुरुषार्थ से ज्ञान विशेष उपलब्ध था गर्भ रूपी घौर नर्क में परंतु सिवाय रोते हुऐ भुगतने के ओर कोई उपाय ही नहीं था । आखिर दुनिया में आते ही फिर से सन्यास के लिये तड़पने लगे । उधर दम्पति खींचने लगे संसार विशेष में कुछ समझ न आया । फिर दादू जी ने ही समस्या को निपटाया समझा कर कि उसे रोकना ठीक नहीं है तथा बच्चे को सन्यास की दीक्षा दे कर तप विशेष में सलग्न किया । अब जग्गा ने कान पकड़े और संसार की तरफ न देखने की कसम विशेष खाई और गुफा में ध्यान मग्न हो गये । बारह बरस अभ्यास विशेष में लगे तथा बारह बरस आगे का मार्ग विशेष तय करने में लगे अन्न जल रहित । फिर दुबारा से संसार में लिप्त नहीं हुऐ और वहीं से कलम विशेष के जरिये दुनिया की निस्सारता का सदेश विशेष देते रहे आजीवन दुर्लभ वाणी विशेष के द्वारा तथा बाबा सुन्दर दास कहलाये । अब ये प्रजा नाम का कूड़ा विशेष कैसे परमार्थी विशेष को भी पूरी तरह से हजम विशेष करने का शैतानी साधन विशेष ही है आप विचार कर सकते हों **“कूड़ सभ संसार”** अर्थात् वस्तु पदार्थ तथा संबंध विशेष-2 मिल कर संसार विशेष को प्रत्यक्ष करते हैं । आत्मा जिन्दगी भर इन्हें ही इकटठा विशेष करती हैं फिर स्थिर रखने के लिये निरंतर अपनी दुर्लभ आवश्यक हस्ती विशेष को निरंतर मिटाती विशेष है । जिन्दगी भर इन्हीं

तीनों को भोगते रहे पर नतीजा क्या निकलता है कि आखिर में ये तीनों मिल कर यानी के संसार ही आत्मा को पूरी तरह से भोग विशेष लगा लेता है पूरी तरह से हजम विशेष करते हुऐ निश्चित रूप से । वस्तु पदार्थ तथा सम्बन्ध विशेष तीनों दुर्लभ चमत्कार विशेष “शैतानी ताकतों” के संसार नाम की दुर्लभ भट्टी विशेष में इन्सानी जिंदगी दुर्लभ विशेष को पूरी तरह से जला कर दुर्लभ धुंआ विशेष बनाने में पूर्ण समर्थ ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध ले आत्मा विशेष “सच्ची परमार्थी” फिर शैतानी ताकतों के दुर्लभ आवश्यक हाजमें विशेष के आगे इस मीठे से दुर्लभ धुएँ विशेष को पचाना भला क्या अर्थ विशेष रखता है यकीनी तौर पर ? “कूड़-मंडप कूड़-माड़ी कूड़-बैसणहार” अर्थात् सभी प्रकार के महल रहने के स्थान विशेष-तरह-2 के दुर्लभ साधनों विशेषो को प्रत्यक्ष किये हुऐ आराम अथवा आलस्य विशेष को बढ़ाने का दुर्लभ तरीका विशेष ही है “शैतानी ताकतों” का ताकी आत्मा आवश्यक पुरुषार्थ विशेष से दूर ही रहे निश्चित रूप से । “कूड़-सुइना कूड़-रूपा कूड़-पैहनणहार” अर्थात् सोना तथा रुपया केवल जड़ रूपी साधन विशेष है संसारिक व्यवहार विशेष का । आत्मा ने श्रृंगार करना है केवल दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” रूपी कीमती पदार्थ विशेष का इस आवश्यक कार्य विशेष से विमुख करने के लिये ही शैतानी ताकतें आत्मा को झूठे श्रृंगार विशेष को पहना कर लुभा विशेष लेती हैं निश्चित रूप से ।

इस झूठे शृंगार विशेष के बिना तो कार्य चल ही जाता है परंतु
“प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष के अभाव में आत्मा को
बहुत भयानक दुख विशेष-2 भुगतने के लिये अवश्य मजबूर
विशेष होना ही पड़ता है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से
यकीनी तौर पर । सधना कसाई ने रात जिस स्त्री विशेष के घर
पर बितायी उसने इसी झूठे शृंगार की घोर वासना विशेष में डूब
कर अपने पति का ही सिर विशेष काट लिया और जिन्दा ही
दफन विशेष की गई । सधना ने नाम रूपी दुर्लभ आवश्यक शृंगार
विशेष धारण कर हाथ कलम करवाये अपने पिछले पापों विशेषों
का भुगतान चुकाते हुये तथा उसी आवश्यक नाम (केवल प्रकाश)
के शृंगार रूपी पहनावे विशेष को धारण कर अपने “निज घर”
की राह विशेष ली । “कूड़-काया कूड़-कपड़ कूड़-रूप अपार”
अर्थात् शरीर यानी के रूप केवल एक मुर्दा अथवा कब्र या पिंजरा
विशेष ही है आत्मा को कैद रखने का एक उत्कृष्ट आवश्यक
साधन विशेष “शैतानी ताकतों” द्वारा प्रत्यक्ष किया हुआ निश्चित
रूप से । इस मुर्दे विशेष के रोम-2 से केवल गंद विशेष ही
निकलता है तथा दुर्गन्ध ही उठती रहती है निरंतर बिना रुके
यकीनी तौर पर आत्मा केवल इसी कब्र अथवा मुर्दे विशेष को
सजाने विशेष में डूब रही है पूरी तरह से । इस मुर्दे विशेष को
सूँघने-चाटने में आत्मा को बहुत दुर्लभ प्रसन्नता विशेष उपलब्ध
होती है । फिर इस भयानक कैद विशेष से मुक्त विशेष होने का

दुर्लभ आवश्यक विचार कौन करे ? यह कब्र विशेष निरंतर भुरती ही रहती है चूने की दीवार विशेष की तरह से बिना रुके । इस कब्र विशेष को स्थिर विशेष रखने के समस्त उपाय विशेष केवल व्यर्थ ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में विद्वान (महामूर्ख श्रेणी के) विशेष तो इस मुर्दे विशेष का ध्यान विशेष करते हुऐ ही पूरी तरह से डूबते जा रहे हैं “शैतानी ताकतों” के मुंह विशेष में यकीनी तौर पर । “कूड़ मींआ कूड़ बीवी खप होए खार” अर्थात सभी प्रकार के समबन्ध विशेष-2 केवल कर्मों विशेषों का भुगतान विशेष करने का आवश्यक समर्थ साधन विशेष ही है निश्चित रूप से जिन्हे चुकाते हुऐ आत्मा का उपलब्ध दुर्लभ जन्म विशेष मनुष्य का “खप” यानी के व्यर्थ हो जाता है पूरी तरह से निश्चित रूप से अपने आवश्यक मकसद विशेष को भुलाने के कारण यकीनी तौर पर । “कूड़ कूड़े नेह लगा विसरिआ करतार” अर्थात “शैतानी ताकतों” का केवल एक ही आवश्यक मकसद विशेष है कि आत्मा विशेष अपने दुर्लभ आवश्यक मूल विशेष का ध्यान विशेष न कर सके । इसी आवश्यक मकसद विशेष को पूरी तरह से सफल विशेष बनाने के लिये ही दुर्लभ-2 कूड़े विशेष यानी के वस्तु पदार्थ तथा समबन्धों विशेषों को निरंतर पहले से बढ़ा-चढ़ा कर प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया जाता है ताकी दुर्लभ आत्मा विशेष का ध्यान विशेष इन्हीं में उलझ कर रह जाये जिससे आत्मा को अपनी हस्ती विशेष का ख्याल विशेष ही न रहे । वैसे तो आप कूड़े को वगा

(उठा) कर बाहर फेंकते हो घर से परंतु यहां प्रत्येक कूड़े विशेष को अपने हृदय रूपी महल विशेष में पूरी तरह से सजा कर रखा हुआ है तथा दिन रात केवल इस दुर्गन्ध से भरे हुए कूड़े विशेष को चाटने में ही दुर्लभ व्यस्त हो अपने दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष को पूरी तरह से खोते विशेष हुए निरंतर यकीनी तौर पर ।

“किस नाल कीचे दोस्ती सभ जग चलणहारु” अर्थात् हे आत्मा जरा विचार के तो देख कि तेरा अपना सगा अथवा मित्र विशेष कौन है ? सभी जैसे-जैसे कर्मों विशेषों का भुगतान विशेष होता जाता है लुप्त विशेष होते चले जा रहे हैं आवश्यक रूप से बिना रुके हुए । जो कुछ भी प्रत्यक्ष हो गया वह निरंतर केवल मिटता विशेष ही चला जा रहा है । समस्त रचना विशेष केवल झूठ का पसारा मात्र ही है । कुछ भी स्थिर नहीं है बालू की दीवार की तरह से सब कुछ केवल निरंतर भुरता विशेष ही चला जा रहा है तेरे सभी दुर्लभ-2 सम्बन्ध विशेष केवल पूरी तरह से अधूरे विशेष ही साबित हो रहे हैं यकीनी तौर पर जिन से तू अपनी गहरी दोस्ती विशेष गांठे बैठा है सभी “शैतानी ताकतों” के केवल मिट जाने वाले मीठे से आवश्यक दुर्लभ धोखे विशेष ही है निश्चित रूप से ।

“कूड़-मिठा कूड़-माखिओ कूड़ डोबे पूरु” अर्थात् पूरु यानी के मनुष्य जन्म रूपी दुर्लभ आवश्यक “बेड़ा विशेष” जिस पर सवार हो कर के तूने अपने को इस भयानक भवसागर विशेष से पार उतारना है । अब यदि तूने ठान ही लिया है कि इस दुर्लभ बेड़े

विशेष को पूरी तरह से डुबो विशेष ही दिया जाये तो अवश्य इस दुर्लभ कूड़े विशेष को दिन-रात चाटना विशेष शुरू कर दे जिसे शहद की तरह से मीठा बना कर तेरे आगे प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया गया है “शैतानी ताकतों” द्वारा विशेष रूप से केवल तुझे पूरी तरह से नष्ट विशेष कर देने के लिये ही निश्चित तौर पर प्रत्येक काल में गांठ बांध ले । “नानक वस्त्राणे बेनती तुध बाझ कूड़ों कूड़” अर्थात् नानक नाम की दुर्लभ आत्मा विशेष “शुद्ध रूहानी ज्ञान” विशेष प्रत्यक्ष ब्यान विशेष करती है कि यदि एक दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को आत्मा भुला देवे तो फिर चाटने के लिये केवल दुर्लभ दुर्गन्ध विशेष से लबालब भरा हुआ कूड़ा विशेष ही बचता है जो दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये कभी भी स्वास्थ्यवर्धक हो ही नहीं सकता किसी भी काल में यकीनी तौर पर गांठ बांध ले दुर्लभ “आत्मा विशेष” अर्थात् केवल सुन्दर चतुर सिआणी आत्मा रूपी मछली विशेष को लुभाने के लिये ही ये दुर्लभ मीठा सा (लेकिन जहर से बुझा हुआ कांटा विशेष छुपा कर) आवश्यक कूड़ा विशेष प्रस्तुत किया जाता है “शैतानी ताकतों” द्वारा इस दुर्लभ मछली विशेष को सदा के लिये हजम विशेष कर लेने के वास्ते ही यकीनी तौर पर । “इक राहदे रह गये इक राधी गये उजाड़” अर्थात् जिस भी आत्मा विशेष ने इस नकली गंदल विशेष अथवा कूड़े विशेष को अपनाया वो सदा के लिये इसी मीठे से दुर्लभ धोखे विशेष में ही डूब गये पूरी तरह

से तथा जिस ने इस को ठुकरा विशेष दिया वे आत्मा विशेष सदा के लिये अपने को इस जेल खाने विशेष से मुक्त विशेष करवाने में सफल हो ही गये दुर्लभ प्रभु की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से यकीनी तौर पर । ^{६६}नानक पूरब लिखिआ कमावणा- अवरू न करणा जाई^{७७} अर्थात् पूरब लिखिआ क्या है ? केवल अपने ही हाथों विशेषो से लिखा हुआ पिछले जन्मों विशेषो का निश्चित किया हुआ पुरुषार्थ विशेष दुर्लभ आत्मा विशेष द्वारा यकीनी तौर पर । ^{६६}कमावणा^{७७} यानी के अपनी ही दुर्लभ-2 कारस्तानियों विशेषो का प्रतिफल विशेष जिसे ले करके आत्मा को दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष-2 उपलब्ध हुआ है ^{६६}मानव^{७७} सहित निश्चित रूप से ^{६६}अवरू न करणा जाई^{७७} अर्थात् आत्मा विशेष के अनंत दुर्लभ-2 उपाय विशेष सभी दुर्लभ-2 संबंधो विशेषो तथा सिफारिशों सहित अपने ही कमाये हुये प्रतिफल विशेष को आंशिक रूप से भी बदलने में केवल असमर्थ विशेष ही साबित होंगे प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो दुर्लभों चतुर विद्वानों विशेषो यकीनी तौर पर । यानी के प्रत्येक स्थिति विशेष में भी आत्मा विशेष को भी अपने सभी दुर्लभ-2 छोटे से छोटे कार्यक्रम विशेषो का भी पूरा-पूरा भुगतान विशेष-2 चुकाने के लिये अवश्य मजबूर विशेष होना ही पड़ेगा अनंत काल विशेष के बाद भी निश्चित तौर पर आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से । ^{६६}सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों^{७७} का सबसे मीठा फंदा विशेष है

मान विशेष का । जिसमें पूरी दुनिया के दुर्लभ-दुर्लभ सभाओं विशेषों के महान-2 सदस्य विशेष फंस कर इन्हीं “शैतानी ताकतों” द्वारा पूरी तरह से हजम विशेष किये जा चुके हैं निश्चित रूप से । जो चमक विशेष दिख रही है वह केवल पूरी तरह से बुझने विशेष से पहले क्षमा विशेष कुछ फड़फड़ाती विशेष अवश्य ही है कुछ अधिक रोशनी विशेष बिखेरती हुई यकीनी तौर पर बस इतना सा धोखा विशेष अवश्य उपस्थित ही हैं “शैतानी ताकतों” द्वारा और दूसरी आत्माओं को फंसाने विशेष के लिये एक दुर्लभ मीठा सा आवश्यक चारा विशेष जिसे चरने विशेष के लिये आत्मा विशेष के सामने प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया गया है केवल पूरी तरह से डूबो देने अथवा हजम विशेष करने के हेतू ही निश्चित तौर पर दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष के रूप में प्रत्यक्ष विशेष किया गया है “शैतानी ताकतों” द्वारा “तरने को है दीनता” अर्थात् दुर्लभ आत्मा विशेष के बचने का निश्चित साधन विशेष केवल दीनता विशेष ही है “प्रभु दरबार” विशेष की प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “डूबन को अभिमान” अर्थात् पूरी तरह से डूबने विशेष का निश्चित साधन विशेष केवल मन रूपी भार विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “कंचन तजना सहज है-सहज त्रिया का नेह” अर्थात् धन पदार्थ इत्यादि तथा स्त्री का मोह विशेष भी त्याग विशेष जा सकता है आसानी से आत्मा विशेष के द्वारा । “मान-बढ़ाई-ईरखा-दुर्लभ

तजनी यह^{११} अर्थात् आत्मा विशेष द्वारा मान-सम्मान यानी के लोक लाज तथा ईश्या विशेष को त्याग पाना केवल दुर्लभ विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “माया तजी तो क्या हुआ मान तजा नहीं जाये^{११}” अर्थात् हे आत्मा विशेष केवल कुछ साधनों विशेषो को त्यागने विशेष से तेरा दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष कैसे पूर्ण सम्पन्न विशेष हो सकता है ? क्योंकि असली भार विशेष यानी के मान विशेष को तो तूने अपने साथ ही बांध विशेष रखा है केवल स्वयं को पूरी तरह से डुबो देने हेतू ही निश्चित रूप से । “मान बड़े मुनिवर गले-मान सबन को खाए^{११}” अर्थात् अच्छे-2 महान-2 ऋशि विशेष-2 भी इस मान रूपी भार विशेष के तले सदा के लिये दबा विशेष कर “शैतानी ताकतों^{११}” द्वारा पूरी तरह से हजम विशेष कर लिये गये हैं फिर भला तेरी क्या हस्ती विशेष है ? “काला मुख करे मान का आदर लाये आम^{११}” अर्थात् आदर-सत्कार केवल मन की ही दुर्लभ मांग विशेष है जो केवल “शैतानी ताकतों^{११}” का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष ही है निश्चित रूप से आत्मा विशेष को मन की दुर्लभ-2 वासनाओं विशेषो से अपने को अवश्य आवश्यक रूप से ऊपर उठाना विशेष ही केवल श्रेयस्कर है प्रत्येक काल में अपने ही निज कल्याण विशेष हेतू ही यकीनी तौर पर । “मान बड़ाई छांट कर रहे नाम से लाग^{११}” अर्थात् हे आत्मा विशेष लोक लाज विशेष से बच कर के ही तू नाम यानी के केवल आवश्यक प्रकाश विशेष का संग विशेष करने में पूर्ण

समर्थ विशेष हो सकेगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” भी “परम चेतन सत्ता” विशेष का ही दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष यानी के दुर्लभ आत्मायें विशेष ही हैं निश्चित रूप से खेल विशेष का विरोधी पक्ष पूरी ईमानदारी तथा हिफाजत विशेष से निभाने वाली दुर्लभ-2 आत्मायें विशेष ही है “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” यकीनी तौर पर। इन में अकथ तप विशेष करने वाली ताकतों विशेषों का प्रकाश विशेष सुर्ख लाल टपकते हुये खून जैसा निरंतर घना विशेष प्रत्यक्ष होता है । इनके प्रभाव विशेष से बचना अथवा स्वयं को स्थिर रख पाना केवल असंभव लफज को ही सार्थक बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से आत्मा विशेष द्वारा । केवल दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ही पूर्ण समर्थ विशेष है आत्मा विशेष को आवश्यक रूप से निरंतर प्रत्यक्ष उपस्थित रखने हेतु निश्चित रूप से गांठ बांध लो । आत्मा तथा शैतानी ताकतें दोनों प्रत्येक काल में पूर्ण स्थिर विशेष ही रहती है स्वाभाविक समर्था विशेष में लेकिन आत्मा एक पिन की नौक का जरा सा चुभना भी बर्दाश्त नहीं कर पाती निश्चित रूप से चिल्लाती है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर आवरण विशेष में प्रत्यक्ष विशेष होते ही आत्मा विशेष कैसे अनंत भयानक -2 सी चुभने विशेषों से सदा के लिये छुटकारा विशेष प्राप्त करने में आवश्यक रूप से पूर्ण समर्थ विशेष हो सकती हैं इस दुर्लभ आवश्यक ज्ञान अथवा ठीक मार्ग दर्शन विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध

विशेष करवाना ही केवल “शुद्ध रूहानी सत्संग” विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “धुर” विशेष यानी के सरकार विशेष का कार्य आवश्यक रूप से नियम विशेष बना कर उसे प्रत्यक्ष प्रचारित विशेष करना ही है केवल नियम विशेष को जानना तथा उसके अनुसार अपना कल्याण विशेष पूर्ण स्थापित विशेष करना प्रजा अथवा आत्मा विशेष का अपना निजी आवश्यक व्यवसाय विशेष ही है अनंत जन्मों विशेषों का जिंदगी भर का निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष रहने का कार्यक्रम विशेष केवल स्वयं को ही सभी भयानक-2 दुखों विशेषों से सदा के लिये पूर्ण मुक्त विशेष करवाने का निश्चित आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष यकीनी तौर पर । जहां आधारभूत आवश्यक नियम विशेष प्रत्यक्ष नहीं होता वो कैसा अधूरा सत्संग विशेष है ? जहां मत धर्म इत्यादि विशेषों-2 की महान -2 दुर्लभ-2 क्रियाओं विशेषों तथा मुर्दों-प्रेतों विशेषों को प्रत्यक्ष किया जाता है वह केवल सत्संग के नाम पर एक काला भयानक सा धब्बा विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष के निजी आवश्यक शौक विशेष के अभाव में आत्मा केवल दुर्लभ-2 बोझा विशेष ही ढोती है जिन्दगी भर दुर्लभ-2 ढंगों विशेषों का दिल दिमाग तथा शरीर के जरिये निश्चित रूप से केवल सत्संग लफज विशेष का प्रयोग विशेष करने से सत्संग विशेष प्रत्यक्ष नहीं हो जाता । कच्ची जमात फेल महामूर्ख विशेष कैसे कानून की दुर्लभ आवश्यक

पढ़ाई विशेष पढ़ाने में समर्थ हो सकता है ? जो प्रत्येक लफज विशेष “कानून विशेष” के व्यावहारिक रूप से प्रमाणिक तौर पर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में लाती है “दुर्लभ आत्मा विशेष” केवल वही दुर्लभ “प्रभु” की आवश्यक दुर्लभ “दया विशेष” से कानून शास्त्र विशेष को पूर्ण प्रत्यक्ष विशेष करने में समर्थ विशेष हो सकेगी आवश्यक तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो निशान अर्थात् आवश्यक “पहचान विशेष” किस की ? यानी के केवल दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष अथवा “परम चेतन सत्ता” विशेष जो कि अमृत अर्थात् अमर विशेष कर देने वाला है यानी के सभी भयानक-2 दुखों विशेषो से सदा के लिये छुटकारा विशेष ही दिलवा देता है आत्मा विशेष को इस घोर भयानक कैद खाने विशेषो से सदा के लिये मुक्त विशेष करवा कर निश्चित रूप से । केवल यही आवश्यक शुद्ध ज्ञान विशेष उपलब्ध करवाना ही “निशान” विशेष का शुद्ध रूहानी भाव विशेष ही है यकीनी तौर पर। इससे अलग कुछ और प्रचार विशेष आत्मा विशेष करती है तो वह केवल घोर-2 पाकों विशेषो में ही अनंत काल तक के लिये दुर्लभ-2 सैर विशेष करने का दुर्लभ आवश्यक बन्दोबस्त विशेष करने का ही सामान विशेष बांध रही है सदा के लिये पूरी तरह से डूब विशेष जाने के हेतू ही इस भयानक भवसागर विशेष में निश्चित रूप से । “जिन पे नाम निशान है तिन अटकावै कौन” अर्थात् जिस भी दुर्लभ आत्मा

विशेष के पास नाम यानी के केवल प्रकाश अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध है केवल उसी दुर्लभ आत्मा विशेष की सभी विध्व बाधा विशेष-2 पूरी तरह से समाप्त विशेष हो ही जाती है आवश्यक रूप से “निजी कल्याण” विशेष की खतिर निश्चित रूप से यही एक निशान अर्थात् पहचान विशेष ही है नाम यानी के केवल दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष अथवा दुर्लभ “परम चेतन सत्ता” विशेष की निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष की प्रत्यक्ष उपलब्धी विशेष के अभाव विशेष में तो केवल सभी विकराल-2 “शैतानी ताकतें” प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो रहीं हैं निश्चित रूप से घौर भयानक-2 विघ्नों विशेषों को प्रस्तुत विशेष करने के रूप में यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभ-2 आत्मा विशेषों बिना दुम विशेष के महान-2 कर्मकाण्ड विशेषों के भण्डार विशेष दुर्लभ-2 क्रियाओं विशेषों के दुर्लभ चतुर विद्वान पुतले विशेष आत्मा के “नाम” विशेष पर केवल भयानक सा कलंक विशेष ही है निश्चित रूप से “पुरुष खजाना पाइओन-मिट गया आवागोन” अर्थात् पुरुष यानी के पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ “पुरुषोत्तम” अथवा सब कुछ प्रत्यक्ष कर निरंतर धारण विशेष करने वाला पुरुष यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष । “खजाना” यानी के परमात्मा का निज स्वरूप विशेष दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष के रूप में

आवश्यक अखुट भण्डार विशेष । “पाइओन” अर्थात प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष इस दुर्लभ आवश्यक खजाने विशेष को । “मिट गया आवागोन” अर्थात केवल इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” रूपी खजाने विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कर अनुभव विशेष करने वाली व्यवहारिक चरितार्थ दुर्लभ आत्मा विशेष ही सदा के लिये अपने को इस भयानक जन्म मरन या आवागोन अथवा जेलखानों विशेषों से पूर्ण मुक्त विशेष करवा कर बिना किसी भी अटक अथवा बाधा विशेष के अपने आवश्यक “निज घर” विशेष में पहुंचती है यकीनी तौर पर केवल जीते जी ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषों । “आद गुरए नमहः जुगाद गुरए नमहः सत गुरए नमहः श्री “गुरु” देवए नमहः” अर्थात विचारों कौन सी दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष आद यानी के सृष्टि के आरम्भ विशेष से ही पहले प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष थी ? कौन सी दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष जुगों-2 से प्रत्यक्ष छोटी से छोटी प्रत्येक उपलब्धी विशेष को भी पूरी तरह से प्रत्यक्ष धारण विशेष किये हुए निश्चित रूप से प्रत्यक्ष पूर्ण स्थिर विद्यमान विशेष है ? कौन सी दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष प्रत्येक काल में पूर्ण रूप विशेष से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष रहने वाली अविनाशी निश्चित निरंतर सत्य विशेष ही है ? “श्री” यानी के पूर्ण सुरक्षा विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाने वाला आवश्यक “सत्य” विशेष

केवल “गुरु” अर्थात शब्द विशेष यानी के केवल देव अर्थात प्रकाश अथवा केवल आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” या दुर्लभ “परम चेतन सत्ता” विशेष ही केवल प्रत्येक काल में पूर्ण रूप से सदा प्रत्यक्ष स्थिर विशेष रहने वाला निश्चित रक्षक विशेष पूर्ण सत्य विशेष ही पूर्ण “गुरु” विशेष कहलाने का इकलौता निश्चित अधिकारी विशेष ही है आवश्यक रूप से “सर्वश्रेष्ठ” “गुरु” विशेष यकीनी तौर पर सब कुछ प्रत्यक्ष विशेष कर निरंतर धारण विशेष करने वाला प्रत्येक काल में निश्चित रूप से प्रकाशित पूर्ण “गुरु” विशेष ही सदा नमस्कार विशेष के योग्य है प्रत्येक उपलब्धी विशेष के द्वारा यकीनी तौर पर । “नमस्कार” का भाव विशेष है उपलब्ध दुर्लभ लिखित आत्मिक प्रेरणा विशेष “अकाल पुरख परमात्मा” का चरितार्थ व्याहारिक स्वरूप विशेष होना प्रमाणिक तौर पर आत्मा विशेष द्वारा निश्चित रूप से सदा निरंतर यकीनी तौर पर प्रमाणिक जीवन विशेष जीना पूर्ण नमस्कार विशेष ही है पूरे सर्वश्रेष्ठ “गुरु” शब्द यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को प्रत्येक काल में यही दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष चाहने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष को परमात्मा उसी के शरीर में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाता है निश्चित रूप से । यह व्याहारिक ज्ञान विशेष बाहर कहीं शरीर में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष नहीं होता । “ज्ञान न गलई दूँडिए कथना करणा सार” अर्थात ये दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” रूपी

गूढा ज्ञान विशेष “गलई” यानी के किसी भी साधन विशेष से उपलब्ध होना केवल असम्भव लफज विशेष को ही सार्थक विशेष बनाना है । तूं व्यर्थ के ही धंधों विशेष में इस दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष को तलाश विशेष कर रहा है । इन दुर्लभ-2 कर्मकाण्ड विशेषो से ये गूढा आवश्यक ज्ञान विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होने वाला नहीं है निश्चित रूप से गांठ बांध लो फिर इस आधार रूपी आवश्यक ज्ञान विशेष को ब्यान विशेष कैसे तथा किस लफज विशेष से किया जा सकता है चतुर विद्वानों विशेषो ? जब परमात्मा अपने निजी भेद विशेष को किसी आत्मा विशेष के अंदर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष कर देता है फिर इसी दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष को और दूसरी आत्माओं के निज आवश्यक कल्याण विशेष हेतू प्रत्यक्ष करने के लिये दुर्लभ मानव समाज में उस दुर्लभ ज्ञान वान आत्मा विशेष को प्रस्तुत विशेष करता है आवश्यक रूप से ठीक मार्ग दर्शन विशेष हेतू। इन्हीं दुर्लभ आत्मा विशेषो को “गुरु” या सत “गुरु” भी कहा जाता है मानव समाज में इन “गुरु” श्रेणी की आत्माओं विशेषो का मुख्य कार्य केवल भूली हुई आत्माओं विशेषो को “परमात्मा” की “महत्ता” विशेष की याद विशेष करवाना रहता है आवश्यक रूप से सभी आवश्यक उपलब्ध समर्था विशेष का पूर्ण सदुपयोग विशेष करते हुये मानव समाज के आवश्यक कल्याण विशेष हेतू स्वयं को पूरी तरह से कुर्बान विशेष करना । जब लोभी तथा स्वार्थी विशेष श्रेणी की

आत्मायें विशेष इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष में और अज्ञानता विशेष को ले करके पूरी तरह से संलग्न विशेष हो जाती है तब निरीह आत्मायें केवल पूरी तरह से लुटी विशेष जाती हैं । इन लुटी हुई आत्माओं की बर्बादी विशेष को लफजों में बयान विशेष नहीं किया जा सकता । “परमात्मा” की आवश्यक बन्दगी विशेष करनी तो एक तरफ रही ये बरबाद हो चुकी आत्मायें विशेष “प्रभु” का नाम विशेष तक सुनना भी पसंद ही नहीं करती अंदर से परंतु कुछ मार्ग विशेष न मिलने के कारण और दूसरी बहुत सी आत्माओं को लूटने विशेष का साधन विशेष ही बन जाती हैं । लोभी-स्वार्थी खूनी भेड़ियों रूपी आत्माओं विशेषो द्वारा निश्चित रूप से जब समाज में कोई मनुष्य ओर मनुष्यों को लूटे बर्बाद करे उल्टे मार्गों विशेषो में लगाये तब आप क्या फैसला करेंगे उस निकृष्ट मनुष्य विशेष का ? केवल उसे सदा के लिये पूरी तरह से मानव समाज से हटाना विशेष ही पसन्द करेंगे शेष मानव समाज को आवश्यक रूप से सुरक्षित विशेष रखने हेतू ही निश्चित तौर पर ऐसा ही आवश्यक फैसला विशेष “प्रभु” के दरबारे खास में भी प्रत्यक्ष विशेष किया जाता है जब आत्मायें विशेष स्वयं की ही पूजा-ध्यान इत्यादी करवाने लगती हैं अपने ही लोभ तथा स्वार्थों विशेषो की पूर्ति हेतू स्वयं को दुर्लभ परमात्मा का पिता का भी दुर्लभ पिता श्री स्थापित विशेष करवाते हुए । अन्धी बहरी आत्माओं की अस्मत विशेष लूटने लगती है दोनों हाथों घौर अज्ञानता का

अंधकार विशेष फैलाते हुए तब “प्रभु” का आवश्यक “न्याय विशेष” फिर से प्रत्यक्ष विशेष होता है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । मनुष्य को आवश्यक ज्ञान विशेष से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने का सुगम साधन विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । आद से ये ज्ञान विशेष तपस्वी आत्माओं ऋषि मुनियों के जरिये विशेष रूप से मानव समाज को दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष के रूप में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता आया है । संसारी तथा सन्यासी दोनों श्रेणी की आत्माओं विशेषों को ये दुर्लभ आवश्यक ठीक मार्गदर्शन विशेष सुलभ विशेष करवाया है दुर्लभ तपस्वी आत्माओं विशेषों में यकीनी तौर पर । राजा को नियम विशेष पढ़ाये जाते थे तथा प्रजा में “प्रभु” की मूर्त विशेष दिखायी जाती थी आवश्यक रूप से राजा को ताकी पूरी हिफाजत विशेष से प्रजा की आवश्यक पालना विशेष हो सके । इसी कारण राजा अपना सर्वस्व प्रजा की पालना विशेष हेतू ही कुर्बान विशेष करता था । आज राजा का प्रभु केवल स्वयं का लोभ-स्वार्थ साधन विशेष इत्यादी ही है निश्चित रूप से इसीलिये प्रजा को दोनों हाथों से केवल लूटने में ही पूरी तरह से दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष है राज सत्ता विशेष-2 पूरी दुनिया की इन्हीं दुर्लभ-2 पापों विशेषों के कारण ही प्रत्येक आवश्यक सम्पदा विशेष भी निरंतर लुप्त प्राय विशेष होती ही जा रही है निश्चित रूप से । दुर्लभ-2 धिनौने अपराधों विशेषों के भण्डारों पर

बैठी हुई राज सत्तायें विशेष-2 आप को जीवित रहने के लिये आवश्यक जल की केवल एक बूंद विशेष तक उपलब्ध विशेष करवाने में केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर परन्तु दावे राम राज विशेष के हैं केवल आपको पूरी तरह से लूटने विशेष के लिये ही लुभाने विशेष हेतु निश्चित रूप से आप दुनिया विशेष को नहीं सुधार सकते लेकिन स्वयं को सुधारने विशेष में पूर्ण समर्थ हो प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर औरों को सुधारने के चक्कर विशेष में आप के स्वयं के ही बिगडने विशेष की पूरी शंका विशेष निश्चित है जो स्वयं ही सुरक्षा विशेष करता है अवश्य कोई और भी उसकी पूर्ण सुरक्षा विशेष रखता ही है यकीनी तौर पर । जो स्वयं को लुटवाना पसन्द विशेष करता है अवश्य दूसरा कोई और भी केवल खामोश विशेष रह कर ताली विशेष पीटता ही है निश्चित रूप से। जैसे-2 पापों विशेष की बढ़ोतरी विशेष आप करते रहोगे वैसे-2 जीवित रहने के लिये प्रत्येक आवश्यक साधन विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के लिये ही आपको अपनी दुर्लभ आवश्यक हस्ती मनुष्य के जन्म विशेष को उन्हें प्रत्यक्ष विशेष करने पर खर्च विशेष करना ही पड़ेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यही “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” की गहरी चाल विशेष है कि पहले उल्टा कुछ करवाओ फिर मनुष्य का दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष डूबे इन क्रिया विशेषों में फिर डण्डा विशेष ले कर भुगतान विशेष वसूल

करो ताकी इनके मुल्क विशेष रोशन रहें अर्थात आत्मा बन्दी विशेष बनी रहे सदा के लिये इन दुर्लभ-2 पिंजरों विशेषो को रोशन विशेष करते हुये । इन दुर्लभ-2 अपराधों विशेषो को प्रत्यक्ष विशेष करने वाली आत्माओं विशेषो को बहुत भयानक-2 जुर्माना विशेष घौर-2 नरकों विशेषो को रोशन विशेष करते हुये अवश्य चुकाना विशेष ही पड़ता है अनंत काल तक के लिये आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से दुर्लभ-2 मददगारों सम्बन्धियों मित्रों विशेषो सहित निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । “परमात्मा” विशेष स्वयं पर दोष विशेष नहीं रखता । कर्म विशेष केवल आत्मा विशेष द्वारा ही प्रत्यक्ष संपन्न विशेष होता है प्रत्येक काल में तथा फल विशेष “शैतानी ताकतों” द्वारा ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया जाता है दुर्लभ आवश्यक “प्रभु दरबारे खास” से अर्थात “प्रभु” ने प्रधान विशेष के रूप में “शैतानी ताकतों” को प्रत्यक्ष किया है विशेष तौर पर निश्चित रूप से । इन तीनों मुल्कों का ठाकुर अथवा परमात्मा विशेष तो “शैतानी ताकतें” ही हैं आवश्यक रूप से “जो मागे ठाकुर अपने ते सोई-सोई देवे” अर्थात आपके मांगने भर की देर विशेष है बस “शैतानी ताकतें” लिख विशेष लेती हैं फिर अवसर विशेष उपलब्ध होते ही प्रत्यक्ष विशेष कर देती हैं और कीमत विशेष आपके खाते विशेष में अवश्य आवश्यक रूप से जोड़ विशेष दी जाती है । अब आप केवल दुर्लभ भुगतान विशेष-2 करते फिरो आवश्यकता अनुसार

आवश्यक रूप से इन मुल्कों विशेषो को रोशन विशेष रखते हुऐ फिर छूटने की कौन सी कल्पना विशेष धरे बैठे हो ? सन्यासी को भी तपस्वी विशेष ही दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष करते हैं पहले नियम विशेष में रहने का आवश्यक अभ्यास विशेष करवाया जाता है आवश्यकता अनुसार फिर दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष का ही केवल ध्यान विशेष करने के लिये आवश्यक घोर एकान्त वास की दीक्षा विशेष दी जाती है आज क्या हो रहा है सभी केवल अपने साथ ही बांधी विशेष फिर रहे है आत्माओं विशेषो को अपना ही ध्यान पूजा विशेष इत्यादि करवाते हुऐ पूरी मनुष्य जाति को “अंधे कुंऐ” विशेष में ही पूरी तरह से धकेलने का दुर्लभ साधन विशेष ही साबित विशेष हो रहे है दुर्लभ-2 नकली “गुरु” “सतगुरु” विशेष-2 । “गुरु” केवल शब्द विशेष अर्थात् दुर्लभ “रागमई प्रकाशित आवाज” जो सृष्टि का प्रत्येक काल में निरंतर प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाला आवश्यक “सत्य” विशेष ही है निश्चित रूप से। इस दुर्लभ आवश्यक सत्य विशेष को निरंतर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष को ही केवल इस “सतगुरु” लफज विशेष से ब्यान विशेष किया जाता है “विशेष धर्म” में “विशेष काल” को मध्य नजर विशेष रखते हुए केवल व्यवहार विशेष हेतू ही यकीनी तौर पर अर्थात् आत्मा विशेष परमात्मा विशेष नहीं बन जाती आज “शैतानी ताकतों” के नुमाइंदे विशेष-2 इन लफजों विशेषो का भरपूर दुरुपयोग विशेष

करते हुये पूरे मानव समाज को ही नष्ट विशेष करने में पूरी तरह से दुर्लभ-दुर्लभ व्यस्त विशेष है अपने दुर्लभ-2 मददगारों विशेषो सहित निश्चित रूप से इन्हीं के चुंगल विशेष से बचाने विशेष के लिये ही दुर्लभ आत्मिक ज्ञान रूपी ये दुर्लभ प्रभु प्रेरणा विशेष को आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया गया है चलना केवल आत्मा विशेष ने ही है वो भी केवल अपनी ही निजी जिंदगी विशेष में आवश्यक रूप से तथा चलाना विशेष केवल “अकाल पुरख परमात्मा” विशेष ने ही है निश्चित रूप से अपने निजी ढंग विशेष से ही प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । फिर स्थानों विशेषो का अथवा बताने वालों का जो भी कार्य विशेष है वो भी आप को शताब्दियों पहले ही पूरी तरह से लिख कर के विशेष रूप से दे दिया गया है “प्रभु” के “दरबारे खास” से इस का क्या इलाज विशेष है कि आप पढ़ना-सुनना भी केवल दूसरे के दुर्लभ मुख विशेष से ही पसन्द विशेष करते हैं ? अर्थात् यदि आप को स्वयं ही लुटवाने विशेष का दुर्लभ आवश्यक शौक विशेष ही है तो फिर लूटने वाले आप को क्यों नहीं मिलेंगे आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यदि आप का “प्रभु मिलन” का दुर्लभ आवश्यक शौक विशेष सचमुच सच्चा विशेष ही है तो केवल अपनी ही निजी जिन्दगी विशेष में ही व्यवहारिक रूप से प्रमाणिक तौर पर साबित विशेष करो झूठे विशेष के लिए तो “शैतानी ताकतों” का बाजार विशेष निरन्तर गर्म विशेष ही है आवश्यकता अनुसार आवश्यक

रूप से निश्चित तौर पर “सभ कुछ घर मह-बाहर नाही” “बाहर टोले सो भरम भुलाई” अर्थात् “प्रभु” ने कुल बंदोबस्त स्वयं के मिलने विशेष का तुझे जन्म लेने से पहले ही तुझे पूरी तरह से बख्शा विशेष दिया है निश्चित रूप से तुझे यकीन विशेष नहीं होता इसीलिये बाहर धक्के विशेष-2 खाता फिरता है । बाहर केवल धोखा विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध ले । तेरे सभी दुर्लभ-2 परमात्मा रूपी नकली “गुरु” “सतगुरु” सब विशेष-2 केवल इस एक “लफज” विशेष को हटाने में ही पूरी तरह से केवल असमर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर किस बल विशेष से इनके दुर्लभ-2 महल विशेष-2 स्थिर विशेष रह सकेंगे जरा सोच तो सही आत्मा विशेष? इसीलिये तुझे सावधान विशेष किया जाता है कि “माई मूढंत तिस गुर की जा ते भरम न जाई” अर्थात् आज नकली “गुरु” विशेष-2 स्वयं ही जब भ्रमों विशेषों का भण्डार विशेष बना हुआ है तो फिर तेरे दुर्लभ-2 आवश्यक भ्रमों विशेषों का निपटारा विशेष कैसे संभव विशेष हो सकता है ? लगभग सभी इस श्रेणी की आत्मायें विशेष-2 केवल “शैतानी ताकतों” के भ्रम विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाने में ही सलग्न विशेष हैं पूरी तरह से यकीनी तौर निश्चित रूप से “माई मूढंत” का भाव है कि इनका दुर्लभ इलाज विशेष “प्रभु” ने आवश्यक रूप से घोर-2 नरकों विशेषों में कर दिया है अनंत काल विशेष तक के लिये निश्चित रूप से केवल

इन दुर्लभों विशेषों को पूरी तरह से सुचारु रूप से दुरुस्त विशेष बनाने के हेतु ही यकीनी तौर पर। “कूड़ बोल मुरदारू खाई अवरे नूं समझावण जाई” “मुठा आप मुहाये साथै नानक ऐसा आगू जापै”। आज आपको इसी दुर्लभ आवश्यक प्रभु प्रेरणा विशेष का ही चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप विशेष मिलेंगे नकली “गुरु” रूपी प्रधान विशेष-2 निश्चित रूप से। जिनके अंदर तो कूड़ अर्थात् अनंत निकृष्ट धिनौनी वासनाओं विशेषों के ही अथाह समुद्र विशेष ढां-ढां मार रहे हैं परंतु तख्त विशेष-2 सजा कर बैठे हैं दुनिया को केवल घोर अन्धा ज्ञान विशेष-2 बांटने हेतु ही अर्थात् मानव समाज को पूरी तरह से नष्ट विशेष करने के लिये ही निश्चित रूप से केवल मनुष्य जाति का अधिकार विशेष-2 पूरी तरह से हजम विशेष करते हुए “मुर्दे” विशेष-2 निगलते विशेष हुए यकीनी तौर पर। ये दुर्लभ निकृष्ट आत्मायें विशेष पूरी तरह से “मुठा” यानी के “शैतानी ताकतों” द्वारा ठगी विशेष जा चुकी हैं फिर जो आत्मायें इन ठगों विशेषों की मदद विशेष या अनुसरण विशेष करने में घोर दुर्लभ व्यस्त विशेष हैं उन्हें कैसे बचाया विशेष जा सकता है “शैतानी ताकतों” के ठगने विशेष से ? अर्थात् वे भी पूरी तरह से केवल लुटी विशेष ही जा चुकी है “शैतानी ताकतों” द्वारा निश्चित रूप से गांठ बांध ले आत्मा विशेष । इन्हीं निकृष्ट आत्माओं विशेषों को नानक नाम की आत्मा विशेष ब्यान कर के बताती है कि ये “आगू जापै” अर्थात् धर्म-मत इत्यादि मुल्कों

विशेषो के महान-2 “गुरु” अथवा प्रधान विशेष ही कहे जाते हैं । अब जो सच्ची आत्मा विशेष होगी वो इस कार्य विशेष में उतरेगी ही नहीं फिर यदि “प्रभु की रजा” विशेष में आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष विशेष होगी तो उसे इस ब्यान विशेष से अवश्य आवश्यक रूप से तसल्ली ही होगी निश्चित तौर पर । अब जिस नानक नाम की आत्मा विशेष ने ब्यान विशेष दिया उसने स्वयं भी तो जिंदगी भर केवल यही आवश्यक दुर्लभ कार्य विशेष “मार्ग दर्शन” विशेष का ही “प्रभु की रजा” विशेष में उपलब्ध दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से सम्पन्न विशेष किया “गुरु” रूप से “आजीवन” कैसे एतराज विशेष हो सकता है ? शोर तो केवल चोर विशेष ही मचायेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से जो कि फंस विशेष चुका है निश्चित रूप से अर्थात् वही नाचेगा विशेष तौर पर जिसके अंदर खुटका विशेष होगा शेष दुर्लभ आत्मा विशेष तो केवल आनंद मग्न ही होगी अवश्य आवश्यक रूप से “प्रभु” की इस दुर्लभ आवश्यक आत्मिक प्रेरणा विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए निश्चित रूप से। “गुरु” “जिना का अंधला सिख भी अंधे करम करेन” अर्थात् “गुरु” यानी के मार्ग दर्शक ही यदि दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष से पूरी तरह से विमुख विशेष है “अंदरूनी” तौर से फिर सिख यानी के शिष्य कैसे इस दुर्लभ आवश्यक मार्ग विशेष को जान सकेगें ? अर्थात् आज घोर अंधा विशेष ही केवल बहुत से अंधो विशेषो का मार्ग दर्शन दुर्लभ करने

में घौर व्यस्त है परमार्थ तथा संसार दोनों में ही केवल घौर अंधमत ही विशेष रूप से पूर्ण निश्चित प्रभावित विशेष है “शैतानी ताकतों” का ही दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष के रूप में । संसार में प्याले विशेष भरने वाली आत्मायें विशेष-2 कैसे समाज के आवश्यक मार्ग दर्शन के दुर्लभ भार विशेष को वहन विशेष करती हुई स्थिर विशेष रख सकेंगी मनुष्य जाति को । “पूरा सतगुरु न मिला-सुनी अधूरी सीख” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव करने वाली आवश्यक आत्मा विशेष दुर्लभ ही है निश्चित रूप से फिर कैसे ठीक मार्ग दर्शन विशेष उपलब्ध विशेष हो सकेगा शिष्य रूपी मानव समाज विशेष के लिये ? “स्वांग जती का पहिर के घर-घर मांगे भीख” अर्थात् बाहर से तो दाड़ी-चोले इत्यादि विशेष-2 सफेद पहनावों विशेषों में केवल लूटने वाले ही छुपे विशेष हुए है पूरी तरह से खूनी लोभी स्वार्थी भेड़िये निश्चित रूप से जिनकी नजर विशेष केवल आपकी दुर्लभ-2 आवश्यक उपलब्धियों विशेषों को ही टटोलने में केवल दुर्लभ घौर व्यस्त है मददगारों विशेषों सहित यकीनी तौर पर गांठ बांध ले आत्मा विशेष । “कन फूँका “गुरु” हद का बेहद का “गुरु” ओर” अर्थात् सभी विशेष-2 कर्मकाण्ड रूपी क्रियाओं विशेषों को प्रचारित विशेष करने वाले “गुरु” विशेष-2 केवल “हद” यानी के तीनों मुल्कों के मालिक विशेष शैतानी ताकतों विशेषों के ही नुमाइंदे ही है विशेष रूप से । “बेहद” यानी के दुर्लभ

आवश्यक ^{८८}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष का मार्ग दर्शक रूपी आवश्यक आत्मा विशेष प्रत्येक काल में केवल दुर्लभ ही है निश्चित रूप से। ^{८८}बेहद का ^{८८}गुरु^{९९} जब मिले तब लहे ठिकाना ठौर” अर्थात् पूरा भेदी विशेष दुर्लभ आत्मा विशेष मिल जाये तभी पता विशेष चलता है कि दुर्लभ आवश्यक ^{८८}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष की आवश्यक उपलब्धी विशेष कैसे तथा कहाँ पर निश्चित है यकीनी तौर पर। ^{८८}बंधे को बंधा मिले-छूटे कौन उपाय^{९९} अर्थात् जो आत्मा विशेष जिसे आप ^{८८}गुरु^{९९} विशेष मान कर घोर मग्न विशेष है स्वयं ही अभी कैदी विशेष है तीनों शरीरों विशेषों के द्वारा शैतानी ताकतों का विशेष रूप से फिर एक दुर्लभ महान कैदी विशेष कैसे दूसरे कैदी विशेष को मुक्त विशेष करवाने में पूर्ण सफल विशेष हो सकता है किस कल्पना विशेष से ? महान रूप विशेष प्रत्येक रूप विशेष को मुक्त करवाने में केवल पूर्ण असमर्थ ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गांठ बांध ले आत्मा विशेष । ^{८८}कर सेवा निरबन्ध की पल में लेत छुड़ाये^{९९} अर्थात् प्रत्येक काल में निरंतर प्रत्यक्ष पूर्ण मुक्त विशेष केवल दुर्लभ आवश्यक ^{८८}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष ही है निश्चित रूप से । ^{८८}सेवा सुरत शब्द चित लाये^{९९} केवल यही एक ^{८८}आत्मा^{९९} यानी के सुरत विशेष द्वारा शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक ^{८८}रागमई प्रकाशित आवाज^{९९} विशेष को पवित्र हृदय विशेष से निरन्तर चिन्तन विशेष में रखने वाला दुर्लभ आत्मा विशेष ही इस सेवा विशेष लफज को पूर्ण सार्थक विशेष बनाने

में पूरी तरह से सफल विशेष है प्रत्येक काल में केवल अपने ही निज कल्याण विशेष के हेतु ही निश्चित रूप से । केवल यही दुर्लभ आवश्यक सेवा विशेष प्रमाणिक तौर पर निरंतर पूर्ण ईमानदारी तथा पवित्र हृदय विशेष से सम्पन्न विशेष करने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष ही छुड़ायी विशेष जाती है पूरी तरह से शैतानी फंदों विशेषों से यकीनी तौर पर । “जा का “गुरु” ग्रही अहे-चैला ग्रही होय” अर्थात् जो “गुरु” स्वयं ही “गृह” यानी कि शरीर की विशेष-2 भयानक वासनाओं विशेषों को पूरा करने में ही केवल दुर्लभ घोर व्यस्त है उसके शिष्य विशेष कैसे इन निकृष्ट मैली वासनाओं विशेषों की गुलामी विशेष से स्वयं को पूरी तरह से मुक्त विशेष करवाने में विशेष रूप से आवश्यक तौर पर प्रयत्नशील होंगे ? अर्थात् उस वासनात्मक “गुरु”ओं विशेषों के शिष्य भी केवल वासनाओं के अंधे भयानक अथाह समुद्र विशेष में ही पूरी तरह से गोते विशेष-2 लगायेंगे अर्थात् अवश्य डूबेंगे ही निश्चित रूप से पूरी तरह से यकीनी तौर पर गांठ बांध ले आत्मा विशेष । “कीच कीच को धोवते-दाग न छूटे कोय” अर्थात् जैसे कीचड़ का दाग विशेष कीचड़ से धोने पर कभी भी नहीं छूटता इसी तरह से वासनात्मक क्रियाओं विशेषों को बार-2 सम्पन्न विशेष करने से कभी भी वासना विशेष से छुटकारा विशेष नहीं मिलता यकीनी तौर पर । बहुत से “गुरु” रूपी भगवानों विशेषों ने अपने दुर्लभ-2 स्थानों विशेषों अथवा अड्डों विशेषों पर इन्सानियत का घोर

नंगा विशेष नाच नचाने का दुर्लभ धन्धा विशेष चला रखा है केवल पूरी मनुष्य जाति को घौर-2 नकों विशेषो का हिस्सा विशेष बनाने के हेतू ही निश्चित रूप से घौर भयानक अन्धमत विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करते हुए । “जिस के अंतर वसै निरंकार-तिस की सीख तैरे संसार” अर्थात् निरंकार यानी के बिना आकार वाली आधारभूत दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष जिस भी दुर्लभ आत्मा विशेष के अन्तर में निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष है केवल उसी दुर्लभ आत्मा विशेष के आवश्यक मार्ग दर्शन दुर्लभ विशेष पर केवल आत्मा के स्वयं के द्वारा ही चल अथवा पूर्ण अनुसरण विशेष करने पर ही इस भयानक भवसागर से तरने का दुर्लभ आवश्यक अभ्यास विशेष किया जा सकता है अथवा पूरी तरह से छूटने का व्यवहारिक उद्यम विशेष किया जा सकता है विशेष तौर पर “करे इहु करम दिखावे होर” अर्थात् अंदर से तो लोभी विशेष ही है इन्सान के मांस तथा खून विशेष का पर बाहर से स्वयं को पूरा “गुरु” परमात्मा का दुर्लभ बाप ही स्थापित विशेष कर रहा है दुनिया के आवश्यक अधिकारों विशेषो को पूरी तरह से बिना चबाये हुऐ ही निगलता विशेष हुआ निश्चित रूप से । “राम की दरगह बाधा चोर” अर्थात् कोई दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष प्रत्येक जर्रे विशेष में भरपूर समायी हुई नजर विशेष रखे हुऐ निरन्तर खामोश मग्न विशेष है निश्चित रूप से अपनी ही धुन विशेष में फिर तू कैसे उसे धोखा विशेष देने में आंशिक रूप से भी सफल

विशेष हो सकेगा चतुर विद्वान (महामूर्ख श्रेणी विशेष के) प्राणी विशेष ? तुझे भी इसी तरह से बांध कर घसीट कर के कोई अवश्य ले जायेगा आवश्यक रूप से जैसे चोर विशेष को बांध कर के ले जाया जाता है जेलखाने विशेष में घसीटते-मारते हुये निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों दुर्लभों विशेष-2 “अंतर बिख मुख अमृत सुणावे” अर्थात अंतर में तो केवल काम-क्रोध-लोभ-मोह तथा अहंकार रूपी ईर्ष्या-द्वेषता का दुर्लभ-2 भयानक जहर विशेष ही लबालब भरा विशेष हुआ है पर बाहर दुनिया को बढ़िया-2 सत्संग रूपी “अमृत दान” विशेष-2 रूपी महान-2 व्याख्यान विशेष-2 देने में ही पूरी तरह से दुर्लभ घोर व्यस्त हैं । “जमपुर बाधा चोटा खावे” अर्थात ऐसे दुर्लभ नकली “गुरु”ओं अथवा प्रधानों विशेषों का तो निश्चित स्थान पूर्ण मुक्ति विशेष का आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से केवल “जमपुर” विशेष ही है प्रत्येक काल में जहां पर इन दुर्लभ-2 नकली “गुरु”ओं अथवा प्रधानों विशेषों को ठोक-पीट कर विशेष रूप से स्वास्थ्यवर्धक विशेष बनाया जायेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । “अनिक पड़दे मह कमावे विकार-खिन मह प्रगट होह संसार” अर्थात यहां तो तूने अनेक उपाय विशेष-2 कर रखे हैं अपने विशेष-2 दुर्लभ-2 कार्यक्रमों विशेषों को पूर्ण गुप्त विशेष रखने के वास्ते पर शैतानी ताकतों के अंश विशेष को तो तू हर वक्त अपने साथ ही लिये फिरता है जो

दरगाह में तेरी सारी करतूतों विशेषो को पूरी तफ्तीश विशेष से ब्यान विशेष कर देगा निश्चित रूप से । “मन तो लेखा मगिये जिन कीता वापार” अर्थात् जिस मन को प्रसन्न विशेष रखने के लिये तू दिन रात भयानक-2 विशेष-2 कमा विशेष रहा है ना यही मन विशेष तेरी लुटिया विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक मनुष्य का जन्म पूरी तरह से डुबोने का निश्चित दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष ही है यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो अर्थात् “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष पहरेदार आपका सुन्दर अंग मन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ! “सो किउ अंधा आखीऐ-जि हुकमह अंधा होई” अर्थात् अपने छोटे करमों विशेषो के कारण जो मनुष्य अंधा विशेष होने की आवश्यक सजा विशेष भुगत रहा है उसे अंधा विशेष कहने का क्या फायदा? “नानक हुकम न बुझई-अंधा कहीऐ सोई” अर्थात् नानक नाम की आत्मा विशेष का ब्यान विशेष है कि “हुकम” यानी के “अकाल पुरख परमात्मा” की आत्मिक प्रेरणा रूपी दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष के अनुसार जो कोई भी आत्मा अपना जीवन व्यवहारिक तौर पर प्रमाणिक नहीं बनाती चरितार्थ रूप से केवल “अंधा विशेष” कहलाने का ही अधिकारी विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । “नानक अंधा होई कै रतना परखण जाई” अर्थात् ऐसी अंधी बहरी आत्मा विशेष कैसे दुर्लभ रतन विशेष यानी के

दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव कर लेगी वो भी केवल “गुरमुख” नाम का नकली मुखौटा विशेष लगा कर ही ? “रतना सार जाणई आवै आप लखाई” अर्थात् “सार” यानी के आवश्यक गुप्त भेद विशेष “रतन” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को केवल वही आत्मा विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करती है जिसे आप यानी के “अकाल पुरख परमात्मा” “लखाई” अर्थात् स्वयं ही केवल प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करवाता है अपनी दुर्लभ आवश्यक दया विशेष के जरिये निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर और तू दिन रात दूसरों के मगर (पीछे) ही दौड़ा भागा फिरता है । यह आवश्यक अनुभव आत्मिक विशेष केवल तेरे स्वयं के ही आवश्यक पुरुशार्थ विशेष तथा “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” से ही पूरी तरह से सम्पन्न विशेष होगा निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो और कहीं से भी कुछ भी विशेष होने वाला नहीं है यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभ-2 महानों विशेषो। “रतना केरी गुथली रतनी खोली आई” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक अखुट भण्डारों रूपी रतनों विशेषो से भरपूर लबालब भरा हुआ ये गुथली रूपी मानव शरीर विशेष केवल “रतनी” यानी के इस दुर्लभ गुथली रूपी मानव शरीर विशेष को प्रत्यक्ष करने वाला दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ही तुझे इस दुर्लभ आवश्यक खजाने विशेष तक पहुंचाने का एक मात्र प्रत्यक्ष दुर्लभ आवश्यक

पूर्ण निरंतर समर्थ साधन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । अर्थात् इस दुर्लभ आवश्यक “प्रभु” की दया विशेष के अभाव में इस शरीर रूपी गुथली विशेष से तुझे कुछ भी उपलब्ध विशेष होने वाला नहीं है निश्चित रूप से गांठ बांध लें आत्मा विशेष । यानी के केवल वही दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ही इस रतनों से भरी हुई गुथली विशेष का मुंह खोलेगी जिसने कि इस दुर्लभ आवश्यक गुथली विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया है और सभी यत्न तथा उपाय तेरे महान-2 केवल व्यर्थ का ही ढोल विशेष पीटना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से कुछ भी विशेष नहीं होने वाला यकीनी तौर पर । जो ज़िन्दगी भर अनपढ़ विशेष रहा है क्या मरने के बाद साक्षर विशेष ही हो जायेगा चतुर विद्वान प्राणी दुर्लभ विशेष ? प्रभु प्रेरणा है कि “जीवित मरिये भवजल तरिये” ना कि मुर्दा विशेष-2 देखिये और मुर्दे विशेष-2 के संग विशेष से तरिये वो भी स्वाभाविक मौत विशेष मरने के पश्चात “वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाई” अर्थात् हे वणजारा रूपी आत्मा विशेष तू दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” रूपी “वखर” यानी के सौदा विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के लिये ही दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष में दुर्लभ प्रत्यक्ष विशेष हुई थी लाभ विशेष कमाने हेतु परंतु तू दुविधा विशेष में ही रही ज़िन्दगी भर मन रूपी शैतानी ताकतों के द्वारा और पूरी तरह से डुबो विशेष दी गई भयानक अंधे कुंए विशेष में दुर्लभ आवश्यक

सौदे विशेष को प्रत्यक्ष रूप से कमाने विशेष के अभाव में निश्चित रूप से । “जिन गुण पलै नानका माणक वणजह सैई” अर्थात् “जिन” यानी के केवल वही दुर्लभ आत्मा विशेष विवेकशील गुणवान है आवश्यक रूप से जो दुर्लभ “प्रभु” की दुर्लभ आत्मिक प्रेरणा के अनुसार प्रमाणिक व्यवहारिक जीवन विशेष जीती है अजीवन चरितार्थ स्वरूप हो कर निरंतर विशेष रूप से केवल ऐसी दुर्लभ आवश्यक गुणवान आत्मा विशेष ही इस दुर्लभ आवश्यक “माणक” यानी के मोती विशेष अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” रूपी आवश्यक व्यापार विशेष को प्रत्यक्ष कमा अथवा उपलब्ध विशेष करवा पाने में पूर्ण समर्थ विशेष होती है “प्रभु” के “दरबारे खास” से दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” के जरिये प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध ले आत्मा विशेष । इस दुर्लभ आवश्यक गुण विशेष के अभाव में किसी भी महान से महानतम आत्मा विशेष को भी ये दुर्लभ आवश्यक व्यवसाय आंशिक रूप से भी प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होना केवल निश्चित असम्भव विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर। “रतना सार न जाणनी अंधे वतह लोई” अर्थात् ये दुर्लभ रतन विशेष रूपी आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष निरंतर कहाँ पर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है इसका आवश्यक गुप्त भेद विशेष जानने के अभाव में आत्मा इस दुर्लभ आवश्यक रतन विशेष की तलाश दूसरे स्थानों विशेषों पर करती हुई अपने दुर्लभ आवश्यक अवसर

मनुष्य के जन्म विशेष को सदा के लिए पूरी तरह से गंवा विशेष बैठती है फिर बचता है तो केवल रोना-पीटना खून के आंसू विशेष के रूप से जिस को देखने सुनने वाला कोई भी फिर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही नहीं होता सब कुछ खोने के बाद विशेष तौर पर निश्चित रूप से । यह दुर्लभ आवश्यक तलाश विशेष ज्ञान विशेष दुर्लभ के अभाव में आत्मा विशेष को ऐसी ही है जैसे कि अंधा किसी दुर्लभ खजाने विशेष को ढूँढने में निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष है निश्चित रूप से आखिर गलत ढंगो विशेषो से गलत स्थानों विशेषो पर निरंतर अकथ महान-2 प्रयत्नों विशेषो को विशेष पूर्ण सम्पन्न करने के बाद भी अन्धी बहरी आत्मा विशेष को भला क्या उपलब्ध विशेष हो सकता है सिवाय भयानक-2 चोटों विशेष के?

“नउ दरवाजे-काइआ कोट है दसवें गुप्त रखीजै” अर्थात् काइआ यानी के शरीर मानव का “कोट” अर्थात् एक दुर्लभ आवश्यक किला विशेष ही है। जिसमें नौ दरवाजे विशेष प्रत्यक्ष ही है आत्मा को भ्रमाने विशेष के लिये आंख-नाक-कान छह दरवाजे विशेष तथा वाक-उपस्थ और गुदा मिला कर नौ । इस दरवाजे इस शरीर रूपी किले विशेष के आत्मा को दसवें आवश्यक दरवाजे विशेष इस किले विशेष के तक पहुंचने का ख्याल ही नहीं उत्पन्न करने देते विशेष तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । दसवां आवश्यक द्वार विशेष दोनों आंखों के पीछे अर्थात् अति सूक्ष्म ब्रह्मी नाड़ी विशेष में आवश्यक रूप से गुप्त विशेष है जहां पर

दुर्लभ आवश्यक रत्न विशेष पूरी तरह से छुपा कर विशेष तौर से रखा हुआ है प्रत्येक आत्मा की केवल अपनी निजी सम्पत्ति विशेष के रूप में नौ दरवाजे विशेषों पर पूर्ण समर्था विशेष लिये हुए “शैतानी ताकतें” पूर्ण कब्जा विशेष स्थापित करके प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष हैं आत्मा को भ्रमाने अथवा लुभाने विशेष हेतू ही निश्चित रूप से । “शैतानी ताकतों” का आवश्यक मुख्य कार्य विशेष है आत्मा विशेष को इन आवश्यक नौ द्वारों विशेषों में पूरी तरह से निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष रखना । इसी कारण इन दरवाजों विशेषों की प्रसन्नता हेतू ही कुछ न कुछ नया विशेष निरंतर उपलब्ध विशेष किया जाता है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से “शैतानी ताकतों” द्वारा ताकी आत्मा दिन भर पूरी ज़िन्दगी इन्हें ही संवारने-निखारने तथा प्राप्त विशेष करने में ही केवल दुर्लभ व्यस्त विशेष रहे आवश्यक रूप से तथा फिर आवश्यक मनुष्य का दुर्लभ जन्म विशेष जुए में हारे हुए जुआरी विशेष की तरह से हार कर पल्ला विशेष झाड़ कर रोती पीटती चली जाये केवल भुगतान विशेष-2 चुकाने हेतू ही अपने इस दुर्लभ व्यस्त रहने रूपी प्रमाद विशेष का निश्चित रूप से। मनुष्य जन्म का दुर्लभ आवश्यक अर्थ विशेष आत्मा का इस द्वार विशेष दसवें तक पहुंच कर अपनी दुर्लभ आवश्यक संपत्ति विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करना है प्रत्येक कीमत विशेष पर निश्चित रूप से केवल “जीते जी” ही अर्थात् स्वाभाविक मौत के आने से

पहले ही इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष को पूरी तरह से निश्चित समाप्त विशेष कर लेना है यकीनी तौर पर प्रत्येक आत्मा विशेष द्वारा केवल स्वयं के ही “निज कल्याण” विशेष हेतु निश्चित रूप से अब विचारों कि आत्मा किन दुर्लभ-2 आवश्यक कार्यों विशेषों में निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष है “आजीवन” बिना रुके दिन रात सभी प्रकार के जायज अथवा नाजायज ढंगों विशेषों का प्रयोग विशेष-2 करते हुए यकीनी तौर पर । यह आवश्यक कार्य विशेष और किसी भी जून विशेष में करना असम्भव लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनाना है आत्मा विशेष द्वारा । श्मशान भूमि अथवा मुल्क विशेष के स्वाद विशेष ही जब नहीं छोड़े जा सकते तो फिर देव मुल्कों के उत्तम-2 स्वादों अथवा भोंगों विशेष में प्रत्यक्ष पूरी तरह से डूबी हुई आत्मा विशेष कैसे इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष को पूर्ण सम्पन्न विशेष कर सकेगी ? यह दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष मानव के जन्म विशेष का आत्मा विशेष को सभी प्रकार की जूनों विशेषों को बार-2 भुगत विशेष लेने के बाद ही केवल प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है केवल एक बार अर्थात् एक मौका दुर्लभ विशेष छूटने का निश्चित रूप से । इस दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष मानुख के जन्म विशेष को केवल रंग तमाशे विशेष-2 में पूरी तरह से खो विशेष देना बुद्धि का विषय कैसे हो सकता है? “बड़े भाग मानुख तन पावा-सुर दुर्लभ सभ ग्रन्थ गावा” अर्थात् सभी ऋषि मुनियों ने दुर्लभ

आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष की महत्ता विशेष को स्वीकार करके ब्यान विशेष दिया है कि “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” से ही ये दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है आत्मा विशेष को केवल “प्रभु” से आवश्यक मिलने विशेष हेतू ही निश्चित रूप से सभी आत्मायें एक सी समर्था विशेष को लिये हुए ही प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष हैं निश्चित रूप से निरंतर प्रत्येक काल में अविनाशी सत्ता विशेष का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष अविनाशी विशेष के रूप में यकीनी तौर पर फिर एक आत्मा विशेष घोर-2 नरकों विशेषों में तथा एक निकृष्ट छुद्र जीवों में अथवा स्वर्गों विशेषों में क्यों प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष है ? आपको ये श्रेष्ठ जन्म विशेष मनुष्य का क्यों प्रत्यक्ष मिला हुआ है? जब आत्मा विशेष मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में अपने इस आवश्यक निज के कार्य विशेष “प्रभु” के मिलन विशेष को पूरी तरह से सम्पन्न विशेष नहीं करती बल्कि उपलब्ध दुर्लभ आवश्यक समर्था विशेष को दूसरी निकृष्ट वासनाओं विशेषों को पूरा करने पर ही केवल खर्च विशेष कर देती है तब आत्मा विशेष को अपनी इन दुर्लभ-2 भयानक वासनाओं विशेषों को पूरी तरह से मिटाने विशेष के लिये भोगी जूनों विशेषों में रहना ही पड़ता है । आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अपने दुर्लभ-2 स्वादों विशेषों की पूर्ति हेतू ही निश्चित रूप से फिर जैसे-2 गलत ढंगों विशेषों का प्रयोग विशेष आत्मा विशेष करती रही है दुर्लभ

आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष में अपनी दुर्लभ-2 कामनाओं विशेषों को पूरा विशेष करने के लिये उन अपराधों विशेषों का आवश्यक भुगतान विशेष पूरी तरह से चुकाने के लिये ही आत्मा विशेष को अवश्य भयानक-2 नरकों विशेषों को भुगतना ही पड़ता है विशेष तौर पर निश्चित रूप से इस तरह से बहुत ही दीर्घ काल विशेष के बाद ही एक आवश्यक अवसर विशेष प्राप्त होता है आत्मा विशेष को दुर्लभ मनुष्य के जन्म विशेष के में सदा के लिये इस भयानक जंजाल विशेष से स्वयं को पूरी तरह से मुक्त विशेष करवाने के लिये निश्चित रूप से “मिल जगदीश मिलन की बरिआ चिरंकाल एह देह संजरिआ” यह दुर्लभ आवश्यक मौका विशेष मनुष्य के जन्म विशेष का केवल “जगदीश” विशेष से पूर्ण मिलने विशेष के लिये ही मिला है आत्मा विशेष को चिरंकाल अर्थात् लम्बी अवधि विशेष भयानक-2 दुखों विशेषों को भुगतने विशेष के बाद ही यकीनी तौर पर हे आत्मा विशेष! अब ये दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष तू व्यर्थ के केवल अधूरे धन्धों विशेषों में ही फिर से निरंतर खोती विशेष चली जा रही है दुर्लभ आत्मा विशेष। “अवर काज तेरे किते न काम” अर्थात् ये सभी तेरे आवश्यक-2 कार्य विशेष दुर्लभ भी तेरे निजी कल्याण विशेष के मार्ग विशेष में कुछ भी अर्थ विशेष ही नहीं रखते पूरी तरह से अथवा काम विशेष आने वाले नहीं है निश्चित रूप से आत्मा विशेष तू अवश्य ही गांठ बांध ले। “मिल साथ संगत भज केवल नाम”

अर्थात् **“साध”** जो इन्द्रियतीत है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से **“संगत”** अर्थात् उस दुर्लभ आत्मा विशेष के दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष को विचार कर पूरी से अपना केवल अपनी ही निजी जिन्दगी विशेष में प्रमाणित तौर पर व्यवहारिक रूप से । वो क्या है दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष? **“भज केवल नाम”** अर्थात् अपनी आत्मिक समर्था विशेष से इस नाम यानी के केवल प्रकाश अथवा दुर्लभ आवश्यक **“रागमई प्रकाशित आवाज़”** विशेष को देख तथा सुन निरंतर केवल पवित्र हृदय विशेष से अपने ही आवश्यक निज कल्याण हेतू ही यकीनी तौर पर केवल यही दुर्लभ आवश्यक व्यवसाय विशेष कमाने विशेष के लिये ही तुझे ये दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष मनुष्य का जन्म विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हुआ है **“प्रभु”** की दुर्लभ आवश्यक **“दया विशेष”** से निश्चित तौर पर गांठ बांध ले आत्मा विशेष **“बजर कपाट न खुलनी-गुर सबद खुलीजै”** अर्थात् ये आवश्यक गुप्त दसवां द्वार विशेष बहुत ही मजबूत ढंग विशेष से बंद विशेष किया हुआ है किसी भी उपाय या यन्न विशेष से ये खुलने वाला नहीं है इस दर विशेष के प्रत्यक्ष विशेष होने का आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष केवल दुर्लभ शब्द विशेष ही है जो पूरी सृष्टि का पूरा मालिक अथवा आधारभूत **“गुरु”** विशेष ही है आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष रहने वाला निरंतर आवश्यक **“सत्य”** विशेष यकीनी तौर पर फिर तू कौन-2 सी दुर्लभ-2 चाबियां

विशेष-2 लिये फिरता है मुर्दों-प्रेतों विशेषों की ? इस आवश्यक बजर कपाट विशेष पर तेरी सभी चालाकियां नकली चमकती हुई चाबियों विशेषों सहित निश्चित रूप से केवल व्यर्थ का धंधा विशेष ही साबित होंगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से गांठ बांध लो चतुर विद्वानों दुर्लभों विशेषों! लगता है शायद बाजार विशेष में दुम विशेष का अभाव विशेष चल रहा है! चलो कोई नहीं “प्रभु” अवश्य ही बढ़ती हुई दुर्लभ आवश्यक मांग विशेष को पूरी तरह से ध्यान विशेष रखते हुए अपनी उत्पादन क्षमता दुमों विशेष को प्रत्यक्ष सुलभ विशेष करने के लिये आवश्यकता अनुसार अवश्य बढ़ायेगा ही आखिर मानव विशेष उस का अपना निज स्वरूप विशेष जो ठहरा वैसे रिजर्व विशेष करवाने में सुविधा विशेष रहती ही हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में। साल में दो बार तो अवश्य ही बड़े शहरों विशेषों में परमात्मा विशेष-2 जी पधारते ही हैं अपनी पूरी दुर्लभ-2 पार्लियामेंटों विशेषों सहित यकीनी तौर पर ये दुर्लभ आवश्यक दान विशेष “दुम” विशेष का करने हेतू ही निश्चित तौर पर आप को अधिक चिंता विशेष करने की तो कोई जरूरत विशेष ही नहीं है यहां तो दुर्लभ महाराज जी विशेष तौर पर केवल दृष्टि मार कर के ही दुम विशेष का “ट्रांसप्लांट” विशेष तौर पर कर देंगे जो अगले जन्मों विशेषों में अपने आप ही आवश्यक रूप से गर्म विशेष में ही प्रफुटित विशेष हो जाया करेगी “दुम विशेष” सुविधा अनुसार आखिर “प्रभु” ने सुन ही ली दुर्लभ आवश्यक

फरियाद विशेष बेशक कुछ देर से सही सुनी तो सही निश्चित रूप से चलो अब सभी कुल वासियों का भी मार्ग विशेष खुल ही गया इन दुर्लभ-2 स्पीशीजों विशेषों में आवश्यक जन्म विशेष लेने का सदा के वास्ते अब सुविधा विशेष उपलब्ध विशेष हो ही गई तरह-2 की विशेष-2 मीठी-मीठी बोलियां विशेष-2 बोलने का निश्चित प्रमाण पत्र विशेष उपलब्ध हो ही गया “प्रभु” के “दरबारे खास” से आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से रे चतुर विद्वानों विशेषों ।

“अनहद वाजे धुन वजदे गुर सबद सुणीजे” गुर रूपी शब्द विशेष कैसा है ? “धुन वजदे” यानी के एक प्यारा सा दुर्लभ आवश्यक राग विशेष ही है जो आत्मा विशेष को आकर्षित विशेष करता है अपने साथ ले जाने के वास्ते विशेष रूप से “अनहद वाजे” अर्थात् यह दुर्लभ आवश्यक “रागमई आकर्षण” विशेष कहां से शुरू और कहां इस का अंत विशेष यह कोई नहीं जानता यानी के सभी की हृद विशेष से पूरी तरह से बाहर विशेष ही है ये दुर्लभ आवश्यक राग विशेष सब कुछ प्रत्यक्ष करने के बावजूद सब से न्यारा विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर शैतानी ताकतों ने आत्मा विशेष को भ्रमाने विशेष के लिये बावन विशेष-2 एक दूसरे से बढ़ कर प्रकाशित नकली धुनें विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध की है आवश्यक रूप से जिन में ऐसा भयानक दुर्लभ आकर्षण विशेष है कि इन्हें देखने सुनने के बाद आत्मा

विशेष आगे बढ़ने का विचार तक ही नहीं रखती । सभी दुर्लभ आवश्यक ताकतें विशेष-2 स्वयं को पूरी तरह से वरण विशेष करने के लिये दुर्लभ आत्मा विशेष को अत्यन्त आकर्षित रूपों विशेषों में हाथ जोड़े नतमस्तक मिलती है विशेष रूप से । इन दुर्लभ आकर्षित रूपों विशेषों को देखते ही आत्मा विशेष सुन्न-अवाक विशेष खड़ी रह जाती है निश्चित रूप से । इन आवश्यक दुर्लभ चक्करों विशेषों में आत्मा विशेष समस्त आवश्यक धंधा विशेष पूरी तरह से भुला बैठती है तथा ये दुर्लभ आवश्यक आकर्षण विशेष आत्मा की समस्त दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष को निरंतर धीरे-2 पूरी तरह से हजम विशेष करने लगता है । जैसे-2 दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष घटने विशेष लगती है वैसे-2 ही समस्त उपलब्धियां विशेष भी धीरे-2 पूरी तरह से लुप्त विशेष होने लगती हैं तथा आत्मा विशेष फिर से नीचे खिसकने लगती है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से धीरे-2 यकीनी तौर पर । फिर एक घड़ी विशेष ऐसी भी आती ही है कि आत्मा विशेष वही पहुंच जाती है नीचे गिर कर जहां से उसने कभी शुरू विशेष किया था अनंत काल पहले किसी दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में निश्चित रूप से । इन सभी शैतानी आवश्यक विपदाओं विशेषों से पूरी तरह से बच विशेष कर निरंतर सुरक्षित आगे बढ़ना आवश्यक रूप से आत्मा विशेष का केवल एक “अकाल पुरख परमात्मा” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” पर ही निश्चित निर्भर विशेष

करता है पूरी तरह से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर। यह दुर्लभ आवश्यक दया विशेष आत्मा विशेष की वासना रहित आवश्यक “सच्ची पुकार” विशेष पर ही धीरे-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध होती है विशेष तौर पर । जो आत्मा विशेष का पूरा सच्चा तथा ठीक मार्ग दर्शन विशेष करती है आवश्यक रूप से इस सुनहरी जाल विशेष से पूरी तरह से सुरक्षित विशेष निकल जाने के हेतू ही निश्चित रूप से । कमजोर आत्मा विशेष का आगे बढ़ना केवल निश्चित असंभव विशेष ही है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में । केवल एक भी वासना अथवा कामना विशेष छोटी से छोटी भी आत्मा विशेष को हिलाने भी नहीं देती इस दुर्गम आवश्यक मार्ग विशेष पर । फिर आगे बढ़ना तो एक तरफ रहा चलने की भी कौन सी कल्पना विशेष धरी जाये विशेष रूप से? आप सुपना विशेष संजोयें बैठे हो हाथ पर हाथ धरे कि कोई प्रेत विशेष आयेगा और आप को कंधे विशेष पर बिठा कर ले जायेगा बिना टिकट विशेष के सचखण्ड विशेष पहुंचने हेतू! दुर्लभ आवश्यक रात विशेष पूरी तरह से बीत विशेष चुकी रंग- तमाशे विशेष-2 में अब जागो सुनहरी सुपनों विशेषो से और केवल घोर भुगतने विशेष की तैयारी विशेष-2 करो निश्चित रूप से । साथ ले जाने वाले आवश्यक दुर्लभ-2 विकराल विशेष-2 कब से आये खड़े हुये हैं सिर पर केवल आपको ले जाने के लिये कब्र विशेष से आप के जागने विशेष का इंतजार विशेष करते हुये यकीनी तौर पर । “सुणीजै”

अर्थात् हे प्यारी आत्मा विशेष अब तू इस प्यारे से दुर्लभ आवश्यक राग विशेष को बार-बार सुन तथा देख । जैसे-2 तेरा अभ्यास विशेष आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष विशेष दृढ़ विशेष होगा तेरा अपना बल विशेष आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष विशेष होने लगेगा इस शरीर रूपी किले विशेष से सदा के लिये छुटकारा विशेष प्राप्त करने के हेतू ही निश्चित रूप से । “तित घट अंतर चानणा” अर्थात् फिर तेरे अन्तर में दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष निरंतर प्रत्यक्ष हो जायेगा यकीनी तौर पर । यह दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष कहीं बाहर से प्रत्यक्ष विशेष नहीं हुआ यह यहां पर पहले से ही निरंतर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है । ये जो काला सा स्याह अंधकार विशेष व्याप्त है यह केवल तेरा अपना ही कमाया हुआ अनंत जन्मों विशेषों का दुर्लभ-2 पाप विशेष ही है जिसे ओड़ विशेष कर शैतानी ताकतें आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष बैठी हुई हैं विशेष तौर पर तुझे रोकने अथवा भ्रमाने हेतू ही निश्चित रूप से । अपने सभी पापों विशेषों का पूरा-2 भुगतान विशेष-2 पूरी तरह से चुकाये बिना ये आवश्यक गहन अंधकार विशेष पूरी तरह से छंटने विशेष वाला नहीं है यकीनी तौर पर बेशक तू अनंत सिफारिशें विशेष-2 लगवाता फिर दुर्लभ-2 महान-2 चालाकियां विशेष-2 अपनाते हुये भी तेरे पल्ले केवल यही आवश्यक भयानक सा घौर अंधकार विशेष ही प्रत्यक्ष उपलब्ध होगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से निश्चित तौर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों सिआणों विशेष-

2 दुर्लभों महानों। “कर भगत मिलीजै” अर्थात् “कर” यानी के आवश्यक पुरुषार्थी विशेष बन निश्चित रूप से। “भगत” यानी के दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म के आवश्यक निश्चित अर्थ विशेष को विचार कर प्रमाणिक तौर पर व्यवहारिक रूप से अपना दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष के अनुसार चरितार्थ स्वरूप विशेष बनने के लिये अपना पिछला बकाया विशेष अनंत जन्मों विशेषों का पूरी तरह से चुका आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से तथा आगे की तौबा विशेष कर पूर्ण ईमानदारी विशेष के साथ सदा के वास्ते प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से तभी ये “भगत” लफज विशेष पूरी तरह से सार्थक विशेष बनेगा और फिर तभी “मिलीजै” लफज विशेष भी अवश्य कोई सार्थक विशेष बना ही देगा पूरी तरह से यकीनी तौर पर जब तू पूरी आवश्यक सफाई विशेष से पूर्ण ईमानदारी विशेष के साथ उस दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को निरन्तर पुकारेगा ऐसे जैसे मछली विशेष तड़पती है नीर विशेष के लिये तभी तेरी प्यास विशेष जन्मों-2 की अवश्य आवश्यक रूप से बुझा ही दी जायेगी निश्चित रूप से। “सभ मह एक वरतदा जिन आपे रचन रचाई” अर्थात् जिस दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ने ये अनंत ब्रह्माण्ड प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किये है वह निरंतर जड़ चेतन में भरपूर लबालब विशेष तौर पर प्रत्यक्ष निश्चित समाया हुआ है अर्थात् पूर्ण साध विशेष के बैठा है प्रत्यक्ष निरन्तर धारण विशेष करते हुए यकीनी तौर पर।

सभी आत्माओं को उस दुर्लभ आवश्यक सत्ता विशेष ने एक सी आवश्यक समर्था विशेष भरपूर बख्शी विशेष हुई है निरंतर सभी को वह आवश्यक रूप से भरपूर तथा बराबर का ही मिला हुआ है । उस को प्रत्यक्ष अनुभव करना मानव जन्म का जिंदगी भर का अनंत जन्मों विशेषो का निजी आवश्यक दुर्लभ व्यवसाय विशेष ही है प्रत्येक आत्मा का आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर । केवल स्वयं को ही अनंत भयानक-2 दुखों विशेषो से सदा के लिये पूर्ण छुटकारा विशेष प्राप्त करवाने के हेतू ही आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष का अंश प्रकाश विशेष के सिवाय ओर क्या हो सकता है ? अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” रूपी नाम विशेष का अंश केवल आवश्यक नाम विशेष ही है प्रत्येक काल में तू आत्मा विशेष दुर्लभ । इस शरीर में तेरी आवश्यक दुर्लभ सत्ता विशेष रोम-2 में निरंतर भरपूर विशेष समायी हुई है निश्चित रूप से । इस दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष के एक छोटे से छोटे कण विशेष को भी न तो कोई प्रत्यक्ष कर सकता है और ना ही कोई धारण विशेष करने में समर्थ है आंशिक रूप से भी तेरे सभी महान-2 नकली परमात्माओं विशेषो सहित सभी मिल कर के भी केवल असमर्थ लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनायेगें आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो! तेरा धन्धा विशेष क्या है ? हाथ में तेल की बोतल विशेष लिये फिरता है कि मैं अवश्य ही

कुछ कर के दिखा ही दूंगा नकली-2 पातशाहीं विशेषों की कृपा विशेष से ये बोटल विशेष अवश्य ही तेरे कुल समबन्धों सहित सभी का निश्चित आवश्यक निपटारा विशेष-2 करने में ही केवल आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष ही साबित होगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से पारब्रह्म तक पहुंचने की भरपूर समर्था विशेष प्रत्येक आत्मा विशेष में निरंतर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में जहां पर पहुंच कर जीव का जन्म-मरण आवश्यक रूप से अवश्य स्वतन्त्र ही हो जाता है यकीनी तौर पर बाहर से कहीं से भी कुछ भी उपलब्ध विशेष ही नहीं होना जो कुछ भी प्रत्यक्ष विशेष होगा केवल तेरे अपने विशेष आवश्यक शरीर विशेष में ही होगा । सभी ब्रह्मण्डों विशेषों का दुर्लभ अष्क विशेष तेरे अपने ही शरीर विशेष में आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है । जितना कुछ भी प्रत्यक्ष विशेष कर लेगा अपने ही निजी आवश्यक प्रयास तथा ^{८८}प्रभु^{९९} की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से अवश्य आवश्यक रूप से केवल उतने ही ब्रह्मण्डों विशेषों का केवल तुझे ही माणिक विशेष बना दिया जायेगा निश्चित रूप से ना एक तिल कम ना अधिक विशेष तौर पर सब कुछ विशेष-2 तथा दुर्लभ-2 भी पहले से ही पूर्ण निश्चित विशेष है । केवल प्रत्यक्ष होगा अपने-2 समय विशेष के अनुसार ही इस पूर्व लिखित निश्चित विशेष में तब्दील विशेष करने में सभी ताकतें दुर्लभ-2 तथा विशेष-2 भी केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही हैं आंशिक रूप

से भी यकीनी तौर पर आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में अब जितना भी उद्यम विशेष आवश्यक रूप से आत्मा विशेष करेगी उतनी ही दुर्लभ आवश्यक समर्था विशेष आत्मा के पूर्व निश्चित दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष में और अलग से अवश्य जोड़ दी जायेगी आवश्यक रूप से “प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक “दरबारे खास” से ना एक तिल कम ना अधिक नियमानुसार निश्चित रूप से प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार यकीनी तौर पर ।

“कागा कंरग ढडोलिआ सगलिया खाइआ मास” ।

“एह दुई नैनह मत छूऊह पिर देखन की आस” अर्थात आवश्यक उद्यम विशेष की अवस्था विशेष ब्यान की गई है कि “शैतानी ताकतें” इस शरीर विशेष को हजारों बार चाट जाती हैं दीमक विशेष की तरह से परंतु कोई अवश्य आवश्यक रूप से कायम विशेष रखता है स्वयं को प्रत्यक्ष विशेष करने से पहले निश्चित रूप से। दुनिया के खून विशेष से स्वयं को रंगने विशेष वाले सर्वत्र प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है परंतु अपने ही मांस विशेष को अपने ही हाथों विशेषो से तर्पण विशेष करने वाली आत्मा विशेष आवश्यक रूप से अवश्य दुर्लभ विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “जोबन जादे न डरां जे सह प्रीत न जाई” अर्थात अपनी समस्त वासनाओं विशेषो को अपने ही हाथों विशेषो द्वारा जलाना उपलब्ध की गई आवश्यक उपलब्धियों विशेषो सहित केवल एक “अकाल पुरख परमात्मा” के दुर्लभ आवश्यक शौंक

विशेष अथवा प्यार विशेष की खातिर अवश्य दुर्लभ ही है प्रत्येक काल में यहां क्या धन्धा है ? जिन्दगी भर का भोग विशेष-2 आज अभी ही पूरा का पूरा तुरंत भोग विशेष लेने के लिये निरन्तर दुर्लभ व्यस्त विशेष है आत्मा विशेष पता नहीं कल जोबन विशेष रहे या न रहे काल का क्या भरोसा! “फरीदा किंती जोबन प्रीत बिन सुक सुक गए कुमलाए” अर्थात् एक “अकाल पुरख परमात्मा” रूपी खसम विशेष से मिलने की आवश्यक तड़प विशेष के अभाव में सभी वासनाओं विशेषों की पूर्ति केवल ऐसे ही है जैसे फूल खिलने से पहले ही कुमलहा विशेष जाये अर्थात् “शैतानी ताकतें” अनन्त भयानक-2 कामनाओं विशेषों रूपी फंदों विशेषों में पूरी तरह से फंसा विशेष कर दुर्लभ आवश्यक मानव जन्म विशेष को पूरी तरह से हजम विशेष कर जाती है निश्चित रूप से । आप आजीवन केवल जवान विशेष दिखने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष रहते हो । “चिंत खटोला वाण दुख बिरह विछावण लेफ” अर्थात् सच्ची आत्मा विशेष किस मंजी विशेष पर आराम विशेष फरमाती है? घोर आवश्यक चिंता “प्रभु मिलन” की चारपाई विशेष अभाव रूपी दुख विशेष से बुनी हुई और मिलने की घोर प्यास तड़पते हुए बिरह रूपी गद्दा विशेष बिछा रखा है इस आवश्यक आराम देह बिस्तरे विशेष पर लेट कर दुर्लभ सच्ची आत्मा विशेष निरन्तर तड़पती है अपने दुर्लभ आवश्यक खसम विशेष से मिलने विशेष के लिये विरही विशेष की तरह से दुखी

विशेष होती हैं कि अभी तक आवश्यक **“प्रभु मिलन”** सम्पन्न विशेष नहीं हुआ इस चिंता विशेष में निरंतर रोज अवश्य थोड़ा-थोड़ा सा मरती विशेष है पूरा का पूरा मर जाने विशेष तक आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से । **“फरीदा तन सुका पिंजर थियां तलिआं खूँडह काग। अजै सु ख न बाहुँडिआ देख बदे के भाग”** अर्थात् सब कुछ तो लुट विशेष चुका परन्तु ये मदे कर्म विशेष आत्मा के खत्म होने का नाम ही नहीं लेते शैतान की आंत विशेष की तरह से मुंह खोले प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही रहते हैं अपना निवाला विशेष बनाने के लिये आत्मा विशेष निश्चित रूप से । इस आवश्यक निपटारे विशेष के अभाव में कैसे कार्य विशेष सिद्ध हो सकता है आत्मा विशेष का ? **“एह हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेख”** अर्थात् सब और केवल लोभी-स्वार्थी तथा खूनी दरिंदे विशेष ही आत्मा को निरंतर नोचने विशेष के लिये प्रत्यक्ष तैयार विशेष खड़े हैं जैसे काग विशेष मांस विशेष के लोभ में निरंतर नोचता विशेष है । केवल एक सचा साहिब अर्थात् दुर्लभ आवश्यक **“परम चेतन सत्ता”** विशेष ही निरंतर प्रत्यक्ष आत्मा की पूर्ण समर्थ रक्षक विशेष ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस दुर्लभ आत्मा विशेष ने ज़िन्दगी का दो तिहाई हिस्सा केवल गिरे हुए पत्तों विशेष को खा कर गुजारा विशेष किया तथा घोर एकांत वास में निरंतर तड़पती विशेष रही बिरह की अग्नी विशेष में अपने को निरंतर जलाती विशेष हुई आवश्यक **“प्रभु मिलन”** हेतू तब

कही जा कर बाबा फरीद कहलाई फिर अनंत जन्मों की घौर तड़प विशेष कैसे देखी जा सकती है अंधी बहरी आत्मा द्वारा । आज मुर्दे विशेष को केवल देखकर ही पूर्ण मुक्ति विशेष गांठ बांध ली जाती है तथा [॥]प्रभु[॥] का स्लाइज विशेष काट-2 कर दुर्लभ दान विशेष कर दिया जाता है जो निशानी है प्राणी के विकसित विशेष होने की केवल एक दुम विशेष के अभाव में निश्चित रूप से केवल घौर-2 पाकों विशेषों को रेशन विशेष करने का पूर्ण बंदोबस्त विशेष अनंत काल तक के लिये आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर निश्चित आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष [॥]प्रभु[॥] के [॥]दरबारे खास[॥] से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया हुआ समस्त दुर्लभ-2 कारस्तानियों विशेषों का निश्चित इलाज रूपी आवश्यक प्रमाणिक परिणाम विशेष! [॥]कहे नानक सच धिआइये[॥] अर्थात् नानक नाम की आत्मा विशेष का आवश्यक कथन विशेष है कि सच अर्थात् केवल दुर्लभ आवश्यक [॥]परम चेतन सत्ता[॥] विशेष को ही निरंतर पुकारो धन्यवाद करो केवल स्वयं की ही आवश्यक स्थिरता विशेष के हेतु निश्चित रूप से । अब आप का क्या धन्या विशेष है कि जो ये सच्चाई विशेष प्रत्यक्ष कर रही है आवश्यक दुर्लभ आत्मा विशेष उसी के नाम विशेष के ही ढोल पीटे जा रहे हो बाजे बजाये जा रहे हो या तो नानक ने झूठ ही लिख दिया अर्थात् अंदर से अपना बाजा बजना पसंद था बाहर से प्रभु को नकली से लिख दिया । अब ये बात

विशेष आपको हजम विशेष नहीं होगी निश्चित रूप से। जरा सोचो अगर कोई दूसरा आपकी मर्जी विशेष के विपरीत कुछ ओर ही करे बेशक आपकी सन्तान विशेष ही क्यों ना हो तब आप क्या करोगे तंग आकर अवश्य दो थप्पड़ विशेष ही मुंह पर जमा दोगे निश्चित रूप से स्थिति विशेष से बचने विशेष के लिये यकीनी तौर पर । फिर नानक तो लिख कर के कुछ दे गये और आप कर केवल लिखित विशेष से विपरीत विशेष ही रहे हो । फिर कौन सा नानक विशेष आप की इन करतूतों विशेषो से प्रसन्न होगा? अर्थात् केवल घोर अप्रसन्नता विशेष ही आपके खाते विशेष में दुर्लभ एकत्र विशेष हो रही है दुर्लभ-2 आत्माओं विशेषो की केवल आप के डूबने का निश्चित दुर्लभ आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष ही है धुर विशेष से प्रत्यक्ष उपलब्ध किया हुआ विशेष निश्चित रूप से । प्रसन्नता तो केवल शैतानी ताकतों की ही निरंतर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो रही है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुर विद्वानों विशेषो । निज घर विशेष पहुंच चुकी आत्माओं विशेषो का इन अधूरे मुल्कों विशेषो से कोई भी सरोकार विशेष नहीं रहता। अगर रखना भी चाहेंगी दुर्लभ आत्मायें विशेष तो शरीर कहाँ से लायेंगी स्वयं को प्रत्यक्ष विशेष करने के लिये? बिना शरीर अथवा आवरण विशेष के आप कैसे उन से समबंध विशेष स्थापित कर लोगे? जब-2 शैतानी ताकतें भुलवा देती हैं दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को

दुर्लभ आत्मा विशेष “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया खास” से आपको फिर से याद विशेष करवा देती है आधारभूत दुर्लभ आवश्यक जड़ अथवा मूल विशेष की तथा फिर अपने “निज घर” विशेष में ही पूरी तरह से लीन विशेष हो जाती है निरंतर सदा के वास्ते । जो कोई भी आत्मा दुर्लभ आत्मा विशेष के ठीक मार्ग दर्शन विशेष को विचार विशेष कर व्यवहारिक रूप से अपनाती हुई चलती विशेष है केवल अपनी ही निजी जिन्दगी विशेष में धीरे-2 चलते विशेष हुए वे भी अपने दुर्लभ आवश्यक मुकाम विशेष पर पहुंच ही जाती है तथा सदा के लिये भयानक-2 दुखों विशेषो से पूर्ण छुटकारा विशेष प्राप्त कर ही लेती है प्रभु की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से निश्चित रूप से। जो आत्मायें दुर्लभ लिखित विशेष के अनुसार चलने विशेष की बजाये इन दुर्लभ विशेषो के नाम विशेष के केवल ढोल बाजे ही बजाती रहती है नाचती कूदती रंग तमाशे विशेष में ही दुर्लभ व्यस्त रहती हैं उन आत्माओं विशेषो का तो केवल डूबना विशेष ही निश्चित है इस भयानक-2 घोर दुखों विशेषो से लबालब भरे हुए भवसागर विशेष में निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “सुच होवे ता सच पाइये” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष जो कि प्रत्येक काल में निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाला निश्चित “सत्य” विशेष ही है यकीनी तौर पर केवल “सुच” यानी के पूर्ण आवश्यक दुर्लभ पवित्रता विशेष ही

आत्मा विशेष की प्रमाणिक तौर पर प्रत्यक्ष विशेष की हुई इस दुर्लभ आवश्यक सच विशेष रूपी पवित्रता के दुर्लभ महान सागर विशेष में समाने का दुर्लभ आवश्यक निश्चित साधन विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से। जिन आत्माओं विशेषों का लोभ के अथाह सागर विशेष में पूरी तरह से डूबना विशेष तथा स्वार्थ के दुर्लभ कीचड़ विशेष में रोज-2 निरंतर नहाना विशेष है दूसरी आत्माओं विशेषों के दुर्लभ आवश्यक मार्ग विशेष में दुर्लभ-2 विघ्न विशेष-2 प्रस्तुत करने हेतू उन दुर्लभ चतुर विद्वानों विशेषों का तो दुर्लभ सच्चा आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष **“प्रभु”** के दुर्लभ आवश्यक **“दरबारे खास”** से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया हुआ केवल घौर-2 नरकों विशेषों को रोशन विशेष करने का ही है अनंत काल तक के लिये आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से गांठ बांध लो दुर्लभ-2 चतुर विद्वानों असुचों विशेषों निश्चित रूप से । आवश्यक पूर्ण सच विशेष के अभाव विशेष में दुर्लभ आवश्यक **“परम चेतन सत्ता”** विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव करना विशेष रूप से केवल असंभव लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनाना है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्येक काल में निश्चित तौर पर । **“जे वडभाग होवह वड उच्चै”** अर्थात् ये आवश्यक दुर्लभ सुच्यता विशेष अनन्त जन्मों विशेषों का जिन्दगी भर निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष रहने का प्रत्येक आत्मा का केवल निजी दुर्लभ आवश्यक व्यवसाय विशेष ही है निश्चित

रूप से । पिछले जन्मों विशेषों में किया गया सभी प्रकार का दुर्लभ-2 आवश्यक उद्यम विशेष आज के इस प्रत्यक्ष उपलब्ध दुर्लभ जन्म विशेष का निश्चित भाग्य विशेष ही है जो कभी भी किसी भी यत्न विशेष से आंशिक रूप से भी बदला नहीं जा सकता निश्चित तौर पर तथा इस जन्म विशेष में किया जाने वाला प्रत्येक छोटे से छोटा आवश्यक कार्य विशेष भी अगले जन्मों विशेषों का निश्चित दुर्लभ आवश्यक भाग्य विशेष ही है जो फिर अगले जन्मों विशेषों में आंशिक रूप से भी अनन्त अकथ प्रयत्नों विशेषों को पूरी तरह सम्पन्न विशेष करने के बावजूद भी बदला ही नहीं जा सकेगा परंतु आज ये दुर्लभ आवश्यक मौका विशेष आप के अपने ही हाथ विशेष पर प्रत्यक्ष धरा हुआ है निश्चित रूप से अपने ही भाग्य विशेष को आवश्यक रूप से निश्चित उज्ज्वल विशेष बनाने का यकीनी तौर पर यानी के आप जैसा भी चाहें केवल आज ही तुरंत अपने ही निश्चित आगे आने वाले प्रत्यक्ष भाग्य विशेष को बदलने में पूर्ण समर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से कल ये दुर्लभ अवसर विशेष आप को प्राप्त होने वाला केवल निश्चित रूप से नहीं विशेष ही है यकीनी तौर पर । इस तरह से थोड़ा-2 जोड़ कर के ही बड़े भाग्य विशेष बनते हैं आवश्यक रूप से ऊंचे विशेष जो इसे सार्थक विशेष बनाने में समर्थ विशेष करते हैं आत्मा विशेष को ^{८८}नानक नाम जपे सच सूचे^{९९} अर्थात् ऊंचे भाग्य विशेष तभी प्रत्यक्ष विशेष होते हैं जब आत्मा विशेष निरंतर पवित्रता विशेष

को एकत्र करने में आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से दुर्लभ निरंतर घोर व्यस्त विशेष रहती हैं आजीवन निश्चित रूप से । फिर जब अंदर बाहर से पूर्ण पवित्र अथवा सत्य विशेष हो करके आत्मा विशेष निरंतर पुकारती विशेष है “हक-हक-हक” अर्थात् नाम विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष जो प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाला निरंतर पवित्रता अथवा सत्यता का दुर्लभ आवश्यक महासागर विशेष ही है तभी कोई बांह पकड़ कर अवश्य निकाल विशेष ही लेता है इस भयानक अन्धे घोर-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषो से लबालब भरे हुए कुंए विशेष से सदा के लिये आवश्यक छुटकारा विशेष दिलवा ही देता है सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष को निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर समस्त पापों विशेषो की जड़ विशेष केवल लोभ अथवा ईर्ष्या विशेष ही है । “जहां लोभ तह काल है जहां झूठ तह पाप” “जहां ज्ञान तह धरम है तथा जहां खिमा तह आप” अर्थात् सभी को पूर्ण बक्शने वाला आवश्यक रूप से वो आप यानी के केवल “अकाल पुरख परमात्मा” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष ही है प्रत्येक काल में फैसला प्रत्येक आत्मा का केवल अपना निजी आवश्यक व्यवसाय विशेष ही है प्रत्येक काल में अर्थात् पूर्ण आवश्यक मुक्त विशेष होना चाहती हैं तो अपने को आवश्यक तौर पर बक्शने योग्य साबित विशेष करे प्रमाणिक तौर पर निरंतर व्यवहारिक रूप से ।

आवश्यक काबिल विशेष बनने मे अवश्य देर विशेष ही लगती है
आवश्यक रूप से परंतु बक्शने विशेष में कोई देर ही नहीं लगती
“प्रभु” के “दरबारे खास” से निश्चित रूप से नियमानुसार यकीनी
तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित आवश्यक प्रमाणिक सत्य विशेष
जितना ज्ञान विशेष आत्मा विशेष को आवश्यक रूप से अवश्य
होना ही चाहिये उस से बढ़कर शुद्ध रहानी ज्ञान विशेष दुर्लभ
आवश्यक “प्रभु” प्रेरणा ने आप के सामने प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष
कर दिया है असंभव को भी संभव विशेष बनाते हुऐ निश्चित रूप
से अब आपने केवल स्वयं को इस दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष
को व्यवहारिक रूप से धारण विशेष करते हुऐ “धर्मात्मा” विशेष
स्थापित करते हुऐ केवल स्वयं को ही विशेष करना है “प्रभु” के
दुर्लभ आवश्यक “दरबारे खास” में केवल स्वयं के अपने ही
आवश्यक “निज कल्याण” विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से करना
विशेष केवल आत्मा विशेष ने ही है तथा करवाना विशेष केवल
“अकाल पुरख परमात्मा” विशेष ने ही है निश्चित रूप से प्रत्येक
काल में अगर कुछ भी थोड़ा सा भी तीसरा कोई भी आत्मा विशेष
तथा दुर्लभ आवश्यक “परम आत्मा” के बीच अथवा दरम्यान
विशेष में होगा तो आपका कुछ भी कार्य विशेष आंशिक रूप से
भी समपन्न विशेष होना केवल पूर्ण असंभव विशेष ही है प्रत्येक
काल में निश्चित रूप से गांठ बांध ले हे दुर्लभ आत्मा विशेष ।
इसलिये झाड़ू विशेष लगा कर सभी दुर्लभ-2 महान-2 कचरा

विशेष-2 घर विशेष से बाहर निकाल दे आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से केवल अपने ही घर विशेष को पूर्ण साफ अथवा पवित्र विशेष बनाने के हेतु ही निश्चित रूप से तभी वो घोर सफाई पसन्द आवश्यक दुर्लभ विशेष तेरे घर विशेष में भी अवश्य आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष हो कर के तुझे भी अवश्य पवित्र विशेष बनायेगा ही यकीनी तौर पर सदा के वास्ते । इस घोर सफाई पसन्द दुर्लभ आवश्यक विशेष को अपने घर विशेष में जरा सा भी कचरा होना पसंद विशेष ही नहीं है आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से। इस आवश्यक सफाई विशेष में सब से बड़ी रूकावट विशेष मन विशेष की ही है। मन को तो केवल कचरा विशेष-2 ही पसन्द आता है इसीलिये इस दुर्लभ कचरे विशेष को ही निरंतर एकत्र विशेष करने में ही दुर्लभ व्यस्त विशेष रहता है जिन्दगी भर अपने को बहुत चतुर विशेष समझता है सोचता है कि इस की चालाकियों विशेषो से सभी केवल अनभिज्ञ विशेष ही हैं । यही भूल विशेष इस को आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार दुख विशेष-2 भुगतने के लिये अवश्य मजबूर विशेष कर देती है निश्चित रूप से । “जह जह मन तू धावेंदा तह तह हर तेरे नाले” अर्थात् हे चतुर मन विशेष तूं दिनभर जहां जहां भी दौड़ता फिरता है ना वो दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष भी निरंतर तेरे साथ ही सदा प्रत्यक्ष विद्यमान उपलब्ध विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

“मन सिआणप छोड़ीऐ गुर का सबद समाले” अर्थात् जब तक आत्मा विशेष मन की संगत विशेष से स्वयं को पृथक् विशेष नहीं करती शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” का प्रत्यक्ष उपलब्ध होना केवल असम्भव विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “जग हउमै मैल दुख पाइआ मल लागी दूजे भाई” अर्थात् जग यानी के वस्तु-पदार्थ तथा समबन्ध केवल एक निश्चित मैल विशेष ही है । हउमै अर्थात् जो कोई भी आत्मा विशेष इस मैल विशेष को एकत्र विशेष करती है अवश्य मैली विशेष हो ही जाती हैं फिर इस मैल विशेष का आवश्यक प्रतिफल विशेष अथवा हउमै प्रत्यक्ष होता है जो केवल एक भयानक सा निश्चित दुख विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से जो आत्मा विशेष को अनन्त काल के बाद भी विशेष आवश्यक रूप से भुगतने के लिये अवश्य मजबूर विशेष होना ही पड़ता है यकीनी तौर पर । “मल हउमै धोती किवै न उतरै जे सिउ तीरथ नाई” अर्थात् ये हउमै रूपी आवश्यक प्रतिफल विशेष कैसे बदल सकता है अनन्त विशेष-2 प्रयत्न करने के बाद भी आत्मा को आवश्यक रूप से पूरा-2 भुगतना ही पड़ता है जुर्माना विशेष-2 तेरे सभी प्रकार के दर्शन स्नान हिमालय-हेम कुण्ड स्नान अमृत विशेष-2 स्नान कुण्ड स्नान-हरीद्वार गंगा-त्रिवेणी स्नान कीरतपुर- ब्यास स्नान इत्यादी दुर्लभ-2 महान-2 तीर्थ स्नान सभी मिल कर के भी केवल तेरी ही एकत्र की गई मैल विशेष को

आंशिक रूप से भी धोने में आवश्यक रूप से केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । जो कर्म विशेष तेरे द्वारा किया जा चुका है उसके फल विशेष को बदलने में जल विशेष कैसे समर्थ विशेष हो सकता है मूर्ख प्राणी (चतुर विद्वानों विशेषो)? “अन्तर मैल जे तीरथ नावह तिस वैकुण्ठ न जाणा। लोक पतीणे कछू न जाणै नाही राम इआणा” अर्थात् मन के जरिये जो कुछ भी मैल विशेष आत्मा ने एकत्र विशेष किया हुआ है वो केवल रुकावट विशेष ही है आत्मा विशेष के आवश्यक “निज कल्याण” रूपी मार्ग विशेष में निश्चित रूप से । आत्मा आगे कभी भी नहीं बढ़ सकती अपना सभी कर्जा विशेष-2 पूरी तरह से चुकाये विशेष बिना हिलना भी केवल निश्चित असंभव विशेष ही है यकीनी तौर पर । सभी प्रकार के दुर्लभ-2 स्थानों विशेषो से केवल लोगों की ही आंखों विशेषो में मिट्टी विशेष झोंकी जा सकती है परन्तु जो दुर्लभ आवश्यक “ताकत विशेष” जड़ चेतन में निरंतर भरपूर समाई हुई है उसे तू विद्वान प्राणी (महा मूर्ख श्रेणी के) केवल मुखौटा विशेष-2 लगा कर कैसे धोखा विशेष देने में सफल विशेष हो सकेगा ? अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को भ्रमाना केवल असंभव लफज विशेष को ही पूर्ण समर्थ विशेष बनाना है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “जल के मंजन जे गत होवे नित नित मेंढक नावह” “जैसे मेंढक तैसे ओई नर फिर-फिर जोनी आवह” अर्थात् यही

जल विशेष के स्नान विशेष से आत्मा अपने कर्मों विशेषों के फल विशेषों से बच सकती है तो फिर उसी जल विशेष में नौ लाख किस्म के प्राणी विशेष-2 निरंतर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही रहते हैं उनमें कैद आत्माओं विशेषों को अवश्य आप के दुर्लभ-2 स्नान विशेषों को सम्पन्न करने से पहले ही पूर्ण मुक्ति विशेष क्यों नहीं उपलब्ध विशेष हो सकी? अभी तक ये बेचारी दुर्लभ-2 आत्मायें विशेष-2 क्यों इन पिंजरों विशेषों में कैद हो कर सिसक विशेष रही हैं अर्थात् जी विशेष रही हैं केवल निरंतर थोड़ा-2 सा भयानक मौत विशेष मरने के लिये ही निश्चित रूप से यानी के जैसे उन कैदी आत्माओं विशेषों का छुटकारा विशेष असंभव विशेष है उसी तरह से तेरा भी छुटकारा विशेष बिना पूरा-2 आवश्यक भुगतान विशेष-2 चुकाये केवल असंभव विशेष ही है प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से इन कुण्डों विशेषों का मोह तुझे भी खींच विशेष कर इन्हीं पिंजरों विशेषों को रोशन विशेष करने के लिये अवश्य ही मजबूर विशेष कर ही देगा आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । जब तू भी इन्हीं निकृष्ट भोगी जूनों विशेषों में कैदी हो करके भयानक-2 आवश्यक दुख विशेष भुगतेगा ना तब तुझे भी अवश्य इन दुर्लभ-2 स्नानों विशेषों का दुर्लभ-2 महातम विशेष-2 व्यवहारिक रूप से अवश्य अनुभव विशेष हो ही जायेगा निश्चित रूप से चतुर विद्वान प्राणी विशेषों!

“मानसा बाचा करमना में देखा दोचख जात” अर्थात् जब आप

स्वयं को इस कैदखाने से मुक्त विशेष करवाओगे तब आप को भी अनन्त महान-2 दुर्लभ श्रेणी के मनुष्य विशेष अपने दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित घोर-2 नरकों विशेषों में भयानक-2 दुख विशेष-2 भुगतते हुए प्रत्यक्ष विशेष दिखायी देंगे आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार केवल अपने ही घोर मदे कर्म विशेषों को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के कारण निश्चित रूप से अर्थात् कर्म विशेष के बन्धन विशेष में बंधा आत्मा विशेष बिना पूरा पूरा भुगतान विशेष चुकाये और किसी भी अनन्त महान-2 उपायों तथा यन्त्रों विशेषों से किसी भी हालत अथवा सिफारिश विशेष से बच ही नहीं सकता निश्चित रूप से । यानी के मन की मैल अथवा कर्म का आवश्यक दुर्लभ फल विशेष तन के स्नान विशेष से कैसे पवित्र विशेष हो सकता है ? ^{८८} **बह बिध करम कमावदे दूणी मल लागी आई** ^{९९} अर्थात् सबसे बड़ा अपराध विशेष है दुर्लभ आवश्यक ^{८८} **परम चेतन सत्ता** ^{९९} विशेष को भूलना तथा मदे कर्मों विशेषों को आवश्यक रूप से पूरी तरह से ना त्यागना । इस दुर्लभ आवश्यक कर्म विशेष को एकत्र विशेष करने के अभाव विशेष में आत्मा विशेष और जो भी कार्य विशेष दुर्लभ महान-2 करेगी केवल अपने अपराधों विशेषों में ही बढ़ोतरी विशेष-2 करेगी आवश्यक तौर पर आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से । दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष का केवल एक ही दुर्लभ आवश्यक अर्थ विशेष है सभी प्रकार के पापों विशेषों से पूरी तरह से सदा के लिये तौबा

विशेष करना तथा पवित्र मन विशेष से निरंतर “प्रभु” को पुकारना प्रत्येक काल में केवल स्वयं के ही आवश्यक “निज कल्याण” विशेष हेतु यकीनी तौर पर । “पड़िए मैल न उतरै पूछह गिआनीआ जाई” अर्थात् जैसे दुर्लभ-2 स्नानों विशेषों से कर्म का फल विशेष नहीं बदलता उसी तरह से केवल पढ़ने विशेष से भी भुगतान विशेष में कुछ भी तबदीली विशेष नहीं होती निश्चित रूप से केवल स्नान लफज विशेष के स्थान पर केवल पढ़ना लफज विशेष सीख लो शेष सभी दुर्लभ-2 महान-2 आवश्यक अर्थ विशेष अपने आप ही प्रत्यक्ष विशेष हो जायेंगे यकीनी तौर पर। ये सच्चाई विशेष किसी सच्चे दुर्लभ ज्ञानी विशेष से ही जानी जा सकती है चल रहे दौर विशेष में तो महान-2 दुर्लभ-2 महा ज्ञानी विशेष-2 स्वयं ही केवल पढ़ने पढ़ाने में पूरी तरह से निश्चित डूब चुके हैं अर्थात् “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” द्वारा इस केवल पढ़ने पढ़ाने नाम की प्यारी लेकिन दुर्लभ मीठी रस से भरी चाशनी विशेष में दुर्लभ-2 महान-2 ज्ञानी विशेष पूरी तरह से कुल मददगारों दुर्लभों विशेषों सहित डुबो विशेष कर आवश्यक रूप से हज्म विशेष किये जा चुके हैं निश्चित तौर पर। जो आत्मा विशेष स्वयं कैदी महान विशेष है अथवा डूबा विशेष हुआ है पूरी तरह से फिर भला आप को तरने विशेष का दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष करने में कैसे समर्थ विशेष हो सकता है ? केवल पढ़ने विशेष से संबंधित सभी धन्द्वे विशेष आत्मा विशेष के पूरी तरह से इस भयानक अंधे कुंए विशेष

में स्वयं के डूबने का निश्चित आवश्यक दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष ही है केवल अपने स्वयं के ही हाथों विशेषो से लिख कर के प्रत्यक्ष किया हुआ अपने ही गले विशेष का दुर्लभ आवश्यक श्रृंगार विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । यदि आप भी सुन्दर तथा दुर्लभ आकर्षित विशेष दिखना चाहते हैं तो आप भी अपनी सजावट विशेष के लिये इस दुर्लभ आवश्यक श्रृंगार विशेष के साधन विशेष को अपनाये निश्चित रूप से केवल स्वयं के दुर्लभ आवश्यक रूप विशेष को तुरंत पूरी तरह से डुबोने विशेष की ही खातिर यकीनी तौर पर । ^{६६}“मन मेरे गुर सरण आवे ता निरमल होई”^{७७} अर्थात् गुर यानी के शब्द विशेष अथवा दुर्लभ आवश्यक ^{६६}“रागमई प्रकाशित आवाज”^{७७} विशेष ^{६६}“सरण”^{७७} अर्थात् उपलब्ध दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष ^{६६}“अकाल पुरख परमात्मा”^{७७} की आत्मिक प्रेरणा के रूप में का आत्मा विशेष द्वारा परिमाणिक चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप होना केवल तभी ^{६६}“प्रभु”^{७७} की दुर्लभ आवश्यक ^{६६}“दया विशेष”^{७७} से मन विशेष निज कल्याण विशेष के आवश्यक धंधे विशेष में पूरी तरह से संलग्न विशेष होता है तथा निरमल विशेष कहलाता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । ^{६६}“मनमुख हर हर कर थके मैल न सकी थोई”^{७७} अर्थात् देखा देखी सभी किसी न किसी तरह का मुखौटा विशेष-2 लगा कर हरी-हरी विशेष कहते ही है परंतु अन्दर तो अनन्त भयानक-2 वासनाओं विशेषो का अथाह समुन्द्र विशेष निरंतर ठां ठां मार ही रहा है निरंतर सब कुछ पूरी तरह से हज्म

विशेष कर जाने के हेतू ही निश्चित रूप से फिर मैल कैसे मैल विशेष को धोने में समर्थ विशेष हो सकती है? अर्थात् नकली विशेष पुकार कैसे मूल विशेष को आर्कषित विशेष करने में कारगर विशेष साबित हो सकती है ? “मन मैले भगत न होवई नाम न पाइआ जाई” अर्थात् दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष का परिमाणिक चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप विशेष हुए बिना मन और तो सभी कार्य विशेष दौड़ -2 कर करेगा ही केवल आवश्यक “प्रभु बन्दगी सच्ची विशेष” करने में निश्चित रूप से केवल असमर्थ विशेष ही साबित होगा पूरी तरह से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । फिर नाम अर्थात् केवल दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष की उपलब्धी विशेष कैसे हो सकती है आत्मा विशेष को ? यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये मन विशेष की पूर्ण पवित्रता अत्यन्त आवश्यक विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । मन की दुर्लभ आवश्यक पवित्रता विशेष के अभाव में आप के सभी महान-2 दुर्लभ-2 धंधे विशेष-विशेष केवल व्यर्थ का प्रलाप मात्र ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । “मनमुख मैले मैले मुऐ जासन पत गवाई” अर्थात् मन को मुख अथवा प्रसन्नता विशेष में रख कर के किया गया प्रत्येक कार्य विशेष आत्मा विशेष की अपने ऊपर चढ़ाई हुई दुर्लभ मैल विशेष ही है निश्चित रूप से जो आत्मा विशेष को घौर-2 नरकों विशेषो तथा

निकृष्ट भोगी जूनों विशेषो को भुगतने के लिये अवश्य मजबूर विशेष बना ही देगी आवश्यक तौर पर आवश्यकता अनुसार निश्चित रूप से । दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये इससे बड़ा अपमान विशेष और क्या होगा कि अनन्त काल के लिये भयानक-2 दुखों विशेषो को भुगतते हुये भयानक-2 चीत्कार विशेष करती फिरे अनन्त ब्रह्माण्डों विशेषो की स्वामिनी विशेष होने के बावजूद भी दर-दर की ठोकरे विशेष-विशेष खाती फिरे सृष्टि के सिरमौर मनुष्य को ही देख लो कितने है जो निरन्तर भूखे-प्यासे तड़प-तड़प कर जी रहे हैं केवल पूरी तरह से निरन्तर मर जाने के हेतु ही यकीनी तौर पर आप के अपने ही सामने प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है दुर्लभ विकास विशेष का दुर्लभ आवश्यक परिणाम विशेष आवश्यक रूप से दुर्लभ आत्मा विशेष का दुर्लभ आवश्यक मान विशेष केवल दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने में है वो भी दुर्लभ मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में केवल जीते जी ही! बिना इस दुर्लभ आवश्यक अनुभव विशेष के तो मरने के बाद केवल भयानक-2 दुख ही दुख विशेष तौर पर उपलब्ध विशेष होते हैं जो दुर्लभ आत्मा विशेष को आवश्यक तौर पर केवल तड़पा-2 कर रूलाते विशेष हैं “खून के आंसू” निश्चित रूप से जिन्हें पोंछना तो दूर रहा केवल देखने सुनने वाला भी कोई प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही नहीं होता। अपने से निचली जूनों विशेषो का हाल प्रत्यक्ष देख लो

इनके भयानक-2 दुखों विशेषों को दुखने सुनने वाला कौन है जब चाहो मसल दो पैरों से । केवल मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष को पूरी तरह से सुरक्षित विशेष रखने के लिये क्या कुछ नहीं किया जाता अपने ही हाथों विशेषों द्वारा ? जब तक आत्मा मनमुखी विशेष बन कर मैल विशेष-2 एकत्र विशेष करने में दुर्लभ व्यस्त विशेष है इसे आवश्यक दुर्लभ मान विशेष की प्राप्ति होनी केवल दुर्लभ विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “गुर परसादी मन वसै मल हउमै जाई सामाई” अर्थात् आवश्यक दुर्लभ सच्चे पुरुषार्थ विशेष तथा “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से जब मन विशेष पवित्र विशेष हो कर के इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष में पूरी तरह से निरंतर सलग्न विशेष होता है तो सभी आवश्यक भुगतान रूपी मैल धीरे-2 उतर विशेष जाती है आवश्यक रूप से आत्मा विशेष के ऊपर से तथा आत्मा विशेष पूर्ण निर्मल विशेष हो कर के निर्मलता के अपार सागर विशेष अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष में ही पूरी तरह से लीन विशेष हो जाती हैं अथवा पूरी तरह से समा विशेष ही जाती है सदा के लिये भयानक-2 दुखों विशेषों से पूर्ण आवश्यक दुर्लभ छुटकारा विशेष प्राप्त कर के यकीनी तौर पर निश्चित रूप से । “जिउ अंधेरे दीपक बालीऐ तिउ गुर गिआन अगिआन तजाई” अर्थात् जैसे दीपक का प्रकाश अन्धेरे का नाश विशेष करने में पूर्ण आवश्यक समर्थ विशेष है उसी तरह से एक

“अकाल पुरख परमात्मा” द्वारा प्रत्यक्ष की गई दुर्लभ आवश्यक आत्मिक प्रेरणा विशेष भी प्रत्येक दुर्लभ आत्मा विशेष के घोर अज्ञानता रूपी अंधकार विशेष को पूरी तरह से नष्ट विशेष करने में आवश्यक रूप से पूर्ण समर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । अर्थात् दुर्लभ आवश्यक “शुद्ध रूहानी ज्ञान” विशेष केवल आत्मा विशेष के ही निज आवश्यक कल्याण विशेष हेतु दुर्लभ आवश्यक पथ निर्देशन केवल सच्ची दुर्लभ “प्रभु प्रेरणा” विशेष ही है यकीनी तौर पर आत्मा विशेष की निजी आवश्यक मित्र अथवा संबंधी विशेष दुर्लभ आवश्यक सम्पत्ति विशेष के रूप में प्रत्येक काल में निश्चित अटल आवश्यक पूर्ण सत्य विशेष ही है । इस दुर्लभ आवश्यक “सच्ची प्रभु प्रेरणा” के अभाव में आत्मा विशेष केवल भटकती विशेष हैं भूखी-प्यासी तड़पती हुई अज्ञानता के गहन अन्धकार विशेष में-दर-दर की ठोकें विशेष-2 खाती हुई-अनन्त भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषो-2 को सहती है “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” के हाथों विशेषो के द्वारा निश्चित रूप से । “गुर सेवा ते अमृत फल पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई” अर्थात् गुर की सेवा विशेष से अमृत यानी के अमर कर देने वाला आत्मा विशेष को फल विशेष अवश्य उपलब्ध होता है जिस से त्रिसना अर्थात् आग विशेष आवश्यक रूप से पूरी तरह से बुझा विशेष जाती है जो दुर्लभ आत्मा विशेष को इन्हीं मुल्कों विशेषो में कैद विशेष कर के निरंतर जलाती

विशेष रहती है अथवा रोके रहने पर अवश्य मजबूर विशेष करती है निश्चित रूप से हउमै यानी के आवश्यक प्रतिफल विशेष के रूप में सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों विशेषों द्वारा यकीनी तौर पर अब गद्दीधारी इत्यादि ^{७७}गुरु^{७७} विशेषों दुर्लभ-दुर्लभ महानों की सेवा विशेष तो सभी कर ही रहे हैं विशेष तौर पर इन्हें प्रसन्नचित रखने की खातिर प्रभु के भी दुर्लभ विशेष पिता श्री होने के कारण परंतु ये दुर्लभ आवश्यक फल विशेष अमर विशेष कर देने वाला दुर्लभ आत्मा विशेष को किसको प्राप्त हुआ है भला जो प्राप्त करके अपनी त्रिसना रूपी आग विशेष को बुझाने में पूर्ण सफल विशेष हो सका हो निश्चित रूप से तथा अपने घर विशेष तक पहुंचने में स्वयं को योग्य विशेष बना सका हो इन शैतानी पंजो विशेषों से सदा के लिये आवश्यक मुक्त विशेष करवाते हुए यकीनी तौर पर ? इन दुर्लभ-दुर्लभ महान-महान सेवाओं विशेषों से तो आत्मा विशेष केवल अपनी तृसना रूपी अग्नी विशेष को ही और अधिक घौर प्रज्वलित विशेष करने में ही निरंतर दुर्लभ व्यस्त विशेष हैं ताकी सब कुछ जल्दी ही राख विशेष होने में अधिक समय विशेष न लगे अर्थात् केवल विशेष दुर्लभ-दुर्लभ भयानक विशेष किस्मों के कर्म काण्ड विशेष ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने में आत्मायें दुर्लभ विशेष-विशेष घौर निरंतर मग्न विशेष ही है ताकी आवश्यक प्रतिफल विशेषों के रूप में घौर-घौर भयानक किस्म के तड़पा देने वालों को नरकों विशेषों को अवश्य आवश्यक रूप से निरंतर

रोशन विशेष रखा जा सके केवल शैतानी ताकतों की आवश्यक निजी प्रसन्नता विशेष की ही खातिर निश्चित रूप से । फिर किस “गुरु” विशेष की कैसी सेवा विशेष से ये दुर्लभ आवश्यक आत्मा को अमर विशेष कर देने वाला आवश्यक फल विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है निश्चित रूप से ? “सबद “गुरु” सुरत धुन चेला” सुरत यानी के दुर्लभ आत्मा विशेष शब्द विशेष अर्थात् “रागमई प्रकाशित आवाज” दुर्लभ विशेष जो जड़ चेतन का निरंतर प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला सत्य विशेष ही है निश्चित रूप से पूर्ण समर्थ “गुरु” विशेष कहलाने का इकलौता दुर्लभ आवश्यक अधिकारी विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर धुन अर्थात् इस शब्द विशेष रूपी आवश्यक दुर्लभ “गुरु” विशेष का अपना एक निश्चित गुण राग विशेष है जो आत्मा को निरंतर निश्चित आर्कषित विशेष करता है आवश्यक रूप विशेष से इसी दुर्लभ आवश्यक आकर्षण विशेष की बदौलत ही दुर्लभ आत्मा विशेष में कभी भी किसी भी काल में किसी भी यत्न अथवा उपायों विशेषों से भी आंशिक रूप से तबदीली विशेष होना केवल असंभव लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से इसी दुर्लभ आवश्यक आधार कारण विशेष की ही खातिर इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष को पूर्ण समर्थ “गुरु” विशेष ही कहा गया है दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष

रूपी वाणी धुर विशेष की में गुप्त आवश्यक भेद विशेष के रूप में चेला अर्थात् शिष्य यानी के अनुसरण विशेष करने वाला प्रत्येक काल में निश्चित रूप से दुर्लभ आत्मा विशेष यकीनी तौर पर अर्थात् दुर्लभ आत्मा विशेष इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” रूपी पूर्ण समर्थ “गुरु” विशेष के दुर्लभ आवश्यक आकर्षण विशेष में आकर्षित विशेष हो कर अनुसरण विशेष करती हुई धुर विशेष में अपने दुर्लभ आवश्यक आधार मूल विशेष में ही समा जाती है पूरी तरह से जहां से यह दुर्लभ आवश्यक शब्द विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में आता है निश्चित रूप से इस पूर्ण समर्थ “गुरु” रूपी शब्द विशेष की आवश्यक दुर्लभ सेवा विशेष होती है सेवा सुरत शब्द चित लाये अर्थात् दुर्लभ आत्मा विशेष चित यानी के शैतानी ताकतों विशेषों को जीतने के लिये प्रभु से दुर्लभ आवश्यक मदद विशेष मागे आवश्यक रूप से निर्मल पाक पवित्र विशेष हो कर के व्यवहारिक रूप से निरंतर चरितार्थ स्वरूप विशेष दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष का स्वयं को साबित विशेष करते हुऐ शब्द विशेष का निरंतर दुर्लभ आवश्यक शौक विशेष प्रस्तुत करे प्रमाणिक तौर पर प्रभु के दरबारे खास में निश्चित रूप से केवल स्वयं को ही सदा के लिये आवश्यक मुक्त विशेष करवाने हेतू ही इस भयानक जेल खाने विशेष से यकीनी तौर पर । केवल इसी दुर्लभ आवश्यक सेवा विशेष से आत्मा विशेष का निजी आवश्यक पूर्ण कल्याण विशेष

निश्चित है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से इस दुर्लभ आवश्यक सेवा विशेष में पल्ले से कुछ खर्च नहीं होता ना कहीं विशेष जाना ही पड़ता है ना खुशामद विशेष- विशेष करनी पड़ती है महाचतुर महान-महान दुर्लभों विशेषों की ना किसी तरह की समय इत्यादि विशेषों की पाबन्दी विशेष ही है यह दुर्लभ आवश्यक सेवा विशेष प्रत्येक आत्मा विशेष को प्रभु के दरबारे खास में स्वयं को निश्चित प्रस्तुत विशेष करने की निरंतर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर परंतु इस का क्या इलाज है कि तुझे घोर धक्के विशेष महान निकृष्ट स्थानों विशेषों पर घिघौनों विशेषों दुर्लभों की खुशामदें विशेष-विशेष करते हुए खाने का दुर्लभ आवश्यक खानदानी व्यवसाय विशेष ही है निश्चित रूप से तुझे तो केवल रंग-तमाशे वाला बर्तनों विशेषों को खनखनाते विशेष हुए नाचने कूदने का स्वयं को पूरी तरह से डुबोने विशेष का दुर्लभ-दुर्लभ भण्डारा विशेषों के रूप में निश्चित दुर्लभ आवश्यक व्यस्त कर्मकाण्ड विशेष ही चाहिये यकीनी तौर पर बाहर की समस्त दुर्लभ-दुर्लभ महान-महान विशेष-विशेष कर्मकाण्ड रूपी क्रियाएँ विशेष विशेष स्थानों डेरों विशेषों की आत्मा के पूर्ण पात्र विशेष का निश्चित दुर्लभ महान आवश्यक प्रमाणपत्र विशेष ही है जो आत्मा विशेष के दुर्लभ आवश्यक हाथों विशेषों द्वारा लिख कर स्वयं के ही सुराईदार गर्दन विशेष में आवश्यक फंदे के रूप में बांधा विशेष है हुआ ताकी जल्दी ही पूरी

तरह से दम विशेष घुट जाये और ये पूरी तरह से मर कर आत्मिक मौत विशेष के रूप में आत्मा विशेष सदा के लिये इस घोर भयानक अंधे कुएं विशेष में ही खो जाये अनंत भयानक - भयानक तड़पा देने वाले दुखों विशेषो को पूरी तरह से सहने विशेष के लिये ही निश्चित रूप से आवश्यक ताकत दुर्लभ विशेष केवल एक ही है आत्मा विशेष के पास इसे चाहे अंदर दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष पर खर्च करे अथवा बाहर रंग तमाशे विशेष पर पूरी तरह से बर्बाद विशेष करे प्रत्येक आत्मा विशेष एक वक्त विशेष में केवल एक ही कार्य विशेष में स्वयं को प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर सकती है । इस वक्त विशेष में दो या अधिक कार्यों विशेषो में स्वयं को अनुभव विशेष करवाने में प्रत्येक आत्मा विशेष केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से ऐसा नहीं है कि आप रोटी भी बढ़िया विशेष तैयार कर लोगे और साथ ही बर्तन विशेष भी अच्छी तरह से साफ विशेष कर ही लोगे अवश्य भोजन में कुछ न कुछ कमी विशेष प्रत्यक्ष होगी ही तो सफाई विशेष में भी अभाव विशेष उत्पन्न होगा ही जिससे दूध जैसे पदार्थ विशेष अवश्य ही उबलने से पहले ही फट विशेष जायेंगे आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से शेरनी का दूध विशेष केवल शुद्ध धातु सोने के बर्तन विशेष में ही टिकता विशेष है नकली धातु में दुर्गन्ध विशेष छोड़ देता है फिर प्रभु का दुर्लभ आवश्यक प्रकाश विशेष मैले हृदय रूपी बर्तन विशेष में कैसे

प्रत्यक्ष विशेष होना संभव विशेष है महाचतुर विद्वान प्राणी दुर्लभ-
दुर्लभ विशेष-विशेष अर्थात् अपने दुर्लभ आवश्यक आधारभूत मूल
विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये मन की सुंदरता
विशेष रूप से आवश्यक समर्थ दुर्लभ साधन विशेष ही है प्रत्येक
काल में निश्चित रूप से । “हर का नाम हिरदै मन वसिआ मनसा
मनह समाई” अर्थात् हर यानी के प्रत्येक शह विशेष को हरा
अर्थात् कायम विशेष रखने वाला नाम यानी के दुर्लभ आवश्यक
प्रकाश विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से हिरदै मन
वसिआ अर्थात् मन रूपी हृदय विशेष “शैतानी ताकतों” के दुर्लभ
आवश्यक अंश विशेष को पूरी तरह से बस विशेष में करने का
दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष केवल नाम यानी के दुर्लभ
आवश्यक प्रकाश विशेष ही है प्रत्येक काल में । मनसा मनह
समाई अर्थात् मन के आधार शैतानी ताकतों का जब तक तू पूरा-
पूरा भुगतान विशेष नहीं चुका देगा आवश्यक रूप से अपने
आवश्यक आधार अथवा मूल विशेष दुर्लभ में पूरी तरह से समाने
योग्य कदापि हर्गिज भी नहीं हो सकता दुर्लभ आत्मा विशेष
प्रत्येक काल में निश्चित रूप से तू गांठ बांध ले “हर जीउ कृपा
करह मेरे पिआरे” अर्थात् मेरे पिआरे यानी के प्रत्येक उपलब्धि
विशेष को पूरी तरह से ठुकरा विशेष कर अपने दुर्लभ सच्चे
आवश्यक शौक विशेष को प्रमाणिक रूप से प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष
करे प्रभु के दुर्लभ आवश्यक दरबारे खास में आत्मा विशेष तभी

उसके मूल अथवा आवश्यक आधार रूपी प्यारे खास की कृपा अर्थात् दुर्लभ आवश्यक दया विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध होती है जो जीउ यानी के जीवात्मा विशेष के सभी दुर्लभ-दुर्लभ भयानक-भयानक पापों विशेषों को भी पूरी तरह से हर विशेष लेती है निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्येक काल विशेष में यकीनी तौर पर महाचतुर दुर्लभ-दुर्लभ बिना दुम विशेष के विद्वानों महानों विशेषों अनदिन “हर गुण दीन जन मांगे गुर के सबद उधारे” अर्थात् जन यानी के दुर्लभ आत्मा विशेष दीन यानी के निमाणी विशेष अर्थात् पूर्ण तौर से प्रमाणिक पवित्रता विशेष को व्यवहारिक रूप से साबित विशेष करते हुए मांगे यानी के स्वयं के निजी कल्याण विशेष के हेतू ही दिन रात निरंतर आवश्यक मांग विशेष करे प्रभु से उसके दुर्लभ आवश्यक गुण विशेष की तभी वो दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष आवश्यक रूप से दुर्लभ आत्मा विशेष के केवल अन्तर विशेष में ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होती है गुर के शब्द अर्थात् “रागमई प्रकाशित” दुर्लभ आवश्यक आवाज विशेष के रूप में जो दुर्लभ समर्थ “गुरु” विशेष बन कर दुर्लभ आत्मा विशेष को इस भयानक अंधे जेल खाने से सदा के लिये आजाद विशेष करवा कर आवश्यकता अनुसार आवश्यक निश्चित पूर्ण उधार विशेष ही कर देती है अपने दुर्लभ आवश्यक संग विशेष से दुर्लभ आत्मा विशेष को अपने निज घर विशेष आवश्यक में पहुंचा कर निश्चित रूप से आप का

धन्धा क्या विशेष है दुर्लभ-दुर्लभ भिखारी विशेष बने हुए हो नकली हजूरों-दाताओं महाराजों-पातशाहों इत्यादी निश्चित घोर अधूरों विशेषों के निकृष्ट दरबारों विशेषों का कमीसा सा शृंगार विशेष बनते हुए यकीनी तौर पर । हम भीखक भिखारी तेरे तू निज पत है दाता अर्थात् अगर भिखारी विशेष बनने का ही दुर्लभ आवश्यक शौक विशेष है जो उसके दर विशेष के भिखारी खास बनो जो दाता यानी के सब को प्रत्यक्ष करके निरंतर आवश्यक सुरक्षा विशेष देने वाला दुर्लभ आवश्यक धारण विशेष करने वाला दुर्लभ निश्चित सच्चा दाता विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से केवल वही “अकाल पुरख परमात्मा” ही तुझे भीतरी निश्चित आवश्यक दुर्लभ भीख विशेष देने में पूर्ण समर्थ विशेष है प्रत्येक काल में जो तेरी प्रमाणिक निज पत यानी के आवश्यक आधारभूत मूल विशेष ही है यकीनी तौर पर “संत जन कउ जम जोह न साके रती ऊंच दूख न लाई” संत जन अर्थात् “अकाल पुरख परमात्मा” की आत्मिक प्रेरणा रूपी दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष का निरंतर चरितार्थ प्रमाणिक तौर पर व्यवहारिक स्वरूप दुर्लभ आत्मा विशेष प्रत्येक काल में संत लफज विशेष को पूर्ण सार्थक विशेष बनाने वाला आवश्यक दुर्लभ यकीनी चरित्र विशेष ही है निश्चित रूप से “जम जोह न साके” अर्थात् केवल ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष ही जम यानी के शैतानी ताकतों के भयानक पंजे विशेष से जोह न साके अर्थात् स्वयं को पूरी तरह

से मुक्त विशेष करवा चुकी होती है दुर्लभ आवश्यक शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक ^{८८}“रागमई प्रकाशित आवाज”^{९९} के निर्मल प्रत्यक्ष दुर्लभ आवश्यक बल विशेष पर निश्चित रूप से रती ऊंच दूख न लाई अर्थात् तीनों शैतानी मुल्कों की हद विशेष से पूरी तरह से ऊंचे विशेष उठ चुकी होती है दुर्लभ आत्मा विशेष स्वयं को तीनों भयानक-भयानक तड़पा देने वाले दुखों विशेषो से लबालब भरे हुऐ भण्डारों रूपी शरीरों विशेषो से पूरी तरह से आजाद विशेष करवा लेने की खातिर ही निश्चित रूप से सत लफज विशेष को पूर्ण आवश्यक समर्थ विशेष बनाती है दुर्लभ आत्मा विशेष प्रत्येक काल में महा चक्कर विशेष-विशेष खाने में दुर्लभ घौर व्यस्त हो ? भीड़ रूपी नकली चमक विशेष के दुर्लभ आवश्यक धोखे विशेष में ना आ जाना कहीं सभी नकली विशेष तो केवल शैतानी ताकतों के दुर्लभ आवश्यक नुमाइदें विशेष ही है जिन्हें पूरी तरह से दुर्लभ-दुर्लभ मददगारों विशेषो सहित हजम विशेष किया जा चुका है इन्हीं शैतानी ताकतों द्वारा निश्चित रूप से इस दुर्लभ शमशान भूमि विशेष पर जहां चारों तरफ केवल मौत ही मौत विशेष रूप से दुर्लभ ताण्डव विशेष करने में दुर्लभ व्यस्त है निरंतर में शैतानी ताकतों के दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष ही दुर्लभ आत्मा विशेषो के जरिये दुर्लभ आवश्यक तपस्वी अवतार विशेष इत्यादि संत विशेष प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किये जाते हैं निरंतर निश्चित रूप से दुर्लभ आवश्यक धुर विशेष की रूबरू नकल विशेष

करते हुऐ कम से कम नौगुनी अधिक चमक विशेष रूपी समर्था विशेष प्रत्यक्ष प्रस्तुत करते हुऐ यकीनी तौर पर बड़े-बड़े स्थानों विशेषो को रोशन विशेष किया जाता है शैतानी मुल्कों की आवश्यक मर्यादा विशेष को पूर्ण तौर पर स्थापित विशेष करने के हेतू ही ^{६६}शैतानी ताकतों^{७७} के द्वारा निश्चित रूप से प्रत्येक काल में धुर विशेष से पूर्ण निश्चित निरंतर समबन्ध विशेष रखने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष दुर्लभ काल विशेष में आवश्यक समय सीमा विशेष में ही केवल प्रभु की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष से ही निश्चित प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होती है किसी विशेष धर्म में किसी आवश्यक कार्य अथवा मकसद विशेष को पूरी तरह से सम्पन्न विशेष करने की खातिर निश्चित रूप से शेष काल विशेष में तो केवल ^{६६}शैतानी ताकतें^{७७} ही नाचती तथा नचाती है विशेष तौर पर आवश्यक रूप से बढ़िया-बढ़िया सफेद-केसरी-हरे इत्यादि चोलो विशेषो में सुन्दर-सुन्दर दुर्लभ-दुर्लभ वेशों विशेषो को धारण विशेष किये हुए पूरी सज-धज विशेष के अनुसार प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया जाता है निश्चित रूप से उन्हीं आवश्यक आधारभूत क्रियाओं विशेषो का निरंतर दुर्लभ आवश्यकता अनुसार आवश्यक फायदा विशेष उठाते हुऐ जिन्हें धुर विशेष से कभी प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया गया था आवश्यक रूप से किसी मकसद विशेष को पूर्ण सफल विशेष बनाने के लिये यकीनी तौर पर। जब जब ^{६६}शैतानी ताकतें^{७७} प्रत्येक आवश्यक आधारभूत उपलब्धि विशेष

को पूरी तरह से भरपूर उल्टा विशेष स्थापित विशेष कर देती है निश्चित रूप से चारों तरफ हाहाकार विशेष निश्चित हो जाती है केवल तभी आवश्यक रूप से धुर विशेष से फिर से बहुत थोड़ा सा मांग विशेष के अनुसार लेकिन प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाला निरंतर निश्चित सत्य विशेष प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया जाता है केवल सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष के आवश्यक दुर्लभ कल्याण विशेष की ही खातिर यकीनी तौर पर । जैसे शताब्दियों पहले इस दुर्लभ आत्माओं विशेषों के निज कल्याण विशेष की ही खातिर निश्चित रूप से धुर विशेष से “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध करते हुए यकीनी तौर पर । नानक नाम की आत्मा विशेष दुर्लभ ने केवल माल विशेष को ही धारण विशेष कर के आवश्यक दुर्लभ प्रकाश विशेष को प्रत्यक्ष किया तो “हर गोंबिंद” नाम की दुर्लभ आत्मा विशेष ने समय की मांग विशेष के अनुसार एक नहीं दो शस्त्र विशेषों को धारण विशेष करके दुर्लभ आवश्यक प्रभु प्रेरणा विशेष को दुर्लभ प्रत्यक्ष विशेष किया शेष “गुरु” “गोबिंद सिंह” नाम की दुर्लभ आत्मा विशेष ने प्रत्येक उपलब्धी विशेष को स्वयं की जान सहित एक “अकाल पुरख परमात्मा” की दुर्लभ आवश्यक रजा विशेष की खातिर दुर्लभ कुर्बान विशेष करने का निश्चित दुर्लभ आवश्यक पैगाम विशेष प्रस्तुत किया दुर्लभ आत्मा विशेष के आवश्यक निज कल्याण हेतु ही निश्चित रूप से दसों दुर्लभ

आत्माओं विशेषो ने एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर स्वयं सहित पूर्ण कुर्बान विशेष किया अपने सच्चे दुर्लभ आवश्यक शौक विशेष ^{८८}प्रभु की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष को पूर्ण स्थापित विशेष करते हुये ^{८८}प्रभु की रजा विशेष में स्वयं को पूरी तरह से कुर्बान विशेष करने वाले इस दुर्लभ आवश्यक पैगाम विशेष को पूरी तरह से भुलवा विशेष दिया है निरंतर केवल डुबो देने वाले उल्टे धन्धे विशेषो में ही पूरी तरह से दुर्बल आत्मा विशेष को सलंग्न विशेष रख कर इस से उल्टा धन्धा विशेष ओर क्या होगा कि शेष समय की आवश्यक दुर्लभ लिखित विशेष के अनुसार प्रमाणिक तौर पर व्यवहारिक चरितार्थ जीवन विशेष जीने की बजाय इस दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष की ही पूजा विशेष स्थापित विशेष करवा दी है केवल आत्मा विशेष को अज्ञानता के घोर अंधकार विशेष में पूरी तरह से डुबो कर नष्ट विशेष करने की ही खातिर निश्चित रूप से मुर्दों विशेषो अथवा शक्लों विशेषो को केवल देखने भर से ही पूर्ण मुक्ति बांटी जा रही है ^{८८}प्रभु को काट-काट कर दुर्लभ दान विशेष किया जा रहा है प्रेतों विशेषो का ध्यान विशेष करवाया जा रहा है मरने के बाद दुर्लभ प्रेत विशेष प्रत्यक्ष होता है और पूर्ण मुक्ति विशेष बक्शा दी जाती है भइउरों विशेषो तथा ग्रन्थों - गद्धियों -मूर्तियों-किताबों विशेषो की आड़ विशेष में घर-घर में भयानक घिघौने कर्मकाण्ड विशेष- विशेष निरंतर प्रत्यक्ष विशेष हो रहे हैं घोर-घोर नरकों विशेषो का कैदी दुर्लभ विशेष साधारण

कैदी को पूर्ण आजादी विशेष दिलवा रहा है पूर्ण अंधी बहरी आत्मा मजलूम बेचारी को दोनों हाथों विशेष से निरंतर लूटा विशेष जा रहा है बड़े-बड़े भारी नकली पातशाहों रूपी निकृष्ट परमात्माओं विशेष के जरिये बेचारी आत्मा मजबूर विशेष को निरंतर कुचला विशेष जा रहा है पैरों तले रेंदते विशेष हुए इसी तरह के अनन्त घिघौने-घिघौने कर्म काण्ड विशेष-विशेष “शैतानी ताकतों” ने प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष कर दिये हैं फिर से केवल आत्मा के निश्चित पूर्ण पतन रूपी घोर नाश विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से इसी कारण कुछ आधार भूत क्रियाओं विशेष को आवश्यक रूप से अर्थ सहित व्यवहारिक रूप से ठीक विशेष कर के प्रत्यक्ष विशेष कर दिया गया है “प्रभु” की दुर्लभ दरबारे खास से दुर्लभ आवश्यक “प्रभु” की आत्मिक प्रेरणा विशेष के अनुसार केवल सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष के ही निज कल्याण रूपी आवश्यक शुद्ध रुहानी आत्मिक ज्ञान विशेष हेतू ही निश्चित रूप से आवश्यकतानुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर एक दुर्लभ आत्मा विशेष जो दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष का प्रमाणिक तौर पर चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप विशेष बनने में निरंतर प्रत्यक्ष प्रयत्नशील विशेष है आवश्यक पूर्ण ईमानदारी विशेष से ही केवल बची विशेष हुई हैं निश्चित रूप से शेष सभी ज्यादातर आत्मायें महान-महान दुर्लभ-दुर्लभ विशेषो सहित जमों अर्थात् सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों द्वारा पूरी तरह से हजम विशेष की जा

चुकी है ये सभी निकृष्ट महान-महान तो घौर-घौर नरकों विशेषो तथा निकृष्ट भोगी जूनी विशेषो के पिंजरों दुर्लभो को निश्चित रूप से रोशन विशेष करने के लिये ही निरंतर दुर्लभ घौर व्यस्त है विशेष आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रमाणिक तौर पर चल रहे घौर काल विशेष में अधिकतर आत्मायें असुर वृत्ति की विशेष रूप से प्रत्यक्ष विशेष हुई हैं जो शीघ्र ही अपराधों विशेषो में सलग्न विशेष हो जाती हैं बिना कुछ भी आवश्यक पुरुषार्थ विशेष किये दुर्लभ उपलब्धि विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने की मांग विशेष के कारण निश्चित रूप से । इस तरह के मर्यादा रहित कार्य विशेष-विशेष करवा कर फिर से उन्हें घौर-घौर नरकों तथा निकृष्ट जूनों विशेष में ही घौर लम्बी अवधि विशेष के लिये कैद विशेष कर लिया जाता है यकीनी तौर पर । जो आत्मायें प्रत्यक्ष विशेष हो रही हैं दुर्लभ मानव जून विशेष में ये निचली जूनों विशेषो से प्रत्यक्ष विशेष हो रही है अपनी लम्बी आवश्यक सजा विशेष भुगत लेने के बाद केवल एक दुर्लभ आवश्यक मौका विशेष स्वयं को पूर्ण मुक्त विशेष करवाने का प्राप्त विशेष करते हुये निश्चित रूप से। अगला जन्म मनुष्य का केवल आवश्यक रूप से निरंतर प्रयत्नशील विशेषपूर्ण ईमानदार चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप आत्मा विशेष दुर्लभ को ही उपलब्धि विशेष किया जा रहा है प्रमाणिक तौर पर निश्चित रूप से आवश्यकता अनुसार । ताकी वह अपने ही दुर्लभ आवश्यक कार्य

विशेष में पूरी तरह से सलग्न विशेष रहे इन्हीं दुर्लभ आत्माओं विशेषों के मार्ग विशेष में ^{८८}शैतानी ताकतें^{९९} निरंतर घौर-घौर विघ्न विशेष-विशेष प्रस्तुत विशेष करने में निरंतर प्रयत्नशील विशेष हैं अपने ही पक्ष विशेष की दूसरी आवश्यक आत्माओं विशेषों के जरिये या तो ये दुर्लभ आत्मायें विशेष इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष को पूरी तरह से त्याग विशेष देवें अथवा कुछ कार्य विशेष ऐसे प्रत्यक्ष विशेष कर देवें जिनका भुगतान विशेष करने के लिये इन्हें फिर से बढ़िया-बढ़िया पिंजरों विशेषों जो कि दुर्लभ विशेष है में लम्बी अवधि विशेष के लिए रेशन विशेष करने के लिये आवश्यक रूप से प्रसन्नचित्त विशेष हो कर मजबूर विशेष रहना पड़े इसी आवश्यक मकसद विशेष को पूरी तरह से सफल विशेष बनाने के लिये ही शैतानी ताकतें निरंतर कार्यशील विशेष है सभी तरह के हथकण्डें विशेषों को प्रयोग विशेष में लाते हुये । प्रत्येक पिंजरा विशेष इस तरह से प्रस्तुत विशेष किया गया है कि प्रत्येक आत्मा विशेष अपने उपलब्ध विशेष शरीर में पूर्ण सन्तुष्ट विशेष ही है निश्चित रूप से आप की नजर विशेष में पिंजरा विशेष कितना भी निकृष्ट विशेष ही क्यों न हो सम्बन्धित आत्मा विशेष पूर्ण प्रसन्नचित्त आवश्यक रूप से मग्न विशेष ही है उसे इस पिंजरे विशेष से अलग विशेष होने का दुख विशेष सहना सुपने में भी कदापि हर्गिज भी मंजूर विशेष ही नहीं है किसी भी कीमत विशेष पर आत्मा विशेष अपनी इस प्यारी सी आवश्यक धरोहर विशेष

को आंशिक रूप से भी खोना विशेष पसंद ही नहीं करती । इसी कारण सभी जेलखाने निरंतर भरपूर प्रसन्नचित रोशन विशेष रहते हैं । केवल मोह विशेष तथा वासना विशेष ही आत्मा विशेष को एक पिंजरे विशेष से दूसरे पिंजरे विशेष को भरपूर रोशन विशेष करने के लिये अवश्य आवश्यक रूप से मजबूर विशेष बना देती है दीर्घकाल विशेष के लिये निश्चित रूप से सबसे बड़ा आवश्यक भयानक जाल विशेष सम्बन्धों विशेषों का है यकीनी तौर पर । केवल एक आत्मा विशेष के अपने ऊंचे आवश्यक मुकाम विशेष से नीचे गिर जाने पर सम्बन्धित और बहुत सी आत्माओं विशेषों के पूर्ण पतन विशेष का भी पूर्ण निश्चित कारण विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो ही जाता है केवल मोह विशेष के आवश्यक कारण विशेष के रूप में। एक आत्मा विशेष का गलत कार्य विशेष ओर बहुत सी आत्माओं विशेषों के निश्चित तौर पर पूर्ण डूबने विषय का दुर्लभ आवश्यक पथ प्रदर्शन विशेष करता है निश्चित रूप से। भीड़ विशेष के पीछे और बड़ी सी दुर्लभ भीड़ विशेष केवल भयानक अंधे कुंए विशेष ही पूरी तरह से निश्चित डूबती विशेष चली जाती है पीढ़ी दर पीढ़ी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ विशेष पूर्ण मुक्त विशेष समझते हुये ही यकीनी तौर पर जीव को आवश्यक विचार शक्ति दी गई है किसी भी भीड़ विशेष का दुर्लभ हिस्सा विशेष बनने से पहले जीव को अवश्य आवश्यक रूप से खूब सोच विचार विशेष करना ही चाहिये केवल स्वयं के ही दुर्लभ आवश्यक “निज

कल्याण” विषय के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से एक बार ये दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष पूरी तरह से खो विशेष जाने पर फिर से ये आवश्यक दुर्लभ मौका विशेष उपलब्ध विशेष होना आत्मा विशेष के अपने “निज कल्याण” विशेष के हेतू ही केवल निश्चित दुर्लभ विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । आत्मा को अपने इस प्रमाद विशेष की बहुत बड़ी-भयानक सी घोर कीमत विशेष-2 चुकाने के लिये अवश्य आवश्यक तौर पर मजबूर विशेष होना ही पड़ता है अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से । “आप तरह सगले कुल तारह जो तेरी सरणाई” तेरी सरणाई अर्थात् केवल एक “अकाल पुरख परमात्मा” को ही पूर्ण समर्थ विशेष जान कर जो दुर्लभ आत्मा विशेष का आवश्यक सहारा विशेष लेता है वो केवल स्वयं अपने को ही इस भयानक जेलखाने से पूर्ण मुक्त विशेष ही नहीं करवा लेता बल्कि अपने सभी समबन्धों विशेषों के भी मुक्त विशेष होने का दुर्लभ आवश्यक पथ प्रदर्शन विशेष कर जाता है निश्चित रूप से जिसका आवश्यक रूप से पूर्ण निरन्तर व्यवहारिक अनुसरण विशेष करते हुऐ और भी बहुत से आत्मा विशेष अपने को जन्म मरन रूपी भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषों से सदा के लिये पूर्ण आवश्यक छुटकारा विशेष दिलवाने में पूरी तरह से समर्थ विशेष हो ही जाते हैं “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “दया विशेष” को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाते हुऐ यकीनी तौर पर यह दुर्लभ आवश्यक सहूलियत

विशेष तभी प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होती है जब आत्मा विशेष पूरी तरह से एक ^{८८}“प्रभु” की ही आवश्यक दुर्लभ शरण विशेष ग्रहण करती है यकीनी तौर पर आवश्यक रूप से । केवल ^{८८}“एक अकाल पुरख परमात्मा” ही प्रत्येक जीव को प्रत्येक काल में पूर्ण आवश्यक मुक्त विशेष करने में पूर्ण समर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से। जिसने इस आवश्यक जाल विशेष को रच विशेष कर प्रत्यक्ष विशेष किया है केवल वही जानता है कि किस जीव विशेष का पूर्ण निश्चित आवश्यक कल्याण विशेष किस तरह से कैसे सम्भव विशेष है किसी भी काल विशेष में यकीनी तौर केवल वही जीव की पूर्ण आवश्यक मुक्ति विशेष में दुर्लभ आवश्यक समर्थ साधन विशेष ही हैं निश्चित रूप से प्रत्येक काल में निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष रहने वाला आवश्यक प्रमाणिक ^{८८}“सत्य” विशेष ^{८८}“अकाल पुरख परमात्मा” दुर्लभ आवश्यक मूल रूपी आधार विशेष। एक ^{८८}“प्रभु” के सिवाय और सभी दुर्लभ-2 महान-2 सहारे विशेष-2 अवश्य ही केवल पूर्ण घौर असत्य विशेष ही साबित होंगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में सभी दुर्लभ-2 महान निरन्तर दुर्लभ घौर व्यस्त रहने वाले विशेष-2 कार्यक्रम महान विशेष-2 भी केवल तेरे पूर्ण डूबने का निश्चित आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष ही हैं प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से केवल व्यर्थ का धन्धा विशेष ही यकीनी तौर पर । जिन्हें मदद विशेष के लिये पुकारने में न दुर्लभ व्यस्त विशेष है वे सभी स्वयं

ही दुर्लभ गोता विशेष लगाने में निरन्तर आवश्यक रूप से दुर्लभ
घोर व्यस्त विशेष है निश्चित रूप से फिर तेरी मदद विशेष
आवश्यक के लिये स्वयं को कैसे प्रस्तुत विशेष करने में समर्थ
विशेष हो सकते हैं ? ^{६६}बंधे को बंधा मिलै छूटै कौन उपाय कर
सेवा निर्वन्ध की पल में लेत छुड़ाय^{७७} अर्थात् सभी शरीर अथवा
पिंजरे विशेष-2 केवल एक भयानक सा आवश्यक कैदखाना
विशेष ही है। फिर एक महान कैदी विशेष दूसरे कैदी को मुक्त
विशेष करवाने में भला कैसे समर्थ विशेष ही हो सकता है ?
^{६६}सगलया भउ लिखिआ सिरलेख नानक निरभउ निरंकार सच एक^{७७}
यानी के केवल ^{६६}अकाल पुरख परमात्मा^{७७} जो निरंकार अर्थात्
आकार विशेष से रहित निश्चित दुर्लभ आवश्यक आधारभूत
निरन्तर ^{६६}सत्य^{७७} विशेष है ही केवल तुझे पूर्ण आवश्यक मुक्ति
विशेष दिलवाने में प्रत्येक काल में प्रत्यक्ष विद्यमान पूर्ण आवश्यक
समर्थ विशेष ही है इसीलिये केवल ^{६६}निर्वन्ध^{७७} विशेष की ही पूर्ण
आवश्यक शरण विशेष तेरे लिये पूर्ण स्वास्थ्यवर्धक निश्चित
पौष्टिक आहार विशेष ही है प्रत्येक काल में केवल तेरे स्वयं के
ही निज आवश्यक निज कल्याण विशेष के हेतू ही यकीनी तौर
पर केवल ^{६६}अकाल पुरख परमात्मा^{७७} ही सब के आवश्यक लेख
विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाने वाला स्वयं लेख विशेष से
आवश्यक पूर्ण रहित विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ।
केवल जीते जी ही उस ^{६६}परमात्मा^{७७} विशेष से आवश्यक रूप से

मिल विशेष कर के दुर्लभ आवश्यक एक विशेष होने में ही केवल तेरा पूर्ण निश्चित प्रत्येक काल में दुर्लभ आवश्यक कल्याण विशेष ही है यकीनी तौर पर। तेरा दुर्लभ-2 धन्धा विशेष महान-2 केवल घोर कैदी विशेषो से ही मिल करके एक होने का आवश्यक रूप से तेरे पूर्ण पतन विशेष का निश्चित आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष ही साबित होगा प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । एक दुर्लभ आत्मा विशेष के पूर्ण मुक्त विशेष होने पर उस से सम्बन्धित सभी और आत्माओं विशेषो को भी निचली जूनों विशेषो से ऊपर की जूनों विशेषो में लाया जाता है फिर मनुष्य के दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में पूर्ण शुद्ध आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाया जाता है तथा फिर जो आत्मायें विशेष इस दुर्लभ आवश्यक ज्ञान विशेष के अनुसार आवश्यक प्रमाणिक तौर पर व्यवहारिक जीवन विशेष जीने के लिये निरन्तर आवश्यक प्रयत्नशील विशेष रहती हैं पूर्ण आवश्यक ईमानदारी विशेष से केवल उन्हें भी फिर इस भयानक कैदखाने विशेष से पूर्ण आवश्यक मुक्ति विशेष मिल ही जाती है “प्रभु” की आवश्यक दुर्लभ “दया विशेष” से निश्चित तौर पर शेष समस्त प्रचार केवल एक मीठा लेकिन बहुत बड़ा सा विशेष “धोखा” ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जो कोई भी आत्मा विशेष मर्यादित व्यवहारिक जीवन विशेष जीना आवश्यक रूप से पसन्द ही नहीं करती उसका आवश्यक निज कल्याण विशेष होना तो एक तरफ रहा फिर से

उसे घौर-2 भयानक नरकों विशेषों में ही गिर जाना पड़ता है आत्मा विशेष को वासनाओं विशेषों के कारण आवश्यक रूप से केवल अनन्त काल तक के लिये तड़पा विशेष देने वाले भयंकर-2 दुखों विशेषों को फिर से सहने विशेष के लिये आत्मा विशेष को अवश्य मजबूर विशेष होना ही पड़ता है आवश्यक नियमानुसार यकीनी तौर पर । इसलिये जिसे भी दुर्लभ अवसर विशेष उपलब्ध विशेष हो तुरन्त पूरा का पूरा फायदा विशेष उठा ही लेना चाहिये आवश्यक रूप से मर्यादित जीवन विशेष जीते हुये निश्चित रूप से पता नहीं कब “शैतानी ताकतें” अपना आवश्यक कार्य विशेष आपके कुछ भी करने से पहले ही कर गुज़रें विशेष रूप से यकीनी तौर पर फिर कब ये दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष उपलब्ध विशेष होगा प्रत्यक्ष रूप से इसे कोई भी नहीं बता सकता अथवा जानता निश्चित रूप से । जो भी आत्मा विशेष आज भी तुरन्त ही कुछ भी आवश्यक विशेष करने में स्वयं को पूर्ण समर्थ विशेष नहीं बना सकी कल कोई फिर से उसे कुछ भी आवश्यक विशेष करने का अवसर विशेष आंशिक रूप से भी उपलब्ध विशेष होने देगा इसका तो कोई निश्चित प्रमाण ही नहीं है निश्चित रूप से अर्थात् इस आवश्यक कार्य विशेष को पूर्ण विशेष करने में कल आप कभी भी पूर्ण समर्थ विशेष हो ही नहीं सकोगे यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभ-2 चतुर विद्वानों विशेषों इसलिये सभी भयानक-2 दुखों विशेषों से पूरी तरह से

छूटने का आवश्यक पूर्ण बन्दोबस्त विशेष अभी से ही करना तुरन्त विशेष रूप से शुरू कर ही दो अगर सच में आवश्यक पूर्ण सुख विशेष चाहते हो तो यकीनी तौर पर आवश्यकता अनुसार आवश्यक शुद्ध प्रमाणिक पुरुषार्थ विशेष करो निश्चित रूप से केवल तभी कोई और विशेष भी आप पर अवश्य आवश्यक रूप से विचार विशेष करेगा ही निश्चित रूप से केवल आपको ही सदा के लिये पूर्ण आवश्यक दुर्लभ सुखी विशेष बनाने के लिये स्वयं को भी अवश्य निश्चित प्रत्यक्ष विशेष करेगा ही यकीनी तौर पर आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से । “भगता की पैज रखह तू आपे एह तेरी वडिआई” अर्थात् सभी प्रकार की लोभी-स्वार्थी आत्माओं विशेषो तथा शैतानी ताकतों द्वारा प्रत्यक्ष किये गये भयानक-2 विध्वों विशेषो से पूरी तरह से बचने विशेष का निश्चित आवश्यक दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष है “अकाल पुरख परमात्मा” प्रत्येक काल में निश्चित रूप से दुर्लभ आवश्यक प्रमाणिक पूर्ण “सत्य” विशेष इसलिये हे दुर्लभ आत्मा विशेष तूं निरन्तर पवित्र हृदय से केवल उस “परमात्मा” का ही प्रमाणिक शौंक विशेष स्थापित विशेष कर प्रत्येक काल में केवल उसी पूर्ण समर्थ दुर्लभ आवश्यक रक्षक विशेष के ध्यान विशेष में ही निरन्तर मग्न विशेष रहे दिन-रात केवल उसे ही पुकार निरन्तर चरितार्थ व्यवहारिक जीवन विशेष जीते हुऐ निश्चित रूप से केवल यही दुर्लभ आवश्यक क्रिया विशेष रूपी दुर्लभ भगती विशेष ही ध्यान विशेष करने योग्य

बनायेगी तुझे तथा अवश्य फिर तेरी पैज अथवा लाज विशेष रख ही ली जायेगी आवश्यक रूप से तुझे भी फिर सदा के लिये इन भयानक-2 यमदूतों विशेषो-महानों-2 से पूर्ण आवश्यक छुटकारा विशेष दिलवाते हुये “प्रभु” के “दरबारे खास” से दुर्लभ आवश्यक दया विशेष को निरन्तर प्रत्यक्ष विशेष उपलब्ध विशेष करवाते हुये निश्चित रूप से । जो कोई भी आत्मा विशेष निरन्तर स्वयं की दुर्लभ आवश्यक हस्ती विशेष को “प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक शौंक विशेष में ही मिटा विशेष जा रहा है फिर “प्रभु” कैसे उस दुर्लभ आत्मा विशेष को एक पल विशेष के लिये भी भुलाने विशेष में स्वयं को समर्थ विशेष बना सकेगा निश्चित रूप से अपना निजी आवश्यक दुर्लभ निश्चित अंश विशेष होने के कारण अवश्य आवश्यक रूप से फिर “प्रभु” को भी उसी दुर्लभ आत्मा विशेष के ही ध्यान विशेष में मग्न विशेष रहना ही पड़ेगा प्रमाणिक तौर पर नियमानुसार अपने ही दुर्लभ अंग विशेष को आवश्यक तौर पर पूर्ण समृद्ध विशेष बनाने की ही खातिर निश्चित रूप से । दुर्लभ आत्मा विशेष का प्रत्येक काल में निरन्तर पूर्ण समर्थ प्रत्यक्ष आवश्यक रक्षक विशेष केवल पूर्ण आवश्यक सत्य विशेष निश्चित परमात्मा विशेष ही है आत्मा विशेष का प्रत्येक आवश्यक पग विशेष भी केवल फंदे विशेष पर ही रखा जाता है । इस आवश्यक फंदे विशेष से पूर्ण आवश्यक निश्चित मुक्त विशेष करवाने की दुर्लभ सामर्थ्य विशेष केवल आवश्यक रचनाकार विशेष में ही है।

उस दुर्लभ आवश्यक अनन्त विशेष को जानने की आंशिक सामर्थ्य विशेष भी और किसी में भी नहीं है। केवल वही अपने को पूरी तरह से जानने विशेष में आवश्यक पूर्ण समर्थ विशेष है निरन्तर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । प्रत्येक आत्मा विशेष के सभी प्रकार के आने वाले दुर्लभ-2 विघ्नों विशेषों को भी रचनाकार पहले से ही पूर्ण जानता विशेष है तथा केवल वही उनसे पूर्ण बचने विशेष का भी आवश्यक साधन विशेष निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने में प्रत्येक काल में दुर्लभ आवश्यक निश्चित पूर्ण समर्थ विशेष है । केवल एक दुर्लभ आवश्यक ^{८८}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष ही प्रत्येक काल में सर्वत्र निरन्तर पूर्ण प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है आवश्यक रूप से प्रत्येक आत्मा विशेष की दुर्लभ आवश्यक पूर्ण रक्षा विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से ।

^{८८}जनम जनम के किलविख दुख काटह दुविधा रती न राई^{९९} अर्थात् अनन्त जन्मों से आत्मा विशेष द्वारा एकत्र विशेष किये गये भयानक-2 पापों विशेषों से आत्मा विशेष को पूर्ण आवश्यक छुटकारा विशेष दिलवाने का प्रत्येक काल में समर्थ आवश्यक साधन विशेष दुर्लभ आवश्यक ^{८८}रागमई प्रकाशित आवाज^{९९} विशेष ही है निश्चित रूप से इस में शक की कोई भी गुंजाइश विशेष जरा सी भी नहीं है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । ^{८८}शैतानी ताकतों^{९९} द्वारा प्रत्यक्ष किया गया दुविधा नाम का महारोग विशेष जब तक आत्मा विशेष के साथ महाभूत की तरह

से चिपटा विशेष हुआ है आत्मा विशेष का आवश्यक कल्याण विशेष केवल असम्भव ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से प्रत्येक आवश्यक दुर्लभ ^{६६}प्रभु^{११} प्रेरणा विशेष को भी ^{६६}शैतानी ताकतें^{११} बीच में ही पूरी तरह से मिटा विशेष देती हैं आत्मा विशेष तक पहुंचने से पहले ही उल्टा विशेष सशक्त मार्ग दर्शन प्रत्यक्ष विशेष करती रहती है निरन्तर आवश्यक रूप से आत्मा विशेष के मदे कर्मों विशेषों के माध्यम विशेष से यकीनी तौर पर । इसी आवश्यक दुविधा विशेष के कारण आत्मा विशेष ठीक सीधे आवश्यक कार्यों विशेषों में पूरी तरह से सलग्न विशेष ही नहीं होती अगर होती भी है तो आंशिक रूप से पूर्ण आवश्यक ईमानदारी विशेष से रहित विशेष केवल खाना पूर्ति के व्यर्थ के ढंगों विशेषों को प्रत्यक्ष विशेष करते हुए। आत्मा विशेष के घोर घने पापों विशेषों के कारण ये दुविधा बड़े प्रबल रूप से कार्य विशेष करती हैं । भयानक-2 पापों विशेषों की उपस्थिति विशेष में इस शैतानी आवश्यक फंदा दुविधा विशेष से आंशिक रूप से भी छुटकारा विशेष पाना आत्मा विशेष के लिये केवल असम्भव लफज विशेष को ही पूर्ण सार्थक विशेष बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । यह आवश्यक फंदा विशेष तभी ढीला विशेष पड़ता है जब आत्मा विशेष अपने दुर्लभ-2 अपराधों विशेषों का पूरा-पूरा बदला विशेष चुका देती है निश्चित रूप से ^{६६}शैतानी ताकतों^{११} को आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर पर प्रमाणिक ढंग विशेष से । इस आवश्यक भुगतान विशेष के

अभाव में आत्मा विशेष केवल सिसक विशेष सकती है “खून के आंसू” बहाते हुए विशेष रूप से परन्तु पूरी तरह से मरने विशेष नहीं दिया जाता यकीनी तौर पर “शैतानी ताकतों” द्वारा प्रत्येक आत्मा विशेष ने अनन्त जन्मों में अनन्त घौर-2 भयानक दुर्लभ-2 पापों विशेषों का अनन्त दुर्लभ भयानक भण्डार विशेष एकत्र विशेष कर रखा है निश्चित रूप से सोचो कैसे इस दुबिधा विशेष नाम के आवश्यक “शैतानी फंदे” विशेष से आत्मा विशेष स्वयं को पूर्ण मुक्त विशेष करवाने में आवश्यक समर्थ विशेष हो सकती है वो भी अपनाये जा रहे महान-2 व्यर्थ के निकृष्ट अधूरे धन्धों विशेषों से? इस भयानक फंदे विशेष से छूटने का निश्चित इलाज अथवा उपाय आत्मा विशेष द्वारा पूर्ण ईमानदारी विशेष से आवश्यक तौर पर अपना समस्त आवश्यक हिसाब विशेष पूरी तरह से चुकाना विशेष है । इसे पूरी तरह से चुकाने विशेष में आत्मा विशेष तभी तक पूर्ण समर्थ विशेष है जब तक उस के पास ये दुर्लभ आवश्यक चमड़ी विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है । इस आवश्यक दुर्लभ चमड़ी विशेष के अभाव में आत्मा विशेष केवल भुगतती विशेष है चुका कुछ भी नहीं सकती निश्चित रूप से । पूर्ण आवश्यक बुद्धिमानी विशेष इसी में ही है कि अपने ही हाथों दूसरे की नहीं केवल अपनी ही दुर्लभ आवश्यक चमड़ी विशेष पूर्ण ईमानदारी विशेष से पूरी तरह से खुरच-खुरच कर “प्रभु” नाम की दुर्लभ आवश्यक अग्नी विशेष में पूर्ण होम विशेष करना तुरन्त शुरू

विशेष कर दो आप इस दुर्लभ आवश्यक चमड़ी विशेष को कभी भी पूर्ण सुरक्षित विशेष नहीं रख सकोगे “शैतानी ताकतें” तो निरंतर इस दुर्लभ आवश्यक सम्पत्ति विशेष को चाट विशेष ही रही हैं पूरी तरह से हज्म विशेष कर जाने के ही आवश्यक चक्कर विशेष में आपके ही सिर विशेष पर निरन्तर चक्कर विशेष काटने में दुर्लभ आवश्यक व्यस्त विशेष हैं और आप केवल ताली विशेष पीटने में ही निरन्तर दुर्लभ आनन्द मग्न विशेष हो नाचते कूदते हुए यकीनी तौर पर । “प्राणी तू आयो लाहा लैण-लगा कित कुफकड़े सभ मुकदी चले रेण” “कुदम करे पशू पखिआ दिसे नाही काल” अर्थात् हे मूर्ख प्राणी तू तो लाभ विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के लिये प्रस्तुत विशेष किया गया था परन्तु तू तो उल्टे ही व्यर्थ के धन्धों विशेषों में ही अपनी रात रूपी दुर्लभ आवश्यक आयु विशेष को निरन्तर खोता विशेष चला जा रहा है । ये नाचना-कूदना तो केवल पशु-पक्षियों की ही वृत्ति विशेष है तू तो केवल “प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक समर्थ स्वरूप विशेष को ही उपलब्ध विशेष करके प्रत्यक्ष विशेष हुआ है । क्या तुझे अपने ही सिर विशेष पर निरन्तर मंडराती उल्टी गिनती हुई भयानक आवश्यक मौत सुनाई अथवा दिखाई नहीं देती आवश्यक रूप से ? अवश्य तू भी दुविधा नाम के आवश्यक शैतानी फंदे विशेष में ही पूरी तरह से घोट विशेष कर आत्मिक रूप से मार विशेष ही दिया गया है तभी तो तू ताली विशेष-2 पीटते हुए नाच-कूद गा

विशेष रहा है अपनी ही आत्मिक मौत का दुर्लभ आवश्यक जशन विशेष मनाते हुऐ निश्चित रूप से तेरी इन दुर्लभ-2 प्रबल निश्चित कामना विशेषो को मध्य नजर रखते हुऐ “दयाल प्रभु” ने भी तेरे लिये आवश्यकता अनुसार आवश्यक पशु-परिंदो तथा नपुंसक इत्यादि बढ़िया-2 दुर्लभ-2 आराम देह निज घरों तथा घौर पार्को विशेषो को निश्चित रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कर ही दिया है समस्त आवश्यक पूरी सज-धज तथा दुर्लभ-2 आवश्यक शृंगार विशेष-2 सहित अनन्त काल विशेष तक के लिये ताकी तू दुर्लभ-2 आवश्यक महान-2 मददगारों विशेषो सहित अवश्य आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से पूरी तरह से घौर निरन्तर आनन्द मग्न विशेष तौर पर रह सके। ये समस्त दुर्लभ-2 महान-2 आवश्यक उपलब्धियां विशेष-2 तेरी इस दुविधा नाम की चतुराई विशेष का ही दुर्लभ आवश्यक नतीजा विशेष ही हैं निश्चित रूप से। ये दुर्लभ आवश्यक मनुष्य का जन्म विशेष तो निरन्तर घिसता विशेष ही जा रहा है अब केवल तेरी अपनी दुर्लभ आवश्यक रजा विशेष ही है कि तू किसे अधिक अहमियत विशेष देता है ? अपने निकृष्ट अधूरे इन धन्धों विशेषो को अथवा अपने आवश्यक निजी कल्याण विशेष दुर्लभ को यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से। “हम मूड मुगध किछ बूझह नाही तू आपे देह बुझाई” अर्थात जब तक आत्मा विशेष दुर्लभ-2 महान-2 चतुराइयों विशेषो में दुर्लभ घौर व्यस्त विशेष है उसका ये दुर्लभ

आवश्यक कार्य विशेष भी पूरी तरह से सिद्ध विशेष नहीं हो सकता
आंशिक रूप से भी केवल निश्चित नहीं विशेष कितनी भी महान-
2 सिफारिशों अथवा कर्मकाण्ड विशेष से केवल असम्भव लफज
विशेष के ही दुर्लभ आवश्यक महान दर्शन विशेष ही प्रत्यक्ष
उपलब्ध विशेष हो सकेंगे चतुर महान-2 दुर्लभ-2 विद्वानों विशेषों
को प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर पर
निश्चित रूप से अन्धी बहरी आत्मा कैसे उस दुर्लभ अनंत विशेष
को जान सकती है वो भी अनंत पापों के ढेर विशेष पर बैठ कर
? अपार तक पहुंचने का सुपने में भी विचार तक करना तो एक
तरफ रहा इन दुर्लभ-2 पापों धिनौनों के कारण हिल भी नहीं
सकती निश्चित तौर पर । “प्रभु” जहां भी जिसे भी प्रत्यक्ष अनुभव
हुआ है केवल अपनी दुर्लभ आवश्यक “रजा विशेष” से ही ये
दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष सम्भव प्रत्यक्ष विशेष हुआ है प्रत्येक
काल में “दुर्लभ आत्मा विशेष” को यकीनी तौर पर । शेष सभी
मिलने तथा मिलाने के समस्त दावे विशेष-2 केवल एक धिनौना
सा निश्चित झूठ विशेष ही है प्रत्येक काल में आवश्यक तौर पर
निश्चित रूप से । “प्रभु” अपनी दुर्लभ आवश्यक “रजा विशेष” का
इकलौता आवश्यक मालिक दुर्लभ विशेष है प्रत्येक काल में
आवश्यक निश्चित “सत्य” विशेष यकीनी तौर पर । समस्त रचना
इस तरह से प्रत्यक्ष विशेष की गई है कि किसी भी दुर्लभ-2
विशेष-2 की अहमियत विशेष का आंशिक रूप भी कुछ भी अर्थ

विशेष ही नहीं है सुपने में भी विचार विशेष करने का फिर ब्यान विशेष की कौन सी कल्पना विशेष प्रत्यक्ष विशेष की जाये ? अनन्त मण्डलों विशेषो के पार वो दुर्लभ आवश्यक **“परम चेतन सत्ता”** विशेष प्रत्येक जर्रे विशेष पर भरपूर निरन्तर आवश्यक नजर विशेष रखे गुप्त खामोश विशेष निरन्तर निश्चित अपने ही ध्यान विशेष में पूर्ण आवश्यक मग्न विशेष ही है । रूप का घोर कैदी विशेष किस कल्पना विशेष से रूप रहित आवश्यक अविनाशी सत्ता दुर्लभ विशेष की विचारधीन लाने में समर्थ विशेष बना सकता है स्वयं को ? रूप रहित को कैसे रूप विशेष से तुलनात्मक विचार विशेष द्वारा व्यक्त विशेष किया जाये ? दुर्लभ आवश्यक **“परम चेतन सत्ता”** विशेष केवल एक दुर्लभ निर्मल आवश्यक आत्मिक बोध विशेष ही है निश्चित रूप से निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला प्रमाणिक दुर्लभ आवश्यक सत्य विशेष प्रत्येक काल में यकीनी तौर! जिस किसी भी दुर्लभ आत्मा विशेष पर **“प्रभु”** की अपनी दुर्लभ आवश्यक **“रजा”** विशेष होती है केवल उसी आत्मा विशेष दुर्लभ पर **“प्रभु”** की दुर्लभ आवश्यक **“दया विशेष”** उतरती है तथा केवल उसे ही ये दुर्लभ आवश्यक आत्मिक लाभ विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में आता है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । शेष आत्मायें केवल इसी दुर्लभ आत्मिक बोध विशेष को निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने वाली दुर्लभ आत्मा विशेष से अपने ही आवश्यक निज कल्याण विशेष

के हेतू केवल दुर्लभ ठीक आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष ही प्राप्त कर सकती है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । इस से आगे तो प्रत्येक आत्मा विशेष को भी उपलब्ध ठीक आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष के अनुसार आवश्यक निश्चित व्यवहारिक रूप से पूर्ण ईमानदारी विशेष से प्रमाणिक तौर पर विशेष रूप से निरन्तर चलते विशेष हुए “प्रभु” के आवश्यक दुर्लभ दरबारे खास में अपनी आवश्यक दुर्लभ मांग विशेष को प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष करना ही पड़ेगा आवश्यक तौर पर केवल स्वयं के ही आवश्यक “निज कल्याण” विशेष के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस आवश्यक प्रमाणिक व्यवहारिक जीवन विशेष के अभाव विशेष में निज आवश्यक कल्याण विशेष होना तो एक तरफ रहा केवल अनन्त दुर्लभ-2 अभावों विशेषों से लबालब भरे हुए भरपूर भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषों को ही भुगतना विशेष है आत्मा विशेष को अनन्त काल तक के लिये निश्चित रूप से ।

“जो तुध भावे सोई करसी अवरु न करणा जाई”
अर्थात् प्रत्येक काल में निश्चित रूप से जो कुछ भी “परमात्मा” की अपनी दुर्लभ आवश्यक “रजा विशेष” होती है केवल वही कुछ प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है तेरे समस्त महान-2 दुर्लभ-2 प्रयास विशेष-2 केवल व्यर्थ का ढकोसला अथवा प्रलाप मात्र ही है निश्चित रूप से केवल स्वयं को ही पूरी तरह से डुबो विशेष देने का दुर्लभ-2 मददगारों विशेषों सहित दुर्लभ आवश्यक पूर्ण समर्थ

साधन विशेष प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर केवल यही साबित विशेष हो रहा है और आगे भी प्रमाणिक तौर पर केवल यही दुर्लभ “सत्य” विशेष ही आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अवश्य प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में आता जायेगा यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभों चतुरों विद्वानों विशेषो “पातशाहों” इत्यादि ! “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक निश्चित लिखित विशेष रूपी आवश्यक निश्चित प्रतिफल विशेष को आंशिक रूप से भी बदलने की आवश्यक समर्था विशेष किसी भी दुर्लभ-2 महान-2 महाराजों-पातशाहों विशेषो में केवल नहीं है आवश्यक रूप से निश्चित तौर पर जान लो दुर्लभों घौर अन्जानों विद्वानों विशेषो । “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक “रजा विशेष” के सामने विचार में भी खड़े होने का सामर्थ्य किसी भी दुर्लभ महान विशेष में आंशिक रूप से भी प्रत्यक्ष होना केवल असम्भव लफज विशेष को ही पूर्ण समर्थ विशेष बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ।

“जगत उपाई तुध धधै लाइआ भूडी कार कमाई”
अर्थात् इस तमाशे में आत्मा विशेष जब तक जगत के कार्यों विशेषो को सम्पन्न करने में निरन्तर घौर व्यस्त विशेष रहती है उसका दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष सिद्ध होना केवल असम्भव विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । “भूडी कार कमाई” का भाव है कि सभी प्रकार के संसारिक महान-2 कार्यों विशेषो का प्रतिफल विशेष पहले से ही पूर्ण निश्चित विशेष है “शैतानी

ताकतों^{११} के दुर्लभ न्याय के आवश्यक दरबार विशेष में यकीनी तौर । फिर आवश्यक प्रतिफल महान विशेष को पूरी तरह से प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये अवश्य तीनों शैतानी मुल्कों के ही किसी जर्रे विशेष को रोशन विशेष करने के लिये आत्मा विशेष को घोर मजबूर विशेष अवश्य होना ही पड़ेगा आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार प्रत्येक काल में निश्चित आवश्यक नियम विशेष के अनुसार यकीनी तौर । फैसला प्रत्येक आत्मा विशेष का अपनी निजी आवश्यक दुर्लभ व्यवसाय विशेष ही है कि वह किस कार्य विशेष को अधिक महत्व विशेष देती है अपने आवश्यक ^{१२} "निज कल्याण" विशेष को आवश्यक विशेष समझती हैं या संसारिक दुर्लभ बोझों विशेषों को ढोना आत्मा विशेष को अधिक रुचिकर विशेष तौर पर निश्चित विशेष लगता है साबित केवल आत्मा विशेष के ही अपने निजी आवश्यक व्यवहार विशेष से ही प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होता है निरन्तर प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर बचने अथवा चालाकी विशेष का कोई प्रश्न ही नहीं है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । प्रत्येक छोटी से छोटी वासना भी जीव को अवश्य सम्बन्धित कार्य विशेष में निरन्तर घोर सलंग्न विशेष रखती है इस दुर्लभ व्यस्तता विशेष में जो आवश्यक पूंजी विशेष अर्थात् दुर्लभ प्राण शक्ति विशेष खर्च विशेष होती है वो पहले से ही केवल पूर्ण निश्चित विशेष है प्रत्येक काल में न एक भी दुर्लभ आवश्यक प्राण विशेष कम न अधिक अब

पलड़ा केवल वही झुकेगा जो भारी विशेष होगा नियमानुसार अर्थात् केवल वही फल विशेष प्रत्यक्ष विशेष होगा निश्चित रूप से जिस कार्य विशेष पर आप ने दुर्लभ आवश्यक पूंजी विशेष निश्चित रूप से खर्च विशेष की है इस आवश्यक निजी निवेश के अभाव विशेष में कुछ भी फल विशेष आप की दुर्लभ पसन्दगी विशेष से समबन्ध रखने वाला आंशिक रूप से भी प्रत्यक्ष होना केवल पूर्ण असम्भव विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में गांठ बांध लो चतुर विद्वानों दुर्लभों विशेषो पातशाहो! दोनों आवश्यक दुर्लभ फल विशेष केवल एक “अकाल पुरख परमात्मा” विशेष के अधीन ही पूर्ण प्रत्यक्ष सुरक्षित विशेष हैं निश्चित रूप से संसारिक दुर्लभ आवश्यक फल विशेष “शैतानी ताकतों” के जरिये आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध अनुभव विशेष करवाया जाता है तथा दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष का दुर्लभ आवश्यक प्रत्यक्ष आत्मिक बोध विशेष केवल दुर्लभ “परमात्मा” विशेष की अपनी स्वयं की ही दुर्लभ आवश्यक “रजा विशेष” से ही प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होना सम्भव विशेष है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर । आत्मा विशेष के पास तो केवल कर्म विशेष करने का ही आवश्यक दुर्लभ अधिकार विशेष पूर्ण सुरक्षित विशेष है वो भी केवल मनुष्य के ही दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष में केवल जीते जी ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से मरने विशेष के बाद तो केवल वही फल विशेष

आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष विशेष होगा जिस पर कि आपने आवश्यक दुर्लभ पूंजी विशेष खर्च की है निरन्तर जिन्दगी भर दौड़-2 कर । मुर्दों विशेषों पर खर्च विशेष किया गया दुर्लभ आवश्यक धन विशेष आवश्यक जीवन दुर्लभ विशेष के रूप में कैसे प्रत्यक्ष विशेष होना सम्भव है? ऐसा घोर व्यर्थ पर दुर्लभ आवश्यक धन विशेष का निवेश विशेष तौर पर करने वाली आत्मा विशेष तो केवल अपनी ही दुर्लभ आवश्यक कब्र विशेष को और पक्की तरह से प्रत्यक्ष विशेष करने में ही निरन्तर दुर्लभ और व्यस्त है आवश्यक रूप से केवल अपनी दुर्लभ-2 महान-2 उपलब्धियों रूपी कब्रों विशेषों को पूर्ण रूप से रोशन विशेष करने के लिये ही पूर्ण बन्दोबस्त विशेष-2 करने में पूरी तरह से जुटी विशेष हुई है आत्मा विशेष यकीनी तौर पर मन-वचन तथा शरीर से किया गया प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म कार्य विशेष का भी प्रतिफल विशेष पहले से ही पूर्ण घोर निश्चित विशेष है दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष में यकीनी तौर पर कुछ भी करने से पहले तुझे पूर्ण छूट विशेष है करने विशेष की इसलिये खूब सोच विचार कर सलग्न विशेष हो प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य विशेष में भी यकीनी तौर पर क्योंकि प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होने वाले प्रत्येक छोटे से छोटे अन्जाम विशेष को भी केवल तुझे ही भुगतना पड़ेगा विशेष रूप से पूरा का पूरा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अनन्त काल के बाद भी नियमानुसार निश्चित रूप से गांठ बांध

ले आत्मा विशेष ! ^{६६}जन्म पदार्थ जुऐ हारिआ सबदै सुरत न पाई^{९९}
अर्थात् सुरत यानी के आत्मा विशेष सबद अर्थात् दुर्लभ आवश्यक
^{६६}परम चेतन सत्ता^{९९} विशेष को यदि जीते जी ही केवल प्रत्यक्ष
अनुभव विशेष नहीं कर पाती तो उस आत्मा विशेष का हाल विशेष
लुटे हुऐ जुआरी विशेष जैसा ही होता है अर्थात् इस दुर्लभ आत्मा
विशेष को भयानक-२ तड़पा देने वाले दुख विशेष-२ भुगतने के
लिये अवश्य आवश्यक रूप से मजबूर विशेष होना ही पड़ता है
दर-दर की घौर ठोकरें विशेष-२ खाते हुऐ निश्चित रूप से शरीर
के ही नौ आवश्यक घरों विशेषों पर की गई दुर्लभ आवश्यक पूंजी
विशेष का निवेश दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये केवल घौर-२ तड़पा
देने वाले दुखों विशेषों को पूरी तरह से भुगतने विशेष का निश्चित
आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर
पर। दुर्लभ आत्मिक सुख विशेष केवल शरीर के ही दुर्लभ
आवश्यक दसवें घर विशेष पर ही पूर्ण दुर्लभ आवश्यक पूंजी
विशेष का निश्चित निवेश करना है प्रत्येक काल में दुर्लभ आत्मा
विशेष के द्वारा निश्चित रूप से । इस आवश्यक पूंजी निवेश के
लिये आत्मा विशेष के पास अपनी ही रजामन्दी विशेष उपलब्ध
ही नहीं है प्रत्येक काल में फिर दुर्लभ आवश्यक सुख विशेष कहाँ
से कैसे उपलब्ध विशेष हो ? कैसे आवश्यक राहत विशेष अनुभव
विशेष कर सकती है दुर्लभ आत्मा विशेष ? कीमती दुर्लभ
आवश्यक मनुष्य का जन्म विशेष एक जुऐ विशेष की तरह से ही

प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है निश्चित रूप से निरन्तर संसार की प्रत्येक शह विशेष पर लगाया गया दाव विशेष आत्मा रूपी जुआरी विशेष के द्वारा केवल पहले से ही निश्चित मीठे से आवश्यक भयानक दुख विशेष की महान दुर्लभ उपलब्धी विशेष पूरी तरह से हारे हुए दांव विशेष की तरह से ही है दुर्लभ आत्मा विशेष रूपी जुआरी विशेष के लिये यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जैसे जुआघरों में जुआरी विशेष को आकर्षित विशेष करने के लिये तरह-2 के आकर्षण विशेष-2 प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किये जाते हैं ताकी जुआरी विशेष जुआ विशेष खेले और उसकी आवश्यक जमा पूंजी विशेष को भी पूरी तरह से जब्त विशेष करने का पूर्ण आवश्यक इंतजाम विशेष रखा जाता है पूरी चालाकी विशेष के साथ घौर सावधानी विशेष वरतते हुए गुप्त रूप से उसी तरह से आत्मा रूपी दुर्लभ आवश्यक जुआरी विशेष को पूरी तरह से हजम विशेष करने के लिये इस संसार रूपी आवश्यक जुआघर विशेष में तरह-2 के वस्तु पदार्थ तथा समबन्ध रूपी आवश्यक उपलब्धियों विशेषों को निरन्तर पहले से बढ़ा-चढ़ा कर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया जाता है ^{८८}जुआघरों^{९९} के दुर्लभ आवश्यक संचालकों रूपी ^{८८}सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों^{९९} द्वारा निश्चित रूप से परमात्मा रूपी दुर्लभ आवश्यक जुआरी विशेष को घौर आकर्षित विशेष करते हुए यकीनी तौर पर ताकी दुर्लभ आवश्यक जुआरी विशेष केवल गलत दांव विशेष पर ही दुर्लभ आवश्यक

पूँजी विशेष लगाये और फिर सदा के लिये सब कुछ पूरी तरह से हार अथवा लुटा विशेष कर आत्मा विशेष अनन्त काल तक के लिये इन्ही जुआघरों विशेषों की ही पूर्ण बन्दी विशेष बना ली जाये आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से । इन्हीं दुर्लभ-2 आवश्यक प्राप्तियों विशेषों के चक्कर में दुर्लभ आत्मा विशेष महा चक्कर विशेष में ही फँस जाती है पूरी तरह से सदा के लिये तथा अपने असली आवश्यक दुर्लभ मकसद विशेष को भुला बैठती हैं पूरी तरह से जिस कारण इसे अनन्त काल तक के लिये घोर भयानक-2 तड़पा देने वाले दुख विशेष-2 सहने के लिये मजबूर विशेष होना ही पड़ता है अवश्य आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से नियमानुसार जिसमें पूर्ण तथा सदा रहने वाला निरन्तर निश्चित केवल दुर्लभ आवश्यक सुख विशेष ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है उस के तो नजदीक तक जाना पसन्द ही नहीं करती चतुर आत्मा विशेष फिर दुर्लभ आवश्यक सुख विशेष कैसे तथा कहाँ से उपलब्ध विशेष हो ? जहाँ केवल निरन्तर निश्चित भयानक-2 तड़पा देने वाला दुख विशेष ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है प्रत्येक काल में दिन-रात केवल उसी मीठे से आवश्यक दुर्लभ दुख विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये ही निरन्तर दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हैं दुर्लभ चतुर आत्मा विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । इस दुर्लभ चतुराई विशेष का केवल एक ही आवश्यक निश्चित दुर्लभ परिणाम विशेष प्रत्यक्ष

उपलब्ध विशेष है अनन्त काल से अनन्त भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषों का ही दुर्लभ आवश्यक हिस्सा विशेष बने रहना चतुर आत्मा विशेष का अर्थात् अपने आवश्यक आधार भूत मूल विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को सदा के लिये पूरी तरह से खो बैठना अपनी महान-2 दुर्लभ-2 उपलब्धियों विशेषों के “एवज” में निश्चित रूप से ।

“मनमुख मरह तिन किछू न सूझौ दुरमत अगिआन अंधारा” अर्थात् “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतों” ने चारों तरफ अज्ञानता का घोर अंधकार विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कर दिया है दुर्लभ आत्मा विशेष के आवश्यक नाश विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से । आत्मा विशेष केवल आत्मा का भक्षण विशेष करके ही स्वयं को स्थिर विशेष रख सकती हैं इन अधूरे मुल्कों विशेषों में तथा प्रत्येक भक्षण विशेष का प्रत्येक आत्मा विशेष को पूरा-2 हिसाब विशेष देना ही पड़ता है शैतानी ताकतों को आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अनन्त काल के बाद भी निश्चित तौर पर इस आवश्यक घोर सच विशेष से पूरी तरह अनभिज्ञ आत्मा विशेष केवल रंग तमाशे को बढ़ाने विशेष में ही दुर्लभ निरन्तर घोर व्यस्त विशेष हैं और कैसी दुर्लभ “अज्ञानता” विशेष होगी ? घोर कैदी संगीन विशेष रूप से केवल नाचने-कूदने ताली विशेष पीटने ढोल बाजे विशेष-2 बजाने-गाने बर्तन विशेष खटखटाने इत्यादि में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हैं अपने ही द्वारा

उपलब्ध कैदखाने विशेष में दौड़ते-भागते हुए निरन्तर दुर्लभ घोर प्रसन्न विशेष ही हैं और कैसा “अन्धकार” विशेष देखना बाकी है दुर्लभ आत्मा विशेष के लिये प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ? आत्मा का दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष स्वयं को इस घोर अज्ञानता के अन्धकार विशेष से पूरी तरह से मुक्त विशेष करवाने के बजाये ऐसे ही अधूरे उल्टे अन्धे कार्यों विशेषों में स्वयं को निरन्तर सलग्न विशेष रखते हुए सदा के लिये पूरी तरह से निश्चित डुबो विशेष देना ही “दुरमत” विशेष है प्रत्येक काल में “शैतानी ताकतों” द्वारा प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष की हुई निश्चित रूप से । मनमुख अर्थात् मन जो केवल “शैतानी ताकतों” का दुर्लभ आवश्यक अंश विशेष ही है निश्चित रूप से मुख यानी के इस “शैतानी” आवश्यक अंश की दुर्लभ प्रसन्नता विशेष के लिये किया गया प्रत्येक कार्य विशेष आत्मा विशेष द्वारा “मरह” अर्थात् केवल बार-2 जन्म तथा मरन रूपी भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषों के ही फेरे विशेष में दुर्लभ फंसी विशेष रहती हैं तथा तब इसे कुछ भी छुटकारे विशेष का उपाय विशेष नहीं सूझता प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । आज का प्रत्यक्ष उपलब्ध दुर्लभ आवश्यक मौका विशेष केवल इसी दुर्लभ आवश्यक छुटकारे विशेष का निश्चित आवश्यक पूर्ण समर्थ साधन विशेष ही है काल विशेष में यकीनी तौर पर । परन्तु आज की इस दुर्लभ आवश्यक महान उपलब्धी विशेष का इसे आवश्यक ज्ञान रूपी एक अक्षर

विशेष भी नहीं मालूम और कल जब प्रतिफल रूपी दुख भयानक-
2 विशेष को आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करेगी “**खून**
के आंसू” विशेष बहाते हुए दुर्लभ आत्मा विशेष तब कुछ करना
विशेष चाह कर के भी कुछ भी करने विशेष में केवल पूर्ण असमर्थ
विशेष ही साबित होगी प्रत्येक काल में निश्चित रूप से
“**नियमानुसार**” मनमुखी आत्मा विशेष केवल शैतानी दुरमत
विशेष को ही व्यवहारिक रूप से धारण विशेष करती है प्रत्येक
काल में सब कुछ जानने विशेष के बावजूद भी उसे केवल “**प्रभु**”
की उपलब्धियों विशेषों की ही चाहना विशेष रहती है निरन्तर
बेशक मुखौटा “**प्रभु**” विशेष का ही क्यों न लगा रखा हो केवल
स्वयं को ही ठगने विशेष के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप
से। मनमुखी आत्माओं विशेषों का आवश्यक “**निज कल्याण**”
विशेष प्रत्येक काल में अकथ प्रयत्नों विशेषों के बावजूद भी केवल
असंभव विशेष ही रहता है निश्चित रूप से इसलिये दुर्लभ सच्ची
आत्मा विशेष को निरन्तर स्वयं को इन मुखौटा धारी मनमुखी
आत्माओं विशेषों के पतनकारी संग विशेष से बचाते हुए
आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से सावधान विशेष ही रहना
चाहिये केवल स्वयं के ही दुर्लभ आवश्यक “**निज कल्याण**” हेतू
निश्चित रूप से प्रत्येक काल में । “**दुरमत**” का चरितार्थ
व्यवहारिक स्वरूप बनी हुई आत्मायें विशेष दुर्लभ आवश्यक ज्ञान
विशेष से पूरी तरह से रहित दुनिया में ज्ञान विशेष बांटने का

धन्धा विशेष चला कर पूरी दुर्लभ मनुष्य जाति विशेष को अज्ञानता के घोर अंधकार रूपी अंधे कुंए विशेष में डुबोने को पूरी तरह से समर्थ साधन विशेष साबित हो रही हैं निश्चित रूप से ।

“प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक “दरबारे खास” से एक सफाई अभियान प्रत्यक्ष किया गया है “घोर नर्क” नाम के दुर्लभ स्थान पार्क विशेष पर दुर्लभ-2 साधनों विशेषो को स्थापित विशेष करते हुये पूरी तरह से आवश्यक मुफ्त सेवा विशेष उपलब्ध करवायी गई हैं महान-2 आत्माओं रूपी पातशाहों विशेषो की दुर्लभ -2 महानता विशेष-2 को पूरी तरह से ध्यान विशेष में रख कर दुर्लभ-2 विकराल विशेष-2 दूत निर्धारित विशेष किये जाते हैं ताकी इन आवश्यक ज्ञान विशेष से कोरे “दुर्लभ-2 प्रधानों” विशेषो को पूरी तरह से ज्ञानवान विशेष बनाया जा सके इन की दुर्लभ-2 घोर वासनाओं विशेषो के अनुसार निश्चित रूप से। मुफ्त आवश्यक दुर्लभ सुविधा विशेष को ध्यान विशेष में रखते हुये दुर्लभ-2 महान-2 प्रधानों विशेषो मत-धर्म तथा मुल्कों विशेषो को चलाने वालों को अपने दुर्लभ-2 मददगारों विशेषो सहित इन “घोर-2 पार्कों” विशेषो में अनन्त काल तक के लिये अपनी दुर्लभ आवश्यक रोशनी विशेष को बिखेरते हुये “प्रभु” की इस दुर्लभ आवश्यक दयालता विशेष का भरपूर आवश्यक फायदा विशेष उठाएं ऐसा सुनहरी अवसर फिर बार-2 हाथ आने वाला नहीं है निश्चित रूप से पता नहीं कब टिकट विशेष लगा दी जाए यकीनी

तौर पहले से ही अपनी कारस्तानियों विशेषो को आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अत्याधिक बढ़ा विशेष कर अपना दुर्लभ नाम विशेष अग्रिम रूप से दर्ज विशेष करवा ले घौर-2 पार्को विशेषो में ताकी बाद में मायूस विशेष न होना पड़े आवश्यक स्थान विशेष के अभाव के कारण अपने दुर्लभ-2 कसाई रूपी मददगारों विशेषो के सामने निश्चित रूप से “प्रभु” का दान विशेष करने वालों के लिये तथा सभी आवश्यक कार्य विशेष इत्यादी भी केवल दृष्टि विशेष मार कर के ही पूरी तरह से सम्पन्न विशेष करने वाले दुर्लभ-2 महान-2 प्रधानों विशेषो तथा पातशाहों के लिए (मददगारों विशेषो सहित) तो अलग से बहुत बढ़िया सा दुर्लभ खास इन्तजाम विशेष-2 किया गया है इन घौर-2 दुर्लभ आवश्यक पार्को विशेषो में “प्रभु” की दया विशेष का आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से एक उत्कृष्ट नमूना विशेष ही साबित होगा निश्चित रूप से आने वाले समय विशेष में भी यकीनी तौर । यहां दृष्टि विशेष में आ जाने वाले आवश्यक “जाले विशेष” रूपी विध्व विशेष को दुर्लभ-2 विकराल सर्जनों विशेषो द्वारा पूरी तरह से जड़ से ही साफ विशेष कर दिया जायेगा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से ताकी आगे फिर से यह कार्य विशेष पातशाह ज्ञानी-संत-महन्त-बाबे इत्यादि खूब अच्छी तरह से सम्पन्न विशेष कर सकेगें बिना किसी भी विध्व बाधा विशेष के यकीनी तौर पर । आप भी यदि “प्रभु” की दयालता रूप दुर्लभ इस आवश्यक

सुनहरी मौके विशेष का दुर्लभ आवश्यक फायदा विशेष उठाना विशेष चाहते हैं तो तुरन्त इन दुर्लभ-2 पातशाहों रूपी महान-2 चतुर-2 ज्ञानी- संतो-महन्तों-बाबों-सदस्यों इत्यादि महाचतुरों विशेषों के दुर्लभ-2 शीश महलों की रैनक विशेष बढ़ाने में अपना दुर्लभ आवश्यक योगदान विशेष दे केवल एक अथवा दोनों हाथों विशेषों में “तेल विशेष” की बोतल अवश्य आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से पकड़ विशेष कर ले जाए केवल अपनी ही दुर्लभ खास आवश्यक सुविधा विशेष की ही खातिर ताकि अगले महान-2 दुर्लभ विशेष-2 को आवश्यक “कार्य विशेष” आप के निजी विशेष को ही पूरी तरह से आवश्यक बढ़िया ढंग विशेष से पूरी तरह से निपटाने विशेष में खूब आवश्यक दुर्लभ सुविधा विशेष उपलब्ध विशेष हो सके प्रत्येक काल में निश्चित रूप से आप को सभी सम्बन्धों तथा आवश्यक उपलब्धियों विशेषों सहित पूरी तरह से जड़ विशेष से मिटाने विशेष के समर्थ आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष के रूप में यकीनी तौर पर। चिंता की कोई बात विशेष नहीं है केवल अपना ही मुंह विशेष थोड़ा सा “काला विशेष” रंग लो तथा कुछ अधिक खर्च विशेष करो आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से “काला विशेष” सा सब कुछ तुरन्त ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो ही जाता है बिना लाईन में लगे पूर्ण घौर अभाव विशेष में भी निश्चित रूप से। “काले विशेष” का केवल शोर विशेष मचाने से “काला” सा सफेद विशेष कैसे हो जायेगा ? जब

कि सरकार ही “घौर काली विशेष” है और निरन्तर सफेद को ही केवल भयानक सा और “काला विशेष” बनाने में ही दुर्लभ घौर व्यस्त विशेष है आवश्यकता अनुसार बाहर से ही केवल दुर्लभ महान सफेद विशेष दिखती है “मत-धर्म-मुल्कों विशेषों” सहित अन्दर से तो केवल “घौर काली” विशेष ही है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से “काल” विशेष का ही आवश्यक दुर्लभ साधन विशेष यकीनी तौर पर निरन्तर “काल” विशेष को ही घौर प्रसन्न विशेष करने में आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से घौर दुर्लभ व्यस्त विशेष है। बेशक स्वयं को यानी के और “काली” विशेष ही स्थापित विशेष करती है निरन्तर “काल” विशेष के ही आवश्यक मुंह विशेष में आखिरी आवश्यक दुर्लभ घड़ियां विशेष गिनते हुए निरन्तर “कालिख” विशेष को ओर अधिक एकत्र विशेष करते हुए यकीनी तौर पर भाई अब तो दुर्लभ आवश्यक सफेद विशेष का जमाना ही लद चुका केवल “काल” विशेष का ही एक छत्र राज विशेष उपलब्ध विशेष है चारों तरफ निश्चित रूप से मत-धर्म तथा मुल्कों विशेषों में इस “काल” विशेष में पूरी तरह से रूचने अथवा डूबने विशेष का एक मात्र उपाय विशेष है कि आप भी पूरी तरह से तुरन्त स्वयं को “काल” विशेष का ही रूप विशेष बना ले आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर स्वयं को बढ़िया से आवश्यक ढंग विशेष से “काला” विशेष सा रंगते विशेष हुए प्रत्येक काल में निश्चित रूप से केवल बाहर से ही आवश्यक

रूप से चमकता हुआ दुर्लभ सफेद विशेष ही रखियेगा स्वयं को तभी सभी आवश्यक दुर्लभ-2 कार्य विशेष भी पूर्ण सिद्ध विशेष हो सकेंगे तथा ^{८८}प्रभु की आवश्यक ^{८८}दयालता रूपी दुर्लभ सुनहरी मौके का फायदा विशेष उठाने में स्वयं को आप भी अवश्य आवश्यक रूप से दुर्लभ समर्थ विशेष बना ही लोगे यकीनी तौर पर फिर आप भी अवश्य ही घौर-2 दुर्लभ-2 आवश्यक पाकों विशेषों की अनन्त काल तक की आवश्यक दुर्लभ सैर विशेष करने के दुर्लभ आवश्यक योग्य विशेष तौर पर करार विशेष कर ही दिये जाओगे निश्चित रूप से प्रत्येक काल में ^{८८}प्रभु के दुर्लभ आवश्यक ^{८८}दरबारे खास से यकीनी तौर पर दुर्लभों-महानों-विद्वानों चतुरों विशेषो ।

^{८८}भवजल पार न पावह कबही डूब मुए बिन गुर सिर भारा^{९९} अर्थात् बिन गुर यानी कि आवश्यक ठीक मार्ग दर्शन विशेष के अभाव विशेष में जीव विशेष ऐसे ही अधूरे कार्यों विशेषो में निरन्तर जुटा रहता है कि जिन का आवश्यक प्रतिफल विशेष बहुत ही भयानक तड़पा देने वाले दुख विशेष के रूप में आत्मा विशेष को सिर भारा यानी के बोझा विशेष ^{८८}खून के आंसू बहाते हुये भी अवश्य आवश्यक रूप से ढोने के लिये मजबूर विशेष होना ही पड़ता है निश्चित रूप से अनन्त काल विशेष के बाद भी यकीनी तौर पर। इस भयानक भवजल से पार उतरना अथवा बचना विशेष तो एक तरफ रहा इन भयानक-2 कर्मकाण्डों विशेषो का

हिस्सा विशेष बनने के कारण इनका आवश्यक भुगतान रूपी तड़पा देने वाला बोझा विशेष ढोते-ढोते आत्मा विशेष सदा के लिये इस भयानक अन्धे कुंऐं विशेष में ही पूरी तरह से डूब विशेष जाती है अनन्त भयानक-2 दुखों विशेषो को तड़प-2 कर सहते विशेष हुऐ यकीनी तौर पर आवश्यक दुर्लभ “प्रभु” प्रेरणा विशेष में इस भाव की महत्ता विशेष प्रत्यक्ष विद्यमान ही है कि आवश्यक ठीक मार्ग दर्शन विशेष प्रत्येक काल में दुर्लभ विशेष ही है । यदि कहीं भी उपलब्ध विशेष हो जाये और आत्मा विशेष इस दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन विशेष के मुताबिक स्वयं को व्यवहारिक चरितार्थ स्वरूप विशेष तौर पर प्रमाणिक विशेष प्रत्यक्ष बना ले तो अवश्य स्वयं को अनन्त घौर-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषो से आवश्यक दुर्लभ छुटकारा विशेष दिलवाने में पूर्ण समर्थ विशेष हो ही जाती है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से “प्रभु” की आवश्यक दुर्लभ “दया विशेष” को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाते हुऐ यकीनी तौर पर । आप ने किन महानों दुर्लभों विशेषो को मत-धर्मों तथा मुल्कों विशेषो इत्यादि का आवश्यक गुरु या मार्ग दर्शक विशेष-2 नियुक्त विशेष कर रखा है ? जो स्वयं ही इस शमशान भूमि में विशेष कब्रिस्तान बना कर कब्र विशेष में ही घौर पूर्ण बन्दी विशेष बने हुऐ हैं प्रेत इत्यादि निकृष्ट भोगी जूनों विशेषो को निकृष्ट पिंजरों विशेषो को रोशन विशेष करते हुऐ अपने ही हाथों विशेषो द्वारा स्थापित की हुई कब्रों विशेषो के घौर निकृष्ट

कैदी विशेष बने हुए हैं जो मर कर के भी केवल और आत्माओं को भी इन्हीं अपनी कब्रों विशेषों का ही पूर्ण घोर कैदी विशेष बनाने का ही केवल दुर्लभ ठीक मार्ग दर्शन विशेष कर रहे हैं निश्चित रूप से आप संसार में इन्हें मत धर्म मुल्कों के महान-2 संत ^{९९}“गुरु” इत्यादि घोषित करते हुए इनके नामों के ढिंढोरे विशेष पीट रहे हो केवल स्वयं को भी इन्हीं निकृष्ट भोगी जूनों विशेषों में ही आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से सदा के लिये पूरी तरह से ^{९९}“दफन” विशेष करने के लिये ही निश्चित रूप से । जो महान-2 ^{९९}“गुरु” संत-महन्त-ज्ञानी-पातशाह इत्यादि इन्हीं कब्रों विशेषों को रोशन विशेष करवा रहे हैं आपके भयानक-2 पापों विशेषों को हवा विशेष बनाने के हेतु उपाय विशेष-2 धरवाते(करवाते) हुए उनकी की तो दुर्लभ आवश्यक कब्र विशेष कब की बन चुकी है अर्थात् स्वयं ही धुआं विशेष बनाये जा चुके हैं ^{९९}“शैतानी ताकतों” द्वारा आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से ^{९९}“प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक न्याय अनुसार यकीनी तौर पर । आप भी इस भीड़ का हिस्सा विशेष बनने में दुर्लभ विशेष मददगार विशेष के रूप में केवल इन्हीं निकृष्ट तड़पा देने वाली भोगी जूनों विशेषों में ही अनन्त काल तक के लिये तड़पने दुख भयानक-2 उठाने के लिये ही केवल जिन्दा रह कर के आवश्यक सामान विशेष-2 एकत्र विशेष करने में ही केवल दुर्लभ निरन्तर घोर व्यस्त विशेष हो निश्चित रूप से जिसने स्वयं ही आवश्यक दुर्लभ

आत्मिक कल्याण विषय का एक अक्षर विशेष तक नहीं पढ़ा भला फिर वो कैसे आप को पूर्ण मुक्ति का प्रमाण पत्र विशेष देने में समर्थ विशेष हो सकता है ? पूरी तरह से घौर डूबा हुआ और डूबने वालों को तैरने का दुर्लभ ढंग विशेष बताने का नकली झूठा दावा विशेष पेश कर रहा है केवल अच्छी तरह से तुरन्त पूरा का पूरा डूबो विशेष जाने के लिये ही निश्चित रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है आवश्यक दुर्लभ समर्थ मददगार विशेष स्वयं को साबित विशेष करते हुये यकीनी तौर पर। “प्रभु” के दुर्लभ आवश्यक “दरबारे खास” में सब से संगीन अपराधी विशेष ऐसी आत्मा विशेष घोषित की जाती है जो और आत्माओं को डूबने के लिये धन्धों विशेषो को प्रत्यक्ष विशेष करती है केवल अपने ही स्वार्थ अथवा लोभ विशेष की पूर्ति हेतू ही निश्चित रूप से प्रत्येक काल में तथा जो आत्मा विशेष किसी दूसरी आत्मा के “निज कल्याण” दुर्लभ के आवश्यक मार्ग विशेष में विध्व विशेष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत विशेष करने में सलग्न विशेष होती है “मूल या मददगार” विशेष के रूप में ऐसी संगीन अपराधी आत्माओं विशेषो के लिये घौर-2 नकों विशेषो में बहुत अधिक खास इन्तजाम विशेष-2 दुर्लभ भी रखा ही जाता है “प्रभु” के न्याय रूपी नियम विशेष के अनुसार आवश्यक तौर पर निश्चित रूप से अनन्त काल तक के लिये अनन्त भयानक-2 तड़पा देने वाले दुखों विशेषो को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करवाने के हेतू ही “संगीन अपराधी” श्रेणी की

आत्माओं विशेषों को आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । एक अंधा दूसरे घोर अन्धे विशेष के पीछे चल करके कैसे अपनी दुर्लभ आवश्यक मजिल विशेष को प्रत्यक्ष विशेष करने में पूर्ण समर्थ विशेष हो सकता है ? अकथ मेहनत अथवा प्रयत्नों विशेषों को पूरी तरह से सम्पन्न विशेष करने के बावजूद भी केवल पूरी तरह से डूबना विशेष ही निश्चित है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से ! “एक जम की सिरकार है उन्हा उपर जम का डंड करारा मनमुख जम मग पाइअन्ह जिन्ह दूजा भाउ पिआरा जम बंधे मारीअन को सुणै न पूकारा” अर्थात् इस असली खेल विशेष में नकली खेल विशेष को प्रत्यक्ष विशेष किया गया है । “धर्मराज” विशेष को प्रत्यक्ष विशेष किया गया है “न्याय” हेतू तीनों मुल्कों विशेषों में ऊपर बेचारे के “सूक्ष्म अदृश्य शैतानी ताकतें” प्रत्यक्ष बैठी हैं डंडा विशेष ले कर नचाने विशेष हेतू ही गुप्त रूप से जो किसी को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में नहीं आती प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । फिर इन आवश्यक “शैतानी ताकतों” के ऊपर भी भरपूर नजर विशेष रखे बैठी है “करारे डंडे” को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करवाते हुये दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष निश्चित रूप से निरन्तर जड़ चेतन में भरपूर प्रत्यक्ष समाई हुई आवश्यक घोर “सत्य” विशेष के रूप में प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर जो भी आत्मा विशेष दूसरे के आवश्यक अधिकार विशेष में दखल विशेष देती है

आंशिक रूप से भी ऐसी ^{८८}“मनमुखी” आत्मा विशेष के लिये केवल नर्को घौर तक पहुंचने का ही पथ विशेष निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर पर विशेष रूप से भयानक-2 नर्को विशेषों में फिर मनमुखी आत्मा विशेष को अनन्त घौर-2 तड़पा देने वाले दुख विशेष-2 सहने के लिये मजबूर विशेष होना ही पड़ता है अवश्य आवश्यक रूप से आवश्यकता अनुसार वहां फिर मर्यादा रहित आत्मा विशेष मनमुखी को अनन्त काल तक तड़पते खून के आंसू रोते चिल्लाते हुऐ हाहाकार करते देखने सुनने वाला कोई भी प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता ही नहीं प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर ।

^{८९}“काइआ अन्दर गड़ कोट हैं सभ दिसन्तर देसा । आपे ताड़ी लाइअन सभ मह परवेसा आपे सिसट साजीअन आप गुप्त रखेसा । गुर सेवा ते जाणिआ सच प्रगटीएसा । सभ किछ सचो सच है गुर सोझी पाई” ^{९०} अर्थात् आपके इस प्रत्यक्ष मानव शरीर रूपी दुर्लभ आवश्यक किले विशेष में अनन्त ब्राह्मण्डों विशेषों का भरपूर अशक विशेष निरन्तर आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है यकीनी तौर पर । प्रत्येक जरे विशेष में निरन्तर भरपूर समाई हुई दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष प्रत्येक अंश विशेष पर गुप्त खामोश नजर विशेष रखे बैठी है आवश्यक रूप से धारण विशेष करती हुई निरन्तर भरपूर दुर्लभ विशेष निश्चित रूप से ताकत विशेष अनन्त ढंगों विशेषों से स्वयं को प्रत्यक्ष अनुभव

विशेष करवाती हुई सबसे दुर्लभ न्यायी विशेष ही है प्रत्येक काल में अत्यन्त गुप्त रूप से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला दुर्लभ आवश्यक सत्य विशेष केवल उसी दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष के ही निरन्तर व्यवहारिक ध्यान रूपी प्रमाणिक चरितार्थ स्वरूप आवश्यक दुर्लभ पवित्र शौंक विशेष से ही प्रत्यक्ष आवश्यक दुर्लभ अनुभव विशेष होता है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर सब कुछ केवल एक निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान रहने वाले दुर्लभ आवश्यक सत्य विशेष से ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हुआ है तथा केवल घोर निश्चित सच विशेष पर ही पूरी प्रणाली विशेष आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष स्थापित विशेष की गई है इसमें शक की कोई गुंजाइश ही नहीं है परन्तु ^{७७}“शैतानी ताकतों” ने भ्रम विशेष भरपूर प्रत्यक्ष स्थापित विशेष कर रखा है कि आप की दुर्लभ-2 महान-2 चतुराईयों विशेषों से ही केवल कार्य विशेष-2 सम्पन्न विशेष किये जा रहे हैं । इस घोर आवश्यक सत्य विशेष का पता केवल चरितार्थ व्यवहारिक दुर्लभ आत्मा विशेष से ही चलता है विशेष काल में विशेष धर्म के अधीन निश्चित रूप से प्रमाणिक तौर पर ।

^{७८}“साचे सबद रते जन साचे हर प्रभ आप मिलाए”

अर्थात् प्रत्येक काल में निरन्तर भरपूर प्रत्यक्ष रहने वाले आवश्यक दुर्लभ सत्य विशेष में झूठ की गुंजाइश भला कैसे हो सकती है आंशिक रूप से भी सुपने में भी केवल सत्य विशेष ही प्रत्यक्ष

अनुभव विशेष मे आयेगा प्रत्येक काल में अवश्य आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर । “जन साचै” अर्थात जो कोई भी आत्मा विशेष दुर्लभ आवश्यक लिखित विशेष के अनुसार चरितार्थ रूप से प्रमाणिक व्यवहारिक जीवन विशेष जीने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहती हैं “अकाल पुरख परमात्मा” अवश्य उस आत्मा विशेष का मेल ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष से करवाता है जो “साचै सबद रते” अर्थात दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष को जो कि प्रत्येक काल में निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला आवश्यक दुर्लभ सत्य विशेष ही है निरन्तर प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से अनुभव विशेष करती रहती हैं यकीनी तौर पर ऐसी चरितार्थ रूप से प्रमाणिक व्यवहारिक दुर्लभ आत्माओं विशेषों के जरिये भी दुर्लभ आवश्यक सत्य का ज्ञान विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होता है “प्रभु” की रजा विशेष में दुर्लभ आवश्यक दया विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करवाते हुऐ और दूसरी आत्माओं के दुर्लभ मार्ग दर्शन हेतू आवश्यक रूप से विशेष काल में विशेष धर्म को प्रत्यक्ष विशेष करते हुऐ यकीनी तौर पर ।

“गुर की बाणी सबद पछाती साच रहे लिव लाए” गुर की बाणी अर्थात गुर यानी के धुर अथवा प्रभु प्रेरणा रूपी “बाणी” अथवा लफज विशेष केवल ही आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्यक्ष ब्यान अथवा गुप्त भेद विशेष को लिखित रूप में प्रगट विशेष करती है “सबद पछाती” अर्थात शब्द विशेष यानी

के केवल दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष की आवश्यक निश्चित पहचान विशेष क्या है निश्चित रूप से इस दुर्लभ आवश्यक प्रभु प्रेरणा के अभाव विशेष में इस निश्चित आवश्यक “गुप्त भेद” विशेष का प्रत्यक्ष होना केवल असम्भव विशेष ही है यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में जब “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक दया विशेष होती है तभी यह किसी विशेष कारण प्रत्यक्ष अनुभव विशेष में आती है सीमित काल विशेष तक के लिये किसी आवश्यक मकसद विशेष को पूरी तरह से सम्पन्न विशेष करने के हेतु ही निश्चित रूप से दुर्लभ आवश्यक प्रभु आत्मिक प्रेरणा विशेष सभी दुर्लभ-2 महान-2 ताकतें विशेष मिल करके भी अनन्त अकथ प्रयत्नों विशेषों के बावजूद भी इस दुर्लभ प्रभु आत्मिक प्रेरणा विशेष को आंशिक रूप से भी प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने में केवल पूर्ण असमर्थ विशेष ही हैं प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” प्रभु का निज स्वरूप खास अथवा दुर्लभ आवश्यक समर्था विशेष का केवल एक तुच्छ सा दुर्लभ आवश्यक निश्चित गुण विशेष ही है निश्चित रूप से सब कुछ प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करवाने का दुर्लभ आवश्यक निश्चित साधन विशेष यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला अविनाशी दुर्लभ आवश्यक निश्चित सत्य विशेष जिसे अधूरे लफजों विशेषों के जरिये ब्यान विशेष करना केवल असम्भव लफज विशेष को ही निरन्तर सार्थक

विशेष बनाना है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से आत्मा विशेष के दुर्लभ आवश्यक ठीक मार्ग दर्शन विशेष के हेतू ही इस दुर्लभ आवश्यक “प्रभु प्रेरणा विशेष आत्मिक” को दुर्लभ लिखित विशेष के रूप में प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष किया जाता है ताकी आत्मा विशेष अपने आवश्यक दुर्लभ “निज कल्याण” विशेष को आवश्यक रूप से विचार विशेष सके प्रत्येक काल में निश्चित रूप से साच रहे अर्थात इस उपलब्ध दुर्लभ प्रमाणिक लिखित “अकाल पुरख परमात्मा” की आत्मिक प्रेरणा विशेष के अनुसार जो कोई भी दुर्लभ आत्मा विशेष प्रमाणिक तौर पर चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप जीवन विशेष जीने में निरन्तर घोर प्रयत्नशील विशेष है केवल अपने ही दुर्लभ आवश्यक मनुष्य के जन्म विशेष को निरन्तर कुर्बान विशेष करते हुऐ लिव लाए अर्थात केवल ऐसी ही दुर्लभ आत्मा विशेष व्यवहारिक रूप से दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने में पूर्ण समर्थ विशेष होती है आवश्यक रूप से केवल “प्रभु” की ही दुर्लभ आवश्यक दया विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करते हुऐ जुड़ती विशेष है इस दुर्लभ आवश्यक शब्द विशेष से केवल स्वयं के ही आवश्यक दुर्लभ पूर्ण “निज कल्याण” विशेष के हेतू ही प्रत्येक काल में निश्चित रूप से आप की समस्त दुर्लभ-2 चालाकियों विशेषो तथा सिफारिशों महान-2 विशेषो का इस आवश्यक आत्मिक “निज कल्याण” विशेष के दुर्लभ आवश्यक मार्ग विशेष

में कुछ भी प्रयोजन अथवा योगदान विशेष सुपने में भी केवल निश्चित रूप से विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गांठ बांध लो दुर्लभो चतुरो विद्वानो महानों पातशाहों विशेषो ! हल्की सी भी वासना रूपी चालाकी विशेष आत्मा विशेष के लिये केवल अनन्त जन्मों विशेषो का “खून के आंसू” विशेष रोने का निश्चित आवश्यक दुर्लभ प्रमाण पत्र विशेष ही है अपने ही हाथों विशेषो से लिख कर अपनी ही सुराईदार गर्दन विशेष में बांधा हुआ केवल स्वयं को ही पूरी तरह से निश्चित डुबो विशेष देने का आवश्यक समर्थ दुर्लभ साधन विशेष इस अंधे भयानक कुंऐ विशेष में यकीनी तौर पर। चालाकियों विशेषो से कुछ भी आंशिक रूप से भी उपलब्ध विशेष होना तो एक तरफ रहा उपलब्ध मनुष्य के जन्म रूपी दुर्लभ आवश्यक अवसर विशेष को ही आत्मा विशेष सदा के लिये पूरी तरह से खो विशेष बैठती है निश्चित रूप से इस आवश्यक “निज कल्याण” के दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष के अभाव विशेष के लिये विशेष तौर पर केवल “खून के आंसू” रोना ही शेष बचता है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर केवल दीन-हीन निश्चित आवश्यक पवित्र हृदय आत्मा दुर्लभ विशेष ही केवल “प्रभु” के दर विशेष की ही निश्चित आवश्यक “भिखारी” आत्मा दुर्लभ विशेष इस दुर्लभ आवश्यक निश्चित “भिक्षा” विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवा पाने में दुर्लभ आवश्यक समर्थ विशेष बनती हैं केवल एक “अकाल पुरख

परमात्मा^{११} की ही आवश्यक दया अथवा निश्चित रजा विशेष दुर्लभ से प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ^{६६}बाणी ^{६६}गुरु^{११} - ^{६६}गुरु^{११} है बाणी-विच बाणी अमृत सारे^{११} ^{६६}गुरु^{११} ^{६६}बाणी कहे सेवक जन माने परतख ^{६६}गुरु^{११} निस्तारे^{११} अर्थात् ^{६६}बाणी^{११} ^{६६}गुरु^{११} यानी के इस दुर्लभ प्रमाणिक लिखित विशेष ^{६६}अकाल पुरख परमात्मा^{११} की आत्मिक प्रेरणा रूपी बाणी विशेष को ^{६६}गुरु^{११} अर्थात् दुर्लभ आवश्यक निश्चित मार्ग दर्शन विशेष तथा दुर्बल अंधी बहरी आत्मा की अज्ञानता के घोर गहन अन्धकार विशेष को पूरी तरह से दूर विशेष करने के कारण ही ये आवश्यक निश्चित दर्जा विशेष ^{६६}गुरु^{११} पदवी का प्राप्त है प्रभु के दुर्लभ आवश्यक निश्चित ^{६६}दरबारे खास^{११} से प्रत्येक काल में निश्चित रूप से । जड़ लफजों विशेषों का चेतन से तुलनात्मक अध्ययन विशेष केवल महामूर्खों विशेषों(विद्वानों) का निजी दुर्लभ आवश्यक व्यवसाय विशेष ही है केवल स्वयं को ही पूरी तरह से इस भयानक अंधे कुंएँ विशेषों में निश्चित डुबो विशेष देने का प्रत्येक काल में आवश्यक समर्थ साधन दुर्लभ विशेष यकीनी तौर पर ^{६६}चेतन^{११} जड़ विशेष से प्रत्येक काल में निश्चित दुर्लभ श्रेष्ठ विशेष ही है तथा ^{६६}परम चेतन^{११} सर्वश्रेष्ठ निरन्तर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष अविनाशी दुर्लभ आवश्यक ^{६६}सत्य^{११} विशेष के रूप प्रत्येक काल विशेष में भी निश्चित तौर पर चेतन स्वरूप विशेष आत्मा के आवश्यक दुर्लभ ^{६६}निज कल्याण^{११} विशेष के हेतू ही इस जड़ विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष किया गया

है “वाणी” विशेष दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष के रूप में प्रत्येक काल में निश्चित रूप से केवल ठीक मार्ग दर्शन विशेष के हेतु ही यकीनी तौर पर “गुरु” है “बाणी” अर्थात् जड़ चेतन दोनों को प्रत्यक्ष कर निरन्तर धारण विशेष करने वाला आवश्यक दुर्लभ रक्षक विशेष “वाणी” यानी के दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में इसीलिये “दुर्लभ पूर्ण “गुरु” “विशेष” ही कहलाती है आवश्यक रूप से “विच वाणी अमृत सारे” अर्थात् वाणी यानी के केवल इस दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष में ही “अमृत” अर्थात् सभी को स्थिर विशेष करने की दुर्लभ आवश्यक क्षमता विशेष है प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के बाद निरन्तर प्रत्येक काल में निश्चित रूप से आवश्यक दुर्लभ घौर “सत्य” विशेष यकीनी तौर पर “गुरु बाणी कहे” अर्थात् ये दुर्लभ आवश्यक लिखित रूपी बाणी विशेष अन्धी तथा बहरी चेतन आत्मा विशेष का निश्चित दुर्लभ आवश्यक ठीक मार्ग दर्शन विशेष करती है कि जन माने अर्थात् जो कोई भी आत्मा विशेष इस “प्रभु” की दुर्लभ आवश्यक आत्मिक रूपी बाणी प्रेरणा विशेष का प्रमाणिक रूप से चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करने के लिये निरन्तर घौर दुर्लभ प्रयत्नशील विशेष है पूर्ण ईमानदारी विशेष से “सेवक” लफज विशेष को सार्थक विशेष बनाने में पूर्ण समर्थ विशेष ही है निश्चित रूप से “दुर्लभ आत्मा विशेष” यकीनी

तौर पर केवल ऐसी ही प्रमाणिक चरितार्थ व्यवहारिक स्वरूप बन चुकी पवित्र दुर्लभ आत्मा विशेष के ही “अंतर” विशेष में “गुरु” यानी के केवल दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष “परतख” अर्थात् प्रत्यक्ष रूप से निश्चित तौर पर अनुभव विशेष होती है तथा “निस्सतारे” अर्थात् केवल तभी आत्मा विशेष दुर्लभ का आवश्यक रूप से पूर्ण आवश्यक निश्चित “निज कल्याण” विशेष होना सम्भव विशेष है प्रत्येक काल में निश्चित रूप से अर्थात् दुर्लभ आत्मा विशेष इस निश्चित आवश्यक पूर्ण “गुरु” रूपी शब्द विशेष यानी के दुर्लभ आवश्यक “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष के दुर्लभ आवश्यक संग विशेष से अपने “निज घर” विशेष पहुंच कर केवल जीते जी ही केवल स्वयं को ही सभी भयानक-2 दुखों विशेषों अर्थात् जन्म-मरन से पूर्ण निश्चित मुक्त विशेष करवाने में आवश्यक रूप से पूर्ण सफल विशेष बन जाती है केवल “प्रभु” की ही दुर्लभ आवश्यक “निज दया” विशेष को प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाते हुये निरन्तर निश्चित प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गांठ बांध लो चतुरों विद्वानों महाराजों पातशाहों विशेषों ।

“तू आप निरमल तेरे जन है निरमल गुर के सबद बीचारे” तू आप निरमल अर्थात् “अकाल पुरख परमात्मा” निर्मलता यानी के पवित्रता का दुर्लभ आवश्यक भरपूर निश्चित सागर विशेष ही है निश्चित रूप से प्रत्येक काल में अविनाशी

निरन्तर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहने वाला दुर्लभ आवश्यक निश्चित प्रमाणिक सत्य विशेष “अडोल” रूप से “सैभ” विशेष यकीनी तौर पर “गुरु के सबद विचारे” अर्थात् “गुरु” रूपी दुर्लभ लिखित बाणी विशेष आवश्यक रूप से आत्मा के “निज कल्याण” विषय के हेतू ही दुर्लभ आवश्यक ठीक मार्ग दर्शन विशेष कर रही है कि अगर तुझे केवल “अकाल पुरख परमात्मा” से मिलने का ही निजी दुर्लभ आवश्यक शौंक विशेष है तो “तेरे जन है निर्मल” अर्थात् तुझे भी हे दुर्लभ आत्मा विशेष पूर्ण प्रमाणिक रूप से निरन्तर निर्मल अथवा घौर पवित्र विशेष ही होना पड़ेगा आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में केवल स्वयं के ही दुर्लभ आवश्यक पूर्ण निश्चित “निज कल्याण” विशेष के हेतू ही निश्चित रूप से इस आवश्यक दुर्लभ निर्मलता अथवा पवित्रता विशेष के अभाव विशेष में कोई भी आत्मा विशेष उस पवित्रता के दुर्लभ आवश्यक अपार सागर विशेष को आंशिक रूप से भी प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने में प्रत्येक काल में केवल “पूर्ण असमर्थ” विशेष ही है निश्चित रूप से जान ले दुर्लभ आत्मा विशेष दुर्लभ सच्ची आत्मा विशेष केवल स्वयं को ही घौर पवित्र विशेष रखने हेतू आवश्यक रूप से निरन्तर दुर्लभ प्रयत्नशील विशेष रहती है केवल स्वयं के ही दुर्लभ आवश्यक निजी जीवन विशेष में यकीनी तौर पर। दुर्लभ सच्ची आत्मा विशेष का जिन्दगी भर का निजी व्यवसाय विशेष संसार में केवल आवश्यक “गुजारे मात्र” की ही

प्रविष्टि विशेष रहता है केवल स्वयं तक ही सीमित विशेष निरन्तर निश्चित आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर पूर्ण आवश्यक ईमानदारी विशेष से अपने आवश्यक फर्ज विशेष के प्रति पूर्ण सावधानी विशेष रखते हुये निरन्तर विशेष स्वयं को निश्चित रूप से प्रमाणिक तौर पर ।

“नानक तिन के सद बलिहारे राम नाम उरधारे” राम अर्थात् जड़ चेतन में निरन्तर भरपूर प्रत्यक्ष रमी विशेष हुई दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष “नाम” यानी के केवल दुर्लभ “रागमई प्रकाशित आवाज” रूपी आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष को “उर धारे” अर्थात् मन विशेष सहित निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये लगातार घौर तड़पती विशेष हुई निश्चित प्रमाणिक उद्यमशील दुर्लभ आत्मा विशेष पर दुर्लभ आवश्यक “अकाल पुरख परमात्मा” विशेष भी “सदा बलिहारे” अर्थात् निरन्तर “कुर्बान” विशेष ही है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से यकीनी तौर पर प्रत्येक काल में प्रत्येक जर्रे विशेष में निरन्तर भरपूर समायी हुई दुर्लभ आवश्यक ताकत विशेष कैसे आवश्यक रूप से स्वयं को तड़पने विशेष से बचने में आंशिक रूप से भी समर्थ विशेष हो सकती है जब कि उसी का आवश्यक दुर्लभ निजी अंग विशेष निरन्तर घौर तड़प विशेष रहा है अपने ही दुर्लभ आवश्यक मूल विशेष में पूरी तरह से समाने विशेष के लिये प्रमाणिक तौर पर विशेष रूप से सदा के वास्ते पूर्ण आवश्यक निश्चित पवित्रता विशेष

के साथ यकीनी रूप से निश्चित तौर पर जो दुर्लभ आत्मा विशेष स्वयं को किसी के लिये आवश्यक रूप से पूर्ण ईमानदारी विशेष से पूर्ण मिटाती विशेष है केवल तभी आवश्यक तौर पर अवश्य फिर कोई और “दुर्लभ आवश्यक विशेष” भी ऐसी दुर्लभ आत्मा विशेष पर स्वयं को पूरी तरह से अवश्य आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से मिटा अथवा जता विशेष ही डालता है अर्थात् सभी को ठगने विशेष वाला महाठग रूपी दुर्लभ आवश्यक “परम चेतन सत्ता” विशेष स्वयं ही स्वयं को पूरी तरह से निश्चित ठगवा विशेष बैठता है काल विशेष में “दुर्लभ आत्मा विशेष” के द्वारा यकीनी तौर पर । “नानक” नाम जैसी अनन्त दुर्लभ आवश्यक पूर्ण मुक्त रूपी सभी आत्माओं विशेषों का भी केवल यही ब्यान अथवा दुर्लभ आवश्यक मार्ग दर्शन अथवा पैगाम विशेष है दुर्लभ आवश्यक धुर विशेष से और दूसरी “सच्ची दुर्लभ आत्मा विशेष” के लिये उसी के पूर्ण दुर्लभ आवश्यक निज कल्याण विशेष के हेतू ही तथा आगे रहेगा भी यही दुर्लभ आवश्यक निश्चित पैगाम विशेष निश्चित रूप से “हे प्यारी आत्मा साहिबा विशेष”